पवित्र वेद
और
इस्लाम धर्म

लेखक : क्यू. एस. ख़ान
B.E (Mech)

Tanveer Publication
Hydro Electric Machinary Premises
A-13, Ram Rahim Udyog Nagar, Bus stop lane,
L.B.S Marg, Sonapur, Bhandup (West)
Mumbai- 400078
Phone - 022-25965930 Cell- 9320064026
E-mail- hydelect@vsnl.com, khanqs1961@gmail.com
Website- **www.freeeducation.co.in**
www.scribd.com

पुस्तक का नाम :- पवित्र वेद और इस्लाम धर्म

लेखक :- क्यु. एस. खान

ISBN NO. :- 978-93-80778-09-9

Edition :- Third- (Feb-2016)

Price :- ₹ 40/-

DTP Work :- Vitthal. S. Acharekar

Printed At :- Roshni Publishers
C/21, 98, Sapna Colony,
Rajajipuram, Lucknow, (U.P)
Md. Ikhlaq Nadvi-09453834478

Books Available at :-

1) Tanveer Publication (Mumbai) :- Q.S. Khan-9320064026
2) Roshni Publishers. (Lucknow) :- Md. Ikhlaq Nadvi-09453834478
3) Firdos Kitab Ghar (Mumbai) :- Moulana Anees Qasmi-9892184258

प्रस्तावना

● हिन्दू परंपरा में भगवद् गीता को वेदों का सार कहा गया है। इसी भगवद् गीता के कुछ श्लोक इस प्रकार हैं–

(श्रीकृष्ण जी ने कहा ईश्वर कह रहा है कि,)

● ''सच तो यह है कि मेरी भक्ति करते हुए, जो प्रचारक मेरे भक्तों को इस सबसे श्रेष्ठ व दिव्य, छिपे हुए ज्ञान को समझाता है, नि:सन्देह वह मेरे सबसे श्रेष्ठ व दिव्य धाम (स्वर्ग के) को प्राप्त करता है।'' (भगवद् गीता अध्याय १८, श्लोक ६८)
(अर्थात सत्य धर्म के प्रचारक को स्वर्ग प्राप्त होगा।)

● ''इस संसार के मनुष्यों में, इस धर्म के प्रचारक की तुलना में कोई और नहीं है, जिससे मैं प्यार करता हूँ। और (भविष्य में) भी इसकी तुलना में दूसरा कोई मुझे इससे अधिक प्यारा नहीं होगा।'' (भगवद् गीता अध्याय १८, श्लोक ६९)
(अर्थात् सत्य धर्म के प्रचारक ईश्वर के प्रिय हैं।)

● ''जो मनुष्य इस (ईश्वर के आदेशों व नियमों पर आधारित) धर्म के बारे में किये गए संवाद में सोच विचार करेगा और धीरे-धीरे इसके टुकड़े-टुकड़े को समझेगा, वह ज्ञान के द्वारा मेरी प्रसन्नता प्राप्त करेगा, और मैं उसकी सारी आशाओं को पूरी करुँगा। इस तरह का यह मेरा निर्णय है।'' (भगवद् गीता अध्याय १८, श्लोक ७०)
(अर्थात् सत्य धर्म सीखने और सिखाने वालों की ईश्वर सारी इच्छाएं पूरी करेगा।)

● ''नि:सन्देह जो मनुष्य एक ईश्वर पर श्रद्धा रखते हुए और ईश्वर से ईर्ष्या न रखते हुए, (इस ज्ञान को) सुनेगा, वह संसार में भय व शोक से मुक्त हो जाएगा, और मरने के बाद स्वर्ग में सत्कर्म करने वालों के पवित्र और अच्छे धाम कोाएगा।'' (भगवद् गीता अध्याय १८, श्लोक ७१)

● ''हे पार्थ! मेरे मित्र सच तो यह है कि मानवजति के कल्याण यानी भलाई वाले कर्मों को पूर्णतया करने वाला कोई भी मनुष्य बुरे धाम (नरक) में नहीं जाता। नि:सन्देह इस (पूर्णतया भलाई वाले कर्मों को करने वाले मनुष्य) को न ही इस संसार में नाश है और न ही उस (अन्य लोक) में है।'' (भगवद् गीता अध्याय ६, श्लोक ४०)

(अर्थात् मानवसेवा करनेवाले व्यक्ति का न विनाश होगा और न वह नरक में जलेगा।)

हम सब ईश्वर के प्रिय बने और दोनों लोकों में सफल हों, इस उद्देश से में यह पुस्तक लिख रहा हूँ।

आपका भाई
क्यू. एस. खान
khanqs1961@gmail.com

अनुक्रमणिका

१. हिन्दू धर्म के ईश्वरीय ग्रन्थ

• हिन्दुस्तानी लोग सारे विश्व में अपनी मेहनत, ईमानदारी, उच्च शिक्षा और शराफत के लिए जाने जाते हैं। इसलिए अमेरीका के नासा (National aeronautic & Space organisation of America) में ३५ प्रतिशत वैज्ञानिक हिन्दुस्तानी हैं। और यही कारण है कि अमेरिका, जर्मनी, कनाडा, आस्ट्रेलिया, न्यूज़ीलैंड इत्यादी में नये शहरी के रूप में हिंन्दुस्तानियों को ही प्राथमिकता दी जाती हैं।

लेकिन इस महान देश के महान नागरिक धर्म के मामले में सारी दुनिया से बिल्कुल अलग क्यों हैं? हर प्रदेश में या हर धर्म में एक पैगम्बर और एक धार्मिक ग्रन्थ है। लेकिन हिन्दुस्तानी लोग यह विस्तार से नहीं बता पाते कि उनके पैगम्बर कौन है, और उनके ईश्वरी ग्रंथ कौनसे हैं। ऐसा क्यों?

• लेकिन यह सत्य नहीं है। इस महान देश में भी अनेक पैगम्बर आए हैं और उनके पवित्र ग्रंथ भी हैं। लेकिन दुर्भाग्य से उनके धार्मिक ज्ञान साधारण लोगों तक पहुँचने में बहुत सारी बाधाएं आती रही। इसलिए जैसे-जैसे काल गुजरता गया साधारण लोगों का दोनों (पैगम्बर और ईश्वरी ग्रंथ) से संबध टूटता गया और वे उनकी पहचान भूल गए।

इस पुस्तक में हम अन्य धार्मिक ज्ञान के साथ हिन्दू धर्म के पैगंबर और ईश्वरी ग्रंथों की जानकारी भी लेंगे।

हम हिन्दू धर्म की ईश्वरीय ग्रन्थ को कैसे पहचानें ?

• तीन ग्रन्थों को उनके मानने वाले ईश्वरीय ग्रन्थ स्वीकार करते हैं, वह है पवित्र कुरान और बाइबल। इन ग्रन्थों में ईश्वर व्दारा स्वर्ग-नरक, प्रलय (कयामत) तथा मरने के बाद के जीवन का एक समान विवरण हैं। और इन सभी ग्रन्थों में ७० प्रतिशत एक समान धार्मिक शिक्षाएं हैं।

इसी आधार पर यदि हम हिन्दू धर्म के ग्रन्थों का अध्ययन करें, तो ऋग्वेद और अन्य वेदों में भी हमें ईश्वर, स्वर्ग-नरक, प्रलय (कयामत) तथा मरने के बाद के जीवन का वैसा ही वर्णन मिलता है जैसा पवित्र कुरआन, बाइबल में है। और भारतीय लोग भी वेदों को आदिज्ञान, आदिग्रंथ, अपौरूषीय मानते हैं इसलिए हम ऋग्वेद को ईश्वरीय ग्रंथ मान सकते हैं।

ऋग्वेद में ईश्वर, स्वर्ग, नरक से सम्बन्धित श्लोक निम्नलिखीत हैं-

ईश्वर के बारे में ऋग्वेद में है कि,

(१) ''हे ईश्वर में आस्था रखने वालो, उस ईश्वर के सिवाय किसी और की पूजा न करें, ईश्वर केवल एक ही है।'' (ऋग्वेद ८:१:१)

(२) ''ईश्वर ही पृथ्वी और आकाश का निर्माणकर्ता (मालिक) है।''(ऋग्वेद १:१६:७)

(३) ''हे ईश्वर! तू ही पहला है और तू ही आखरी है तथा सर्वज्ञानी है।''(ऋग्वेद २:३१:१)

(४) ''हे ईश्वर! तेरा ही प्रत्येक वस्तु पर नियंत्रण है।''(ऋग्वेद २:१६:१०)

(५) ''वह (ईश्वर) समस्त देवों का एक देव है।''(ऋग्वेद १०:१२१:०८)

(६) ''उस परमेश्वर की कोई प्रतिमा नहीं है।'' (यर्जुरवेद १०:७१:४)

स्वर्ग-नरक के बारे में ऋग्वेद में है कि,

(१) पापियों के लिए अत्यन्त गहरी खाई (नरक) बनाई गयी है।(ऋग्वेद ४:५:५)

आचार्य सायण के अनुसार अत्यन्त गहरी खाई का अर्थ नरक है।

(२) पवित्र और निष्पाप लोगों के लिए स्वर्ग है। शुद्ध

होने के बाद जो (नया) शरीर उन्हे प्राप्त होगा उसमे हड्डियां नहीं रहेंगी। उनके शरीर को आग नहीं जलाती और ज्ञान प्राप्ति के पश्चात वह प्रकाशमयी दुनीया में प्रवेश करेंगे। स्वर्ग की दुनिया में उनके लिए बहुत आनंद हैं। (अथर्ववेद ४:३४:२)

(३) तुम्हारे अनुयायी ईश्वर की प्रार्थना उदार हृदय से करेंगे और तुम्हें स्वर्ग में आनंद प्राप्त होगा। (ऋग्वेद १०:६५:१८)

(४) अपनी सत्यनिष्ठा और करूणामय स्वभाव के कारण तुम वह स्थान देखोगे, जो अत्यन्त विस्तृत स्थल है। (ऋग्वेद १:२१:६)।

आचार्य सायण के अनुसार अत्यन्त विस्तृत स्थल का अर्थ स्वर्ग है।

मरने के पश्चात के विषय में ऋग्वेद में है कि,

(१) जैसे शैतान पुराने जमानेसे हैं उसी प्रकार पुर्नजन्म की बात भी पुराने जमाने से लोग कहते आए हैं। पुर्नजन्म जैसी गलत श्रद्धा रखनेवाले गुनहगार लोगों पर हावी हो जाओ, उनको मग़लूब (Supress) करो। मृत्यु की देवी आयु कम कर रही है। (ऋग्वेद१:६२:१०)

(अर्थात आवागवन पर लोगों का विश्वास प्राचीन काल से है, मगर यह गलत है। इसे रोको और जल्दी करो, जिंदगी का वक्त खत्म होता जा रहा है।)

(२) वह प्रलय को भुलाकर और ज्ञान और बुद्धी को हकारात से ठुकराकर (Neglect as useless thing) हमारे तय किए हुए हद (Boundry) को फलांग रहें है। (ऋग्वेद १-४-३)

(यानी प्रलय को और मरने के बाद के जीवन को गलत कहना ईश्वर के कानून को तोड़ने के बराबर है।)

(३) अपनी दिल के लिए मीठी जबान प्राप्त करके लोग अपने शंकाओ को गिनते हैं। (ऋग्वेद १-४४-३)

(अर्थात लोग ईश्वर का ज्ञान पाकर अपने गुनाहों को गिनते है या पाप न हो इससे बचने की कोशिश करते है)

४) देवताओं का इन्कार करनेवाले लोगों से कहो, तुम्हें अमर जीवन मिलना निश्चित है। (ऋग्वेद १-४४-६)

(उपर लिखे अनुवाद पंडीत दुर्गा शंकर सत्यार्थी के है, जो मासिक पत्रिका 'कांति' में जुलाई १९८९ में प्रकाशित हुए थे। पुस्तकः 'अब भी ना जागो तो')

ऋग्वेद में पैगम्बरों का वर्णन,

"हम अग्नि को दूत चुनते है।" (ऋग्वेद १:१२:१)

"हे अग्नि! मनु ने आप को पैगम्बर के रूप में स्वीकार किया है।" (ऋग्वेद १:१३:४)

ये श्लोक प्रमाणित करते हैं कि वेदों में भी ईशदूतत्व की धारणा हैं। यह पैगम्बर कौन है? इस का अध्ययन हम बाद में करेंगे।

वेदों में पैगम्बरों को 'मनु' कहा गया है। हिन्दू धर्म के धार्मिक ग्रंथों में मनवतंर शब्द का प्रयोग हुआ है। इस का अर्थ है दो मनुओ के बीच का समय। अर्थात दो पैगम्बरों के धरती पर आने के बीच का समय। जिस में हज़रत आदम पहले मनु है।

सारांश:

- तो इस तरह प्रमाणित हुआ कि वेदों में भी एक ईश्वर, स्वर्ग-नरक, मरने के बाद का जीवन और पैगंम्बरों का वर्णन भी है।

- हिन्दू धर्म के माननेवाले भी वेदों को आदि ज्ञान, श्रुतिज्ञान अथवा अपौरूषि कहते हैं। अपौरूषि यानी जिसे किसी मनुष्य ने न लिखा हो। इसलिए हम वेदों को ईश्वर व्दारा अवतरित ग्रन्थ कह सकते हैं।

- लेकिन वेदों में ऐसे भी कुछ श्लोक हैं, जो दूसरे ईश्वरीय ग्रन्थों में नहीं हैं और न ही ऐसे श्लोकों की हम ईश्वर से अपेक्षा कर सकते हैं। उदाहरण के तौर पर ऋग्वेद का एक श्लोक है कि,

'एक शुद्र को अच्छी सलाह नहीं देनी चाहिए।' (ऋग्वेद १४:५३:३)

ईश्वर अपने सारे प्राणियों से प्रेम करता है। वह

एक शूद्र के लिए ऐसे आदेश कैसे अवतरित कर सकता है?

भगवदगीता के निम्नलिखीत दो श्लोकों से यह प्रमाणित होता है कि ईश्वर सब से प्रेम करता है और आदरणीय वही है जो ईश्वर के आदेशों को मानता है।

● (श्री कृष्ण जी ने कहा ईश्वर कह रहा है की,)

''सारी निर्मित वस्तुओं को मैं निरपेक्षता, समानता और न्याय की दृष्टि से देखता हूँ। मेरे लिए न कोई द्वेषपूर्ण है और न ही प्रिय है, लेकिन मुझ पर श्रद्धा रखते हुए जो मनुष्य मेरी भक्ति करता है, निःसन्देह वह मेरे लिए है और मैं उसके लिए हूँ।'' (भगवद् गीता ९:२९)

● ''अगर कोई अत्यंत पापी मनुष्य भी किसी और निर्मित वस्तु या देवता की भक्ति किये बिना मुझ पर श्रद्धा रखता है तो निःसंदेह उसे साधु पुरूष मानना चाहिए, क्योंकि वह पूर्ण और सच्ची श्रद्धा वाला है।'' (भगवद् गीता ९:३०)

● इसलिए सामान्यतः(आम तौर पर) हम वेदों को सनातन धर्म के ईश्वरीय ग्रन्थ कह सकते हैं, लेकिन इन ग्रन्थों में भी विशेष रूप से उन श्लोको को ही हम देववाणी कहेंगे, जिसमें एक ईश्वर, स्वर्ग-नरक, मरने के बाद का जीवन, प्रलय (कयामत) और सत्कर्म करने का वर्णन है।

● प्राचीन काल से वेद लिखित रूप में न थे। महाऋषि वेद व्यास जी ने ऋग्वेद को ४०० ऋषियों से पूछ कर जमा किया था। आप ने चारों वेदों में खण्ड, मण्डल और सूक्त को तरतीब दिया।(संग्रहीत किया है) प्राचीन काल से वेदपाठी ब्राम्हणों ने चारों वेदों को कंठस्थ कर रखा था। १८०० Ad में मॅक्स मूलर ने इन्हीं वेदपाठी ब्राम्हणों से सुनकर उसे लिपिबध्द किया और उसे पुस्तक का रूप दिया। Griffth ने अपनी पुस्तक Hymns of Rig ved-Volume-1 में लिखा है कि जब स्मरण शक्ति से वेदो को ग्रन्थ के रूप में लिखा जा रहा था, तो उस समय पुरोहितों की भूल (Confusion) के कारण उनके व्यक्तिगत विचार और नियम भी वेदों में सम्मिलित हो गए। इसी कारण ''एक शुद्र को अच्छी सलाह नहीं देनी चाहिए'' इस प्रकार के श्लोक पवित्र वेदों में मिलते है।

पवित्र वेदों के उपदेश:

पवित्र वेद ज्ञान के सागर हैं। इसमें अनेकों ऐसे उपदेश हैं जिस को समझने और अमल करने से व्यक्ति का जीवन बदल सकता है। आइये, इस महान सागर से कुछ मोती हम भी चुन लें।

१. सत्य मार्ग बिल्कुल आसान है।(ऋग्वेद १३/३/८)

२. हर सांस जुआरी को श्राप देती है। उसकी पत्नी उसका त्याग करती है। (ऋग्वेद १०/३४/३)

३. ऐ जुआरियों! खेती करो और जुआ खेलना बंद करो और खेत से जो भी आप कमाएं उस पर संतोष करो। (ऋग्वेद १०/३४/१३)

४. मदिरा पीने वाले शराबी स्वयं अपने पर नियंत्रण खो देते हैं। वे ऐसे कार्य करते हैं जिससे हे ईश्वर! आपको क्रोध आता है इसलिए आप भी ऐसे लोगों की सहायता नहीं करते। (ऋग्वेद ०८/२१/१४)

५. हे ईश्वर! जो लोग अधिक ब्याज प्राप्त करने के उद्देश्य से दूसरों को कर्ज़ देते हैं, उन कर्ज़ देने वालों की सारी संपत्ति आप जप्त (Confiscate) कर लेते हैं। (ऋग्वेद ०३/५३/१४)

६. (हे मनुष्यों) तुम अपने से बड़ों का आदर करों और अपने मन में अच्छे विचार उत्पन्न करो। आपस में मतभेद मत करो, दोस्ती करो और एक साथ रहो। अच्छे कर्म करते हुए मेरे पास आओ, मैं तुम में समझ और अच्छे विचार पैदा करूंगा। (ऋग्वेद १०/१९१/३)

७. बेटे को अपने पिता का सहयोगी होना चाहिए और माँ का आज्ञाकारी होना चाहिए। (अथर्ववेद ०३/३०/०२)

८. दान करनेवाले दानी लोग अमर हो जाते हैं। उन्हें न किसी चीज़ का ड़र होता है ना दुःख। विनाश से उनको संरक्षण मिल जाएगा। दान करने से ये दानी लोग दुनिया में सफल होते हैं और मृत्यु के पश्चात स्वर्ग प्राप्ति करते हैं। (अथर्ववेद १०/१९७/०८)

९. हे मित्रों! एक ईश्वर के सिवा अन्य किसी की भी भक्ति न करें, तो आप की हिंसा से रक्षा होगी। (ऋग्वेद ०८/०१/०१)

१०.जो अपनी मेहनत से कमाया हुआ खाना अकेले ही खाते हैं (दूसरों को दान नहीं करते) तब वे गलत मार्ग से कमाया हुआ खाना खाने जैसा ही है। (ऋग्वेद १०/११७/०६)

११. हे ईश्वर! आप सत्कर्म करनेवालों को अच्छा उपहार देते है और यही आपकी विशेषता है। (ऋग्वेद ०१/०१/०६)

१२. हे ईश्वर! यह दुनिया आपकी महानता के कारण थर थर कांपती हैं। गलत कर्म करनेवाले मनुष्य तेरे ही प्रकोप के कारण शिक्षा प्राप्त करते है। सदाचारी मनुष्य की आपके आशीर्वाद से प्रशंसा होती है। (अथर्ववेद ०१/८०/११)

१३. ''ईश्वर एक ही है।'' (अथर्ववेद१०/८/२८)

१४.''सारे मानवप्राणी मनु (आदम) की संतान हैं।''

(ऋग्वेद ०१/४५/११)

१५. ''मनुष्य को सत्य के मार्ग पर नम्रतापूर्वक चलना चाहिए।'' (ऋग्वेद १०/३१/०२)

१६. पत्नी को हमेशा पति से मधुर वाणी में बात करनी चाहिए। (अथर्ववेद ०३/३०/०२)

१७. ब्रम्ह (ईश्वर) द्वारा ही इस पृथ्वी की रचना की गई और ब्रम्ह द्वारा ही लोक (आकाश) ऊंचा धरा गया और ब्रम्ह ही ने ऊपर सब ओर विस्तृत अंतरिक्ष की रचना की है। (ऋग्वेद १०:२:२५)

इस पुस्तक में हम पवित्र वेदों के ८० ऐसे श्लोकों का अध्ययन भी करेंगे, जिन का अर्थ कुरआन की आयतों के अर्थ के समान है।

२. हिन्दू धर्म के अन्य ग्रन्थ

● हिन्दू धर्म के धार्मिक ग्रन्थों को पढ़िए तो आश्चर्य होता है। ज्ञान का सागर है, और बुद्धिजीवियों ने इसे हजारों वर्षों से बहुत अच्छी तरह संभाल कर रखा है। यह विश्व का सब से प्राचिन धर्म है, फिर भी इस के ग्रन्थ अब भी अपनी मूल भाषा (Original language) में शेष हैं।

● हमने पिछले अध्याय में पढ़ा की पवित्र वेद यह ईश्वरीय ग्रन्थ है। वेदों को अच्छी तरह समझने के लिए हर वेद से जुड़े और पाँच प्रकार के ग्रन्थ है।

१. संहिता
२. ब्राम्हण
३. आरण्यक
४. उपनिषद
५. वेदांग

१. संहिता- विद्वानों का ऐसा मानना है कि ऋषियों के अन्तकरण में ईश्वर की तरफ से जो ज्ञान अवतरित होता है वह वेद हैं। और जब उसे लिख कर पुस्तक का रूप दिया जाए तो उसे वेद का संहिता कहते है। तो संहिता पुस्तक में वेदों के मन्त्र लिखित रूप में होते हैं। उदाहरणार्थ ऋग्वेद संहिता, यह लिखित रूप में ऋग्वेद को ही कहते है।

२. ब्राम्हण- यह ब्राम्हणजाति के बारे में नहीं है, बल्कि ऐसी पुस्तक में ईश्वर के अस्तित्व को समझाया जाता है।

३. आरण्यक- आरण्यक में ब्रम्हाण्ड क्या है? आत्मा क्या है? ईश्वर, आत्मा और ब्रम्हाण्ड में आपस में क्या सम्बन्ध है, इस प्रकार का तत्वज्ञान होता है।

४. उपनिषद - उपनिषद को वेदान्त भी कहते हैं। अर्थात वेदों का अनंत। उपनिषदों में वेदों की शिक्षाओं पर चर्चा करने के बाद जो निष्कर्ष निकलता है विषेश कर उसका उल्लेख होता हैं। कुल २२० उपनिषद है उन में से निम्नलिखीत उपनिषद बहुत प्रसिद्ध हैं-

१) ईषोपनिषद — २) केनोपनिषद
३) कठोपनिषद — ४) प्रश्न
५) मुण्डक — ६) माण्डूक्य
७) ऐत्रेय — ८) तैत्रेय
९) छान्दोग्य — १०) बृहदाराण्यक
११) कौषितकी — १२) श्वेताश्वतर

५. वेदांग - वेदांग दो शब्दो से बना है, वेद और अंग। अर्थात वेद का अंग। वेदांग यह वेदो को अच्छी तरह समझने के लिए ६ विषयों पर गाइड की तरह है। यह ६ विषय निम्नलिखीत है।

शिक्षा- इस विषय पर लिखे गए वेदांग में मंत्रो को कैसे पढ़ा जाए इस की शिक्षा है।

कल्पसुत्र- इस विषय पर लिखे गए वेदांग में यज्ञ और प्रार्थना कैसे की जाए इस का वर्णन है।

व्याकरण- इस विषय पर लिखे गये वेदांग में वैदिक-संस्कृत भाषा का व्याकरण है। शब्दों के गलत अर्थ से मन्त्र का गलत अर्थ हो सकता है। इस से बचने के लिए व्याकरण की शिक्षा आवश्यक है।

निरूक्त- इस विषय पर लिखे गए वेदांग में प्राचीन संस्कृत शब्दो का वर्णन है। जो शब्द अब बोलचाल में नहीं है अगर उनका अर्थ मालूम न हो तो कोई भी मन्त्रो का गलत अर्थ निकाल सकता है। ऐसा न हो इसलिए निरूक्त की शिक्षा दी जाती है।

छन्द- इस विषय पर लिखे गए वेदांग में वेदों के छन्द हैं।

ज्योतिष- बहुत से धार्मिक प्रार्थनाएं एक निश्चित दिन एक निश्चित महीने में किए जाते हैं। सही दिन और महीनों को जानने के लिए ज्योतिष शास्त्र का उपयोग किया जाता है।

● ऐसे ग्रन्थ जो सीधे वेदों से तो नहीं जुड़े है; परन्तु धार्मिक है, वह निम्न प्रकार के है।

६. मनुस्मृति- वैवस्वत मनु ने लोगों को जो धर्म की सिख दी वह लोगों ने समझा याद रखा और बाद में लिख लिया। इस पुस्तक को मनुस्मृति कहते है। इस में धर्मों के नियम है।

७. पुराण- पुराण का अर्थ है प्राचीन। बहुत सारे पुराण हैं, और बहुत से विषयों पर पुराण लिखे गए हैं।

उन में से निम्नलिखित १८ बहुत प्रसिद्ध हैं-

१. श्रीमद् भागवत २. मत्स ३. भविष्य ४. मारकण्डेय ५. ब्रम्ह ६. ब्रम्हाण्ड ७. ब्रम्हवैवर्त ८. अग्नि ९.स्कन्ध १०. विष्णु ११. शिव १२. नारद १३. कुर्म १४.वामन १५.वराह १६.गरूड १७.पद्म १८.लिंग

८. इतिहास- इस प्रकार की पुस्तकों में पुराण भी हैं। मगर दो पुस्तकें बहुत प्रसिद्ध हैं। रामायण और महाभारत। रामायण में श्री रामजी की कथा है।

महाभारत यह विश्व की सबसे बड़ा काव्य है और इसके लेखक महर्षि वेद व्यास जी हैं। इस में कौरवों और पांडवों इन चचेरे (Cousin) भाईयों की आपसी राजनीति और युद्ध का इतिहास है। महर्षि वेद व्यास जी ने महाभारत के द्वारा जो सीख लोगों को देने का प्रयास किया है, वह यह है कि सत्य पर चलने वाले चाहे संख्या में कम क्यों न हो आखिर में जीत उनकी ही होगी।

भगवद् गीता- महाभारत काव्य में सौ से अधिक अध्याय हैं। अध्याय नं. २५ से अध्याय नं ४२ को एक अलग पुस्तक के रूप में भी प्रकाशीत किया जाता है। इस पुस्तक को भगवद् गीता कहते है। कुरूक्षेत्र में श्री कृष्ण जी ने अर्जुन को जो उपदेश दिए थे वह सारे उपदेश इस पुस्तक में है।

इस पुस्तक को स्वर्ण अक्षरों में लिखना चाहिए। इस पुस्तक में सफल जीवन के लिए अनमोल उपदेश है। अध्याय नं. १८ श्लोक पं. ६९ का भावार्थ यह है की 'संसार में जो ईश्वर के सत्य ज्ञान को फेलाते हैं, ईश्वर उन से सब से अधिक प्रेम करता है।' इस श्लोक को मैं हमेशा याद रखता हूँ। इस से मुझे सत्कर्म करने की शक्ति और प्रेरणा मिलती है। भगवद्गीता पढ़कर मैंने एक पुस्तक लिखी है- 'भगवद्गीता में ईश्वर के आदेश'। इस पुस्तक को आप मेरी वेबसाइट पर मुफ्त में पढ़ सकते हैं या डाउनलोड कर सकते है। मेरी वेबसाईट है-

www.freeeducation.co.in

निम्नलिखित पुस्तकें धार्मिक नहीं हैं फिर भी इनका हिन्दू धर्म में महत्व हैं-

९. उपवेद- इन का नाम उपवेद है मगर इनका वेदों से कोई सम्बन्ध नहीं है। यह चार प्रकार के हैं।

आयुर्वेद- यह औषधियों से सम्बधित है।

धर्नुवेद- इस पुस्तक में युद्ध से सम्बधित नियम और ज्ञान हैं।

गंधर्ववेद- यह संगीत से सम्बधित है।

अर्थशास्त्र- इस में अर्थशास्त्र का ज्ञान है।

१०. दर्शन- अलग-अलग विषयों पर अनेकों महान विद्वानों ने अनेकों पुस्तकें लिखी हैं। ऐसी कुछ पुस्तकें जो सुप्रसिद्ध है वह निम्नलिखीत हैं।

पुस्तक-वैशोषिक	लेखक-कणाद
पुस्तक-सौख्य	लेखक-कपिल
पुस्तक-न्याय	लेखक-गौतम
पुस्तक-योग	लेखक-पंतजलि
पुस्तक-पूर्व मीमांसा	लेखक-जेमिनी
पुस्तक-उत्तर मीमांसा	लेखक-जेमिनी
पुस्तक-वेदांत	लेखक-वादरायण

उपर बताए गई पुस्तकों के अलावा भी हिन्दू धर्म की बहुत सी पुस्तके है। सबका यहां लिखना सम्भव नहीं है। यह पुस्तकें आप इंटरनेट पर (Wikipidia) वीकीपीडिया पर देख सकते है।

● हमने इस पुस्तक के प्रथम दो अध्यायों में केवल हिन्दू धर्म के ग्रंन्थों का परिचय दिया है। ऐसा क्यों?

किसी धर्म को सही तरह समझना हो तो उस धर्म के ग्रन्थो को पढ़कर ही समझा जा सकता है। हर धर्म में (Authentic) और (Un-Authantic) दोनों प्रकार के ग्रन्थ होते है। और इन दोनों तरह के ग्रन्थों की पहचान बहुत जरूरी है। इन दो अध्यायों में हमने जो ग्रन्थों का परिचय दिया है, उनसे हिन्दू धर्म के सभी विद्वान परीचित हैं। इसलिए हम भी केवल इन्ही ग्रन्थों को पढ़ेंगे और इन्ही से Reference देंगे।

और इन पुस्तकों के Reference को देखकर आप भी संतुष्ट रहें, कि बात काल्पनिक नही है बल्कि परिचित पुस्तकों के संदर्भ से कही जा रही है। इसलिए पहले दो अध्यायों में हमने केवल ग्रन्थों का परिचय दिया है।

● जब तक मैंने हिन्दू धर्म के बारे में नहीं पढ़ा था, तो मुझे लगता था की इस धर्म के मुख्य ग्रन्थ केवल दो ही हैं, रामायण और महाभारत। मगर जब मैंने गहराई से इस धर्म के ग्रन्थों को पढ़ा तो पता चला कि धर्म की बुनियाद तो वेद है। और उनको समझने के लिए २२० उपनिषद हैं। ब्राम्हण, आरण्यक, वेदांग, पुराण और अनेक प्रकार के ग्रन्थ भी बड़ी संख्या में हैं।

▼▼▼▼▼▼▼

३. हिन्दू धर्म के पैगम्बर कौन हैं?

● एक हिन्दू भाई से पुछो कि आप के धर्म में कौन कौन से पैगम्बर हुए है? तो वह कहेगा के हमारे धर्म में पैगम्बरों की मान्यता नहीं है।

हमारा ऐसा विश्वास है की धर्म की स्थापना के लिए ईश्वर स्वंय मनुष्य के रूप मे धरती पर जन्म लेता है। हम उन्हें अवतार कहते है। ईश्वर ६ बार अवतार ले चुके हैं। और अन्तिम बार उसने श्री कृष्ण जी के रूप में अवतार लिया था। श्री कृष्ण जी के अवतार लेने के बारे में भगवद् गीता में यह श्लोक है।

यदा यदा ही धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारतः
अभ्युत्थानम् अर्धमस्य तदात्म्यम् सृजानम्यहम्।
(भगवद् गीता, ४-७)

परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कताम्।
धर्मसंस्थापनार्थाय सम्भवामि युगे युगे।।
(भगवद् गीता, ४-८)

● स्वामी सुखराम महाराज ने इन दोनों श्लोकों की व्याख्या अपनी पुस्तक 'साधक संजीवनी' में इस प्रकार किया है-

● हे भरतवंशी अर्जुन जब-जब धर्म की हानि और अधर्म की वृद्धि होती है, तब तब ही मैं अपने आपको साकार रूप से प्रकट करता हूँ।
(भगवद् गीता, ४-७)

● साधुओं भक्तों की रक्षा करने के लिये, पापकर्म करनेवालों का विनाश करने के लिये और धर्म की भलीभाँति स्थापना करने के लिये मैं युग-युग में प्रकट हुआ करता हूँ। (भगवद् गीता, ४-८)

हिन्दू धर्म के विद्वानों की महानता

इंजील २००० वर्ष पूर्व इबरानी भाषा में अवतरित हुआ था। मगर आज इबरानी भाषा में एक भी इंजील उपलब्ध नहीं है। यह हिन्दू धर्म के विद्वानों की महानता है की उन के ग्रन्थ ४ से ५ हजार वर्ष प्राचीन है। फिर भी उन्होंने अपने ग्रन्थों को मूल भाषा अर्थात संस्कृत भाषा में संभाल कर रखा है। जब ग्रन्थ मूल भाषा में हों तो हम स्वंय उसका अनुवाद करके ईश्वर क्या आदेश देना चाहता है यह जान सकते हैं। मूल भाषा में ग्रन्थ न हो तो अनुवादक के अनुवाद को ही सत्य मानना पड़ता है।

भगवद् गीता के श्लोकों का विश्लेषण-

● अवतार के बारे में भगवद् गीता के जिन श्लोक को हमने पढ़ा, उनका हम फिर से अध्ययन और अनुवाद करते है।

● अपने अनुवाद के लिए हम कलकत्ता से प्रकाशित ईश्वर चन्द्र की संस्कृत-हिन्दी शब्दकोश का प्रयोग करेंगे। इसके लिए पहले हम संस्कृत के मूल (Original) श्लोक लिखेंगे। फिर उसको वाक्य रूप (Expanded form) में लिखेंगे जिससे कि श्लोक का हर शब्द समझ में आ सके। फिर हर शब्द का अर्थ लिखेंगे। और फिर आखिर में उस श्लोक की व्याख्या लिखेंगे। इस तरह हर श्लोक चार बार लिखा जाएगा। ऐसा करने से श्लोक की व्याख्या समझने में आसानी होगी और आप खुद भी संस्कृत शब्दकोश की सहायता से श्लोक की व्याख्या कर सकते हैं, या कम से कम वह व्याख्या सही या गलत है इसका पता लगा सकते हैं। हम सब सत्य ज्ञान की खोज कर रहे हैं। इसलिए उदारता के साथ हर दृष्टिकोण से भगवद्गीता के उपदेश को समझने की कोशिश करनी चाहिए।

● यदा यदा ही धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारतः
अभ्युत्थानम् अर्धमस्य तदत्म्यम् सृजानम्यहम् । (४-७)

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानि भवति भारत
अद् भूतथानाय अधर्मस्य तदा आत्मानम् सृजामि अहम्।।७।।

(भारत!) हे भारतवंशी अर्जुन! (हि) निःसंदेह (यदा) जब (यदा) जब (धर्मस्य) धर्म में (ग्लानिः) कमी व गिरावट (भवति) होने लगती है (अधर्मस्य) और अधर्म (अभ्युत्थानम्) बढ़ने लगता है (तदा) उस समय (अहम्) मैं (आत्मानम्) स्वयंः (सृजामि) अपने उपदेश और अपना ज्ञान प्रदान करता हूँ।

हे भारतवंशी अर्जुन! निःसंदेह, जब जब धर्म में कमी व गिरावट होने लगती है और अधर्म बढने लगता है, उस समय मैं स्वयं अपने उपदेश और अपना ज्ञान प्रदान करता हूँ। (गीता ४:७)

● परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कताम्।
धर्मसंस्थापनार्थाय सम्भवामि युगे युगे।। (८)

परित्राणाय साधुनाम् विनाशाय च दृष्कृताम्।
धर्म संस्थापन-अर्थाय सम्भवामि युगे युगे।।

(परित्राणाय) सुरक्षा करने के लिए, (साधूनाम्) कल्याणकारी कर्मों को करने वाले लोगों की (दुष्कताम्) बिगाड़ करने वाले लोगों से, (विनाशय) विनाश करने के लिए, (धर्म) धर्म का, (अर्थाय) के लिए, (संस्थापर्न) धर्म को पुनःस्थापित करने के लिए, (युगे) युग, (युगे) युग में, (सम्भवामी) ऋषियों से वार्तालाप करता हूँ।

कल्याणकारी कर्मों को करने वाले लोगों की सुरक्षा करने के लिए, बिगाड़ वाले बुरे कार्य करने वालों का विनाश करने के लिए, और धर्म को पुनः स्थापित करने के लिए, मैं युग युग में (ऋषियों से) वार्तालाप करता हूँ।

● स्वामी सुखराम महाराज ने सृजामि और सम्भवामी का अर्थ प्रकट होना ऐसा चुना है। जब कि सृजामि का अर्थ रचना करना, पैदा करना, जाने देना, (उत्सर्ज) दान देना इत्यादि है। और सम्भवामी का अर्थ वार्तालाप करना (Communicate) करना है।

इसलिए हम दोनों श्लोकों का अर्थ ऐसा भी ले सकते है कि धरती पर जब जब अधर्म बढ़ता है तो धर्म की पुर्नस्थापना के लिए ईश्वर सन्देष्ठा पैदा करता है और ईश्वरीय ग्रन्थ भी मार्गदर्शन के लिए या Communication के लिए प्रदान करता है।

● हमारी सोच और व्याख्या कितनी सच्ची है हम इस की खोज करते है।

श्री कृष्ण जी के उपदेश-

भगवद् गीता यह पुस्तक श्री कृष्ण जी के द्वारा दिए गए उपदेश है, जो आप ने कुरूक्षेत्र की रणभूमि में अर्जुन को दिए थे। आप इस पुस्तक के अध्याय २ श्लोक नं. १७ में कहते हैं।

● अविनाशी तु तद्विद्धि येन सर्वमिदं ततम्।
विनाशमव्ययस्यास्य न कश्वित्कर्तुमर्हति ।।२-१७।।

● अविनाशी तु तत् विद्धि येन सर्वम् इदम् ततम्।
विनाशम् अव्ययस्य अस्य न कश्चित् कर्तुम् अर्हति।।

● (तु) लेकिन, (तत्) तुम, उसको (ईश्वर को) (अविनाशी) अविनाशी, (विद्धि) समझो, (येन) जिसके द्वारा, (इदम्) इस, (सर्वम) सारे संसार का, (ततम्) फेलाव है, (अस्य) उस, (अव्ययष्य) अविनाशी (ईश्वर का), (विनाशम्) विनाश, (कर्तुम) करने की, (अर्हति) शक्ति, (कश्चित) किसी में भी (न) नहीं है।

● लेकिन तुम उस ईश्वर को अविनाशी समझो, जिसके द्वारा इस सारे संसार का फैलाव है। उस अविनाशी ईश्वर का विनाश करने की शक्ति किसी में भी नहीं है। (भगवद्गीता २:१७)

● इस श्लोक में अगर (तत्) के बदले (माम) होता तो ऐसा अनुवाद होता कि ''तुम मुझे अविनाशी समझो।'' मगर श्री कृष्ण जी कह रहे हैं कि ''तुम उसे अविनाशी समझो।'' वह यानी ईश्वर। अर्थात वह ईश्वर अलग है और मैं अलग हूँ। मैं ईश्वर नहीं।

श्री कृष्ण जी अपने बारे में क्या कहते है?

नाह देवो न गन्धवों न यक्षो न च दानवः।
अहं वो बान्धवों जाती नैताच्विन्त्यमितोहन्यथ।
(श्री विष्णु पुराण ५/२३/१२)

अनुवाद : मैं न देव हूँ न गन्धर्व हूँ, न यक्ष हूँ और न दानव हूँ। मैं तो आपके बन्धू (दोस्त) स्वरूप से ही उत्पन्न हुआ हूँ। आप लोगों को इस विषय में और कुछ विचार न करना चाहिए।

● श्रीमद भागवत महापुराण का एक श्लोक इस प्रकार है-

जब भी धर्म क्षीर्ण होने लगता है और अधर्म की वृध्दि होती है, तब सर्वशक्तिमान हरि निःस्सन्देह (मार्गदर्शन के लिए) एक आत्मा पैदा करता है।
(श्रीमद भागवत महापुराण ६-२४-५६)

● ब्रहम पुराण का एक श्लोक इस प्रकार है-

अवतार उस समय जन्म लेते है, जिस समय धर्म का पतन और अधर्म की वृध्दि हो जाती हैं।
(ब्रम्ह पुराण, १८०/२६/२७)

● ऋग्वेद का एक श्लोक इस प्रकार है-

जनस्य गोपा अजनिष्ट जागृविरग्निः सुदक्षः
सुविताय नव्य से। (ऋग्वेद संहिता ५/११/१)
अनुवाद- प्रजा (लोगों) की रक्षा करने वागृति एवं दक्षता प्रदान करने, याजको (धार्मिकों) को प्रगति का नवीन पथ प्रशस्त करने के लिए जन्म लेते हैं।

यही अर्थ भगवद्‌गीता के दोनों श्लोक ४:७ और ४:८ का है। धर्म की स्थापना के लिए ईश्वर संदेष्ठा भेजता है। और आदेश भी भेजता है। ईश्वर के आदेश यह ईश्वरीय ग्रन्थ हैं, जैसे वेद, बाइबल, कुरआन इत्यादि।

अवतार कौन?

डॉ. वेद प्रकाश उपाध्याय पंजाब विश्वविद्यालय, चंदीगढ़ में संस्कृत-वेद विभाग के विभागाध्यक्ष थे और आप ने वैदीक संस्कृत में (Ph.d) किया है। आप धर्मशास्त्राचार्य है। आप ने बहुत सारी पुस्तकें लिखी हैं।

आप लिखते हैं कि 'अवतार' शब्द का अर्थ यह है कि 'पृथ्वी में आना।' 'ईश्वर का अवतार' शब्द का अर्थ है कि 'सब को सन्देश देने वाले महात्मा का पृथ्वी पर जन्म लेना।' परमेश्वर सर्वव्यापी है, किसी निश्चित स्थान में उसका रहना और वहाँ से उसका कही आना जाना यह कथन उस असीम को सीमीत बनाता है। (इस कारण ऐसा नहीं होता)
(कल्कि अवतार और मुहम्मद साहब, पृ.१५)

● श्वेताश्वतरोपनिषद का एक मन्त्र इस प्रकार है।

न तत्र सूर्यो भाति न चन्द्रतारकं
नेमा विद्युतो भाति कुतो यमग्निः।
तमेव भान्तमनुभाति सर्व
तस्य भासा सर्वमिदं विभाति।।
(श्वेताश्वतरोपनिषद, अध्याय नं.६ मन्त्र २४)

डा. वेद प्रकाश उपाध्याय ने इस मन्त्र का भावार्थ ऐसा लिखा है कि ईश्वर सात आकाशों के ऊपर है। और उसका तेज इतना अधिक है की सूर्य और चन्द्रमा भी उस के तेज के सामने कुछ नहीं। जिस प्रकार सूर्य के प्रकाश से सभी ग्रह प्रकाशित होते है। उसी प्रकार उस परमपिता परमेश्वर के तेज से सभी प्रकाशित होते है।
(कल्कि अवतार और मुहम्मद साहब, पृ.१५)

ईश्वर से सम्बन्ध अर्थात उनका कोई श्रेष्ठ (beloved) महात्मा लोगों का कल्याण करने के लिए धरती पर अवतीर्ण होता है, या धरती के अवतीर्ण लोगों में से निर्मल हृदय एवं सच्चरित्र किसी एक व्यक्ती में ज्ञान भर दिया जाता है, और ईश्वर के तेज का उसे साक्षात्कार हो जाता है, जिसके कारण बिना अध्ययन किए हुए ही उसमें सर्वोत्कृष्ट ज्ञान भर जाता है। (कल्कि अवतार और मुहम्मद साहब, पृ.१५)

डा.वेद प्रकाश उपाध्याय जी ने लिखा है कि अवतार शब्द संस्कृत भाषा में और 'प्रोफेट' अंग्रेजी भाषा में और 'नबी' अरबी भाषा में संसार के उद्धारकों के लिए प्रयोजनीय विश्रुत शब्द है। और हर देश के लिए अलग अलग अवतार हुए है।
(कल्कि अवतार और मुहम्मद साहब, पेज नं.१५-१६)
(डा. वेद प्रकाश जी के हिन्दी शब्द कठीन है। मगर

अर्थ ना बदले इसलिए हमने वैसा ही नकल कर दिया है।)

तो अवतार का अर्थ ईश्वर का धरती पर जन्म लेना नहीं बल्कि, अपने प्रतिनीधी या संदेष्ठा या पैगम्बर का धरती पर भेजना है। तो जो भी अवतार धरती पर आए वह पैगम्बर थे।

● जो मत डा. वेद प्रकाश उपाध्याय जी का है वही मत हिन्दू धर्म के महान विद्वानों का भी है। जैसे पंडीत सुन्दरलाल, श्री. बलराम सिंग परिहार, डा.पी. एच चौबे, डा. रमेश प्रसाद गर्ग, पंडित दुर्गा शंकर सत्यार्थी, श्री केसरी लाल भगत इत्यादि।

अवतार ईश्वर कैसे बन गए?

● ऋग्वेद का पहला शब्द है-

अग्निमीले (ऋग्वेद १-१-१)

अर्थात सब उपासनाएं अग्नि के लिये ही है।

● ऋग्वेद का एक श्लोक इस प्रकार है-

एकं सद्विप्रा बहुधा वदन्त्यग्नि यमं मातरिश्वानमाहुः।
(ऋग्वेद १:१६४:४६)

अर्थात, वही अग्नि यम और मातरिश्वा है। उस एक ब्रम्ह को विद्वान अनेक नामों से पुकारते है।

इस श्लोक से यह स्पष्ट हो गया है की अग्नि यह ईश्वर का एक नाम है।

● अब कुछ और श्लोक पढीए-

अग्निं दूत वृणीमहे (ऋग्वेद १-१२-१)

अर्थात हम अग्नि को दूत चुनते है।

त्वमग्ने प्रयत दक्षिणं नंर (ऋग्वेद १-३१-१५)

अर्थात अग्नि वह मानव है जो उपासना करने वालों से प्रसन्न होते है।

इन दोनों श्लोकों के बारे में हम क्या समझे?

श्लोक नं (१:१६४:४६) में अग्नि को ईश्वर कहा गया और इन दो श्लोकों में दूत और मानव कहा जा रहा है। तो अग्नि ईश्वर है या मानव?

ऐसे श्लोकों को न समझने के कारण ही 'ईश्वर मनुष्य रूप में जन्म लेता है' ऐसा विचार मन में पैदा होता है। या ऐसे श्लोकों को न समझना ही अवतारवाद की मान्यता का कारण है।

● एक ईश्वर को लोग अनेक नामों से याद करते हैं जैसे अल्लाह, मालिक, रहीम, रहमान, इत्यादि। वास्तव में ईश्वर के कुल ९९ नाम हैं। इस में से कुछ नाम उसके विषेश गुणों के कारण हैं। जैसे खालिक अर्थात पैदा करने वाला। ईश्वर का यह नाम विषेश इस लिए है क्योंकि ईश्वर के सिवाय और कोई दूसरा पैदा करने वाला नहीं है। ईश्वर के विशेष गुण का और एक नाम है मालिक। क्योंकी ईश्वर के सिवाय इस संसार का और कोई मालिक नहीं है।

● लेकिन ईश्वर के कुछ ऐसे नाम भी हैं, जो उसके स्वभाव के अनुसार हैं जैसे रहीम अर्थात अत्याधिक दया करने वाला। ग़फूर अर्थात क्षमा करने वाला।

● कभी कभी ईश्वर अपने उन नामों से जो उसके गुणों के अनुसार है, उन पैगंबरोंको भी संबोधित करता है, जिनमें वह गुण है। जैसा कि पवित्र कुरआन में हज़रत मुहम्मद (स.अ.) को 'रहीम' और 'ग़फूर' के नाम से याद किया है। (पवित्र कुरान ९:१२८) क्योंकि हज़रत मुहम्मद (स.) बहुत ही दयालू और क्षमा करनेवाले थे।

धरती पर किसी ने हजरत मुहम्मद (स.) को गफूर और रहीम नाम से नहीं पुकारा। मगर ईश्वर ने इस नाम से आप को पवित्र कुरआन में याद किया है। इसी प्रकार हिन्दू धर्म के ग्रन्थों में भी ईश्वर ने अपने नाम से बहुत सारे पैगम्बरों को याद किया है।

● अग्नि यह ईश्वर का गुण है। विद्वान कहते है कि अग्नि यह शब्द अग्रिणी से बना है जिसका अर्थ है प्रथम (First)। ईश्वर का अस्तित्व सबसे पहले था इसलिए वह प्रथम है, या अग्नि है। ईश्वर ने सब से पहले एक आत्मा को उत्पन्न किया था। वह आत्मा भी सब से पहले बनाई गई, इसलिए उसे भी ईश्वर

ने अग्नि कहा है। मेरा व्यक्तिगत विचार है (जो गलत भी हो सकता है) कि अग्नि का अर्थ प्रकाश (नूर) है। ईश्वर प्रकाश की तरह है इसलिए उसका नाम अग्नि है। और जिस आत्मा को ईश्वर ने सब पहले बनाया उसे भी प्रकाश से बनाया था। इसलिए ईश्वर ने उसे भी अग्नि कहकर पुकारा। इस पहली आत्मा से ईश्वर ने सब को ज्ञान दिया और इस पहली आत्मा को ईश्वर ने ईशदूत (अवतार/संदेष्टा) की तरह सब से अंत में धरती पर भेजा। (इस की विस्तृत जानकारी आप को मेरी पुस्तक 'अग्नि का रहस्य' में मिलेगी।) तो बाद के दोनों श्लोकों में इस प्रथम आत्मा को अग्नि कहा गया है।

● यह जानकारी मिलने के बाद अब हम ऋग्वेद के तीनों श्लोक को अच्छी तरह समझ सकते है।

१. सब उपासनाएं ईश्वर के लिए है। (ऋग्वेद १:१:१)

२. जिस आत्मा को ईश्वर ने सब से पहले प्रकाश से बनाया था। उस आत्मा को दूत बनाकर धरती पर भेजने का ईश्वर ने निर्णय लिया। (ऋग्वेद १:२:१)

३. वह आत्मा जो दूत बनकर धरती पर मानव रूप में आएगी और जिस से मानवजाति को ईश्वरीय ज्ञान मिला, वह ईश्वर की प्रार्थना करने वाले लोगों से प्रसन्न होते है। (ऋग्वेद १:३१:१५)

तो ईश्वर अपने गुणों वाले नामों से भी महापुरूषों को सम्बोधीत करता है। इस तथ्य को ना समझने के कारण ईश्वर धरती पर जन्म लेता है यह विश्वास लोगों के दिलों में पैदा हो गया। या ईश्वर अवतार लेता है ऐसी श्रद्धा लोगों की हो गई।

ईश्वर ने ब्रम्हा नाम से अनेक पैगम्बरों को ग्रन्थों में सम्बोधित किया है। जैसे हजरत आदम (स्वायंभु मनु) को हरीवंश पुराण में ब्रम्हा कहा गया है। हजरत इब्राहीम (अबीराम) को अथर्ववेद में ब्रमहा कहा है। और हजरत मुहम्मद (मामहे ऋषी) को भविष्य पुराण में ब्रम्हा कहा है। ऐस श्लोकों का अध्ययन हम अगले अध्यायों में करेंगे।

● अग्नि का रहस्य आप इस पुस्तक को मेरी वेबसाइट www.freeeducation.co.in पर पढ़ सकते हैं।

हजरत नूह (अ.स.) की कबर

१२-१२-२००४ को उर्दू दैनिक 'इन्कलाब' में एक आर्टीकल छपा था कि अयोध्या में हज़रत नूह और हजरत सीस (अ.) की कबर है। हजरत नूह को शास्त्रों में वैवस्वत मनु और हजरत सीस (अ.) को भविष्य पुराण में श्वेत कहा गया है। हज़रत नूह (अ.) की कबर १५ मीटर लम्बी है। इनकी कबरों के चित्र निम्न हैं।

हजरत नूह (अ.स.)की कबर (कोतवाली के पीछे)

हजरत सिस (अ.स.)की कबर(मणि पर्वत के पीछे)

Address :-
Hazrat Nooh (a.s) ki mazar
behind kotwali, Ayodhya,
Faizabad. U.P- 241125

४. हजरत आदम या स्वायंभुव मनु?

● पैगम्बरों को हिन्दू धर्म के ग्रन्थों में मनु, ऋषी या आचार्य भी कहा गया है। हिन्दू धर्म के ग्रन्थों में कुल चौदह मनुओं का वर्णन है। इन के नामों का अगले अध्याय में उल्लेख है। इन में जो पहले मनु है उनका नाम स्वायंभुव मनु है। यह सब से पहले मानव या हजरत आदम है। हजरत आदम का वर्णन ऋग्वेद में मनु के नाम से है। वह श्लोक इस प्रकार है-

जन मनुजात (ऋग्वेद १-४५-१)

अर्थात सब मनु की संतान हैं।

● भविष्य पुराण में हजरत आदम का वर्णन इस प्रकार है-

आदमो नाम पुरूषः पत्नी **हव्यवती** स्मृता।
विष्णुकर्दमता जातो म्लेच्छवंशप्रवर्धनौ।।
द्विशताष्टसहस्त्रे द्वे शेषे तु द्वापरे युगे।
म्लेच्छदेशस्य या भूमिर्भविता कीर्तिमालिनी
इन्द्रियाणि दमित्वा यो ह्यात्मध्यान परायणः।
तस्मादादनामासों पत्नी हव्यवती स्मृता।।
प्रदाननगरस्यैव पूर्वभागे महावनम्।।
इश्वरेण कृतं रम्यं चतुः क्रोशायंत स्मृतम् ।
पापवृक्षतले गत्वा पत्नीदर्शनतत्परः।
कलिस्तत्रागतस्तूर्ण सर्परूपं हि तत्कृतम् ।।
वंचिता तेन धूर्तेन विष्ण्वाज्ञा भगंतांगता।
खादित्वा तत्फलं रम्यं लोकमार्गप्रदं पतिः।।
उदुम्बरस्थ पत्रैश्च ताम्यां वाय्वशनं कृतम।
सुताः पुत्रास्ततो जाताः सर्वे म्लेच्छा वभूविरे।।
त्रिशोत्तरं नवशतं तस्यायुः परिकीर्तितम्।
फलानां हवनं कुर्वन्पत्न्या सह दिवं गतः।।

(भविष्य पुराण, प्रतिसर्ग पर्व, प्रथम खण्ड, चतुर्थ अध्याय) वेद व पुराणों के आधार पर धार्मिक एकता की ज्योति, लेखक :- डा. वेद प्रकाश उपाध्याय.)

● आदम और हव्वा (हव्यवती) विष्णु की गीली मिट्टी से उत्पन्न हुए। प्रदान नगर (स्वर्ग) के पूर्वा भाग में परमेश्वर द्वारा बनाया गया सुन्दर चार कोश के क्षेत्र का बहुत बड़ा वन था। पापवृक्ष के नीचे जाकर पत्नी को देखने की चाह से आदम हव्वा के पास गए। तभी सर्प का रूप बनाकर वहाँ कलि शैतान शीध्र आया। उस धुर्त के द्वारा आदम और हव्वा ठग लिए गए और पति आदम ने उस फल को खाकर विष्णु की आज्ञा को भंग कर दिया। परिणाम स्वरूप संसार में भेज दिए गए। गूलर के पत्ते उनका आहार बने। दोनों से बहुत सी संतान उत्पन्न हुई। सब म्लेच्छ कहे गए। आदम की आयु नौ सौ तीस वर्षे हुई। फलों का हवन करते हुए पत्नी के साथ आदम स्वर्ग चले गये।

● चौदह मनुओं में हज़रत आदम सब से पहले मनु हैं। और आपका नाम उस सूची में स्वायंभुव मनु है।

● भगवदगीता में हजरत आदम का वर्णन इस प्रकार है-

अर्जुन ने कहा,''हे सबसे पहले पैदा होने वाले मनुष्य के शासक! आप वायु, अग्नि, जल, और चंद्रमा के रक्षक हैं। सबसे पहले पिता (आदम) के हे महान ईश्वर! आपको मैं नमस्कार करता हूँ। आपके आगे सिर झुकाता हूँ, फिर से और भी सिर झुकाता हूँ।'' (गीता ११:३९)

● हरिवंश पुराण में हजरत आदम का वर्णन इस प्रकार है-

● अन्त में स्वयं सृष्टा ने अपने दाहिने भाग से मनु और वाम भाग से शतरूपा को प्रगट किया। यह जोड़ी सृष्टि बनाने में प्रवृत्त हुई। (हरीवंश पुराण, कल्याण, गोरखपूर, हिन्दू संस्कृति अंक जनवरी १९५० पृ. ७९५. पुस्तक-अब भी ना जागो तो।)

● ईश्वर ने हजरत आदम के बाएँ (Left) भाग से हव्वा को उत्पन्न किया था। यही बात बाइबल और हदीस शरीफ में भी लिखी है। तो हरीवंश पुराण में जिसे ब्रम्ह कहा गया है वह हजरत आदम ही है।

● क्या हजरत आदम के इस आधे शरीर से स्त्री के उत्पन्न होने की अवस्था को ही अर्धनारीश्वर कहा जाता है?

५. मनु या हज़रत नूह?

मार्कण्डेय पुराण, भविष्य पुराण और मत्स्य पुराण में ह कि मनु के युग में एक बहुत बड़ा बाढ़ आया था जिस में केवल मनु और उन के अनुयायी एक नाव में बैठकर बच गए थे। और इन लोगों को छोड़कर बाकी विश्व के सभी लोग इस भयंकर बाढ़ में डूबकर मर गए थे।

विश्व के सभी धार्मिक ग्रन्थों में केवल एक ही बाढ़ का वर्णन है। और उस बाढ़ में केवल एक ही नाव का वर्णन है जिसमें एक महापुरूष अपने अनुयायियों के साथ बच जाता है।

A.J.A. Dubois ने अपनी पुस्तक Hindu Manner customs and ceremonies में लिखा है कि नाव वाले मनु, बाइबल के Prophet Nooh और मुसलमानों के हजरत नूह यह एक ही व्यक्ति है।

● हिन्दू धर्म में पैगम्बरों को मनु कहते है। और ग्रन्थो में कुल चौदह मनुओं का वर्णन हैं। उनके नाम इस प्रकार हैं-

१. स्वायंभव मनु २. स्वारोचिष मनु
३. उत्तम मनु ४. तामस मनु
५. रैवत मनु ६. रौच्य मनु
७. मौत्य मनु ८. चाक्ष मनु
९. दक्ष या मेरूसावर्णि मनु
१०. ब्रम्हसावर्णि (कश्यप) मनु
११. धर्म सावीर्ण मनु १२. रूद्रसावर्णि मनु
१३. वैवस्वत मनु १४. सावर्णि मनु

● दो मनुओं के अवतारीत होने के बीच के समय को मनुवनतर कहते है।

● इस सूची में हजरत आदम को स्वायंभव मनु कहा गया है। क्योंकी आप माता पिता के बगैर अस्तित्व में आए थे। बाढ़ वाले मनु का नाम इस सूची में वैवस्वत मनु है। इन चौदा मनु का वर्णन भगवद् गीता में इस प्रकार है।

● (श्री कृष्ण जी ने कहा, ईश्वर कह रहा है कि,) प्राचीन काल के सात बड़े ऋषि और मनु की पीढ़ी से भेजे जाने वाले चौदह ऋषि विचार करते हुए मेरी इच्छा पर चलने वाले थे। इस संसार में यह सारी मानवजाति सबसे पहले निर्माण किये जाने वाले मनुष्य से और उन (ऋषियों की पीढ़ी) से ही पैदा हुए हैं। (गीता अध्याय १०, श्लोक ६)

● वैवस्वत मनु या बाढ़ वाले मनु या हजरत नूह, स्वायंभव मनु या हजरत आदम के नौवे (9th) वंशज हैं। इन नौ लोगों का वर्णन भविष्यपुराण में इस प्रकार है-

● **तस्माज्जात: सुत: श्रेश्ट: घ्वेतनामेति यिश्रुत: l**
द्वादषोत्तरयर्श च तस्यायु: परिकीर्तितम l l
अनुहस्तस्य तनय: षतहीनं क्रृतं पदम l
कीनाषस्तस्तस्य सुत: पंचहीनं षतं नय l
तेन राज्यं क्रृतं तत्र तस्मान्मानगरं स्मृतम l l
तस्माच्च विरदो जातो राज्यं शश्टू युत्तरं समा: l
ज्ञे यं नवषतं तस्य स्यनाम्ना नगरं स्मतम l l
हनूकस्तस्य तनयो विशणुभक्तिपरायण: l
फलानां हवनं कुर्वन् 'तत्व ह्यसि' जयन सदा l l
त्रिषतं पंचशश्टिष्च राज्यं वर्शाणि तत्समतम l
सदेह: स्वर्गमायातो म्लेच्छधर्मपरायण: l l
राज्यं नवषतं तस्य सप्ततिष्च स्मृता: समा: l l
लोककस्तस्य तनयो राज्यं सप्तषतं समा: l
सप्तसप्ततिरेवास्य तत्पष्चात्स्वर्गतिंगत: l

(भविष्य पुराण, प्रतिसर्ग पर्व, प्रथम खण्ड, चतुर्थ अध्याय) वेद व पुराणों के आधार पर धार्मिक एकता की ज्योति, लेखक :- डा. वेद प्रकाश उपाध्याय.)

आदम के बड़े पुत्र श्वेत के नाम से प्रसिद्ध हुए। उनकी आयु ९०० वर्ष हुई। उनका पुत्र अनुह था। जिसने ईश्वर दूत के पद को सौ वर्ष से कुछ कम समय तक धारण किया। उसका पुत्र कीनाश हुआ जिसने पितामह आदम के सम्मान दुत का पद धारण किया। उसका पुत्र महल्लल हुआ जिसने ८९५ वर्ष तक राज्य किया। उसका पुत्र विरद हुआ, जिसने ९०८ वर्ष

राज्य किया। उन्होंने अपने नाम से नगर बसाए। उनका पुत्र हनुक हुआ जो विष्णु के ध्यान में मग्न रहता। उन्होंने ३६६ वर्ष राज्य किया। म्लेच्छ धर्म को स्थापित करके स्वर्ग चले गए। हनुक के पुत्र का नाम मतोच्छिल था। उन्होंने ६७० वर्ष राज्य किया। उनके पुत्र का नाम लोमक था। उन्होंने ७७७ वर्ष राज्य किया। उनके पुत्र का नाम **न्यूह** था।

यहाँ जिसे न्यूह कहा जा रहा है यह ही वैवस्वत मनु हैं या हजरत नूह है।

● वेदों में हजरत नूह को मनु कहा गया है।

ऋग्वेद का एक श्लोक इस प्रकार है।

हे अग्नि! मनु आप के ईशदुतत्व की पुष्टि करते है।
(ऋग्वेद १-१३-४)

इस प्रकार हजरत नूह का नाम मनु के नाम से वेदों में ७५ बार आया है। ५१ बार ऋग्वेद में, २ बार यर्जुवेद में, १४ बार अथर्ववेद में और ८ बार सामवेद में आप का नाम है।

● मत्स्य पुराण और मार्कण्डेय पुराण में भी आप का वर्णन है। भविष्य पुराण में आप का वर्णन निम्नलिखित है-

तस्माज्जत: सुतो न्युहो निर्गतस्तूह एव स:।
तस्मान्न्यूह: स्मृत: प्राज्ञै: राज्यं प्ञ् चषतंकृतम।।
सीम: षमष्च भावष्च त्रय पुत्रा बभूविरे।
न्यूह: स्मृतां विशणु भक्तस्सोऽहं ध्यानपरायण:।।
एकदा भगवान विशणुस्तंत्स्वप्ने तु समागत:।
वत्स न्यूह श्रृणुश्वेदं प्रलय: सप्तमेऽहनि।
भविता त्वं जनैस्सार्ध्द नावमारूह्य सत्वरम।
जीवनं कुरू भक्तेन्द्र सर्वश्रेश्ठो भविश्यसि।।
तथेति मत्वा स मुनिर्नावं कृत्वा सुपुश्ठिताम।
हस्तत्रिषतलम्बां च प्ञ् चाषद्धस्तविस्तृताम।।
त्रिषद्धस्तोच्छतां रम्यां सर्वजीवसमन्विताम।
आरूह्य स्वकुलैस्सार्द्ध विशणुध्यानपरोऽभवत्।।

(भविष्य पुराण, प्रतिसर्ग पर्व, प्रथम खण्ड, चतुर्थ अध्याय) वेद व पुराणों के आधार पर धार्मिक एकता की ज्योति, लेखक :- डा. वेद प्रकाश उपाध्याय.)

लोमक को न्यूह नामक पुत्र हुआ। उसने पाच सौ वर्ष तक राज्य किया। उसके सिम, हाम, और याकुत तीन पुत्र हुए। विष्णु का भक्त विष्णु के ध्यान में मग्न रहता। एक बार भगवान विष्णु ने उसे स्वप्न में बताया कि हे प्रिय न्यूह! सुनो सातवें दिन प्रलय होगा। तुम लोगों के साथ नाव में शिघ्र बैठ जाना। हे भकतेन्द्र अपना जीवन बचाओ, तुम सर्वश्रेष्ठ हो जाओगे। वैसा स्वीकार करके उस मुनी ने तीन सौ हाथ लम्बी और पचास हाथ चौडी और तीन सौ हाथ उँची नाव बनाई। और सभी जीवों के जोड़े तथा उनके कुल वालों के साथ नाव में चढकर विष्णु के ध्यान में मग्न हो गया।

सांवर्तक नाम के मेघों के गण चालीस दिनों तक महान वर्षा की। सम्पुर्ण भारतवर्ष जल में डुब गया। और चार समुद्र मिल गए और विशाल हो गए। ब्रम्हवादी मुनी और न्युह अपने कुलों के साथ जल के अन्त होने पर वहाँ वास करने लगे।

मनु या हजरत नूह के बारे में ऐसा ही वर्णन पवित्र कुरआन (११:२५-४८) और बाइबल (जेनीसीस ६-८) में भी लिखा है।

हिन्दू भाई किसके अनुयायी है?

● A.J.A. Dubois ने अपनी पुस्तक Hindu manners custom & ceremonies में लिखते है कि जैसे ईसाई हजरत इसा के अनुयायी है। मुसलमान हजरत मुहम्मद (स.) के अनुयायी है। वैसे ही हिन्दू भाई यह हजरत नूह या मनु के अनुयायी है।

इस सत्य का कारण वह इस प्रकार समझाते है-

१) हर धर्म के लोग अपने वर्ष की गिनती को अपने धर्मगुरू के जीवन में घटे किसी महत्वपूर्ण घटना से शुरू करते है। जैसे ईसाई भाईयों का वर्ष हजरत ईसा के इस धरती से स्वर्ग प्रस्थान के समय से शुरू होता है। मुसलमानों का वर्ष हजरत मुहम्मद (स.) के मक्का से मदीना हिजरत से शुरू होता है। इसी प्रकार हिन्दू भाईयों का वर्ष मनु के समय आए हुए भयंकर बाढ के

अन्त से शुरू होता है। और उसी समय से कलयुग आरम्भ हुआ ऐसा उनका मानना है।

२) इसी प्रकार हर धर्म की धार्मिक नियमों की पुस्तक उनके धर्मगुरू से सम्बधित होती है। जैसे बाईबल हजरत इसा से सम्बधित है। कुरआन हजरत मुहम्मद (स.) से सम्बधित है। इसी प्रकार हिन्दू धर्म के धार्मिक नियमों के ग्रंथ का नाम मनुस्मृती है। और इस में मनु के बताए हुए नियम है।

३) विश्व के सभी लोगों को दो प्रकार के जाति में बांटा जाता है।

१. Semetic Race सेमटीक जाति

२. Nom-Semetic Race गैर-सेमेटीक जाति

सेमेटीक जाति यह युरोप और अरब में बसे यहुदी, इसाई और मुसलमान लोग है।

गैर-सेमेटीक जाति यह एशिया में बसे आर्यन लोग हैं।

● पवित्र कुरआन की एक आयत इस प्रकार है-

''ये वे पैगम्बर हैं जो अल्लाह के कृपापात्र हुए। यह सब आदम की सन्तान में से हैं। और उन लोगों की नस्ल से हैं, जिन्हें हमने नूह के साथ नाव में सवार किया था।

और इब्राहीम और इस्राईल की नस्ल से। और ये उन लोगों में से थे जिनको हमने मार्ग दिखाया और चुन लिया।'' (सुरे : मरयम आयत-५८)

इस आयत का अर्थ है कि, सारे पैगम्बर आदम की सन्तान में से थे (कोई फरिश्ता न था) और उन में दो प्रकार (जाति) के लोग हैं। एक वह जो हजरत इब्राहीम के साथ है। हजरत इब्राहीम के साथ वाले युरोप और अरब के लोग है। या सेमेटीक जाति के लोग है।

हजरत नूह के साथ वाले दूसरी जाती के लोग हुए।

दूसरी जाती यानी गैर-सेमेटीक जाति के लोग एशीया के आर्यन है। इस तरह पवित्र कुरआन कि आयत से भी प्रमाणीत होता है की हजरत नूह आर्यन जाती के पैगम्बर थे।

भारत वर्ष में सभी आर्यन जाति के है। इस तरह हजरत नूह भारत देश में ही अवतरीत हुए थे या वह यहाँ के लोगों के पैगम्बर थे। इस तरह भारत के मूल निवासी उनके अनुयायी है।

हजरत नूह(वैवस्वत मनु) की कबर

१२ दिसबंर २००४ के दिन उर्दू न्युज पेपर इन्कलाब में एक आर्टीकल छपा था, जिस में अयोध्या में कबरों का वर्णन था। उस में लिखा था कि अयोध्या में थाना कोतवाली के निकट सड़क से लगकर पूर्व की तरफ एक कबर 'नौ गज़ी' के नाम से प्रसिद्ध है। यह वास्तव में १५ मीटर लम्बी है। इस कबर पर लिखा है कि यह हज़रत नूह (मनु) की कबर है।

एक हदीस शरीफ है की हजरत आदम (अ.) बहुत लम्बे थे। हजरत नूह (अ.) हजरत आदम (अ.) के नौवें वंशज है तो हो सकता हैं आप भी लम्बे हों। इस तरह कबर पर जो हजरत नूह (अ.) का नाम लिखा है वह सच मालूम होता है। और यह भी प्रमाणित होता है की आप भारत देश में रहे और यहा आप का देहान्त हुआ।

इस कबर को आप निम्नलिखीत लिंक पर देख सकते है।

(जब हज़रत आदम (अ.) और हव्वा (अ.) धरती पर अकेले थे और हर तरफ जंगली जानवर थे, और कोई शस्त्र भी विकसीत नहीं हुआ था, तो आप की सुरक्षा के लिए ईश्वर ने आप को बहुत ऊंचा और शक्तिशाली बनाया था।)

(हजरत नूह (वैवस्वत मनु) की कबर का चित्र पेज नं. १५ पर देखे।)

६. पुरूष-मेधा या बकरी-ईद?

● अथर्ववेद (१०-२-२६) में हज़रत इब्राहीम (अ) (अबीराम) को ब्रह्मा कहा गया है और लिखा है कि ब्रम्हा (अ.) ने अपने पुत्र अथर्वा की बलि (क़ुर्बानी) दी। यही बात पवित्र क़ुरआन में है, कि हज़रत इब्राहीम (अ.) ने अपने पुत्र हज़रत इस्माईल (अ.) की क़ुर्बानी दी थी।(पवित्र क़ुरआन ३७:१०५) और इसी प्रकार बाइबल में भी हज़रत इब्राहीम (अ.) के द्वारा किए गए क़ुर्बानी का वर्णन है (Genesis-22)। तो अथर्ववेद में जिसे ब्रह्मा कहा गया है वह स्वयं ईश्वर नहीं बल्कि हज़रत इब्राहीम (अ.) हैं।

● आपको यह पढ़कर बहुत आश्चर्य हुआ होगा इसलिए हम इस प्रसंग पर कुछ और वर्णन प्रस्तुत करने का प्रयत्न कर रहे हैं। हज़रत इब्राहीम (अ) को सभी धर्मों के लोग हज़रत आदम और हज़रत नूह के पश्चात बहुत से पैगंबरों के पिता मानते हैं और बहुत आदर करते हैं।

● हज़रत इब्राहीम (अ.) एक मूर्तिकार के पुत्र थे। बचपन से ही वह एक ईश्वर को मानते थे। एक बार जब शहर के सारे लोग शहर से बाहर मेले में गये हुए थे, तो उस समय हज़रत इब्राहीम (अ.) ने सभी देवी-देवताओं की मूर्तियों को तोड़ डाला। इस घटना से क्रोधित होकर राजा ने उन्हें कठोर दण्ड देने का निश्चय किया तथा एक विशालकाय अग्निकुंड में फेंकने का आदेश दिया लेकिन ईश्वर ने अपने इस सत्यवान पैगंबर को अग्नि में जलने से बचा लिया और अग्निकुंड में गिरने के बाद भी अग्नि उनका कुछ न बिगाड़ सकी।

इस घटना के पश्चात वह फिलिस्तीन शहर में जाकर बस गये। और एक ईश्वर को मानने और उसके बनाये हुए नियम पर चलने का उपदेश लोगों को देने लगे। ९० वर्ष की आयु में ईश्वर द्वारा उन्हें एक पुत्र की प्राप्ति हुई जिसका नाम उन्होंने इस्माईल रखा।

जब हज़रत इस्माईल (अ.) बहुत छोटे थे, तब ईश्वर के आदेश के अनुसार हज़रत इब्राहीम (अ.) ने हज़रत इस्माईल (अ.) और अपनी पत्नी हज़रत हाजरा (अ.) को मक्का शहर में ले जाकर छोड़ दिया। जब हज़रत इस्माईल (अ.) कुछ बड़े हुए, तो हज़रत इब्राहीम (अ.) ने एक स्वप्न देखा कि आप अपने सबसे प्रिय चीज़ की क़ुर्बानी ईश्वर की राह में कर रहे हैं। पैगम्बर का स्वप्न कभी झूठा नहीं होता है, इसलिए वह समझ गये कि उन्हें अपनी सबसे प्रिय चीज़ की क़ुर्बानी करनी है और उन की सब से प्रिय चीज़ उन का पुत्र है।

हज़रत इब्राहीम (अ.) ने अपने स्वप्न के बारे में हज़रत इस्माईल को कह सुनाया और उनकी राय पूछी। हज़रत इस्माईल ने अपने पिता को उत्तर दिया, ''जो आदेश, ईश्वर ने आपको दिया है, उसे अवश्य कीजिए और आप मुझे धैर्य (सब्र) रखने वालों में पाऐंगे। (पवित्र क़ुरआन ३७:१०२)

जब हज़रत इब्राहीम (अ.) अपने साथ हज़रत इस्माईल (अ.) को मक्का शहर के बाहर मिना की पहाड़ी पर ले कर चले, तो शैतान ने तीन बार उन्हें भटकाने (बहकाने) की भरपूर कोशिश की तब तीनों बार हज़रत इब्राहीम (अ.) ने उस शैतान को पत्थर मार कर भगा दिया। मिना पहुंचकर हजरत इस्माइल ने कहा की आप मेरे हाथ-पैरों बांध दीजिए। वरना मेरे तडपने से आप को मुश्किल होगी। फिर उन्होंने अपने प्रिय पुत्र हजरत इस्माइल (अ.) के हाथ-पैर को बांध दीजिए। फिर उन्होंने अपनी आँख पर पट्‌टी बांध ली क्योंकी वह चाहते थे के पुत्र मोह से उनका हाथ न कांपे। फिर उन्होंने हज़रत इस्माईल के गले पर छुरी चलाने की भरपूर कोशिश की। किन्तु ईश्वर को हज़रत इब्राहीम (अ.) और हज़रत इस्माईल की केवल परीक्षा लेनी थी, जान नहीं लेनी थी इसलीए ईश्वर के आदेश से हज़रत जिब्रील (अ.) ने स्वर्ग से एक दुम्बा (मेंढ़ा) लाकर हज़रत इस्माईल की जगह पर लिटा दिया और हज़रत इस्माईल(अ.) के बदले

दुम्बे की कुर्बानी हो गयी।

इस पूरे घटना क्रम को अथर्ववेद में 'पुरूष मेधा' के नाम से याद किया जाता हैं। इस छोटी सी पुस्तक मैं हम सारे श्लोक नहीं लिख सकते है। उसमें से एक श्लोक हम यहाँ लिखते हैं। इस घटना में हजरत इस्माईल (अ.) (अथर्वा) ने हजरत इब्राहीम(अ.) (ब्रम्हा) की जो बात मान ली थी वह श्लोक इस प्रकार है-

मूर्धानमस्य संसीव्याथर्वा हदयं च यत्।
मस्तिश्कादूर्ध्व पैरयत् पवमानोधि शीर्शतः
(अथर्ववेद १०:२:२६)

अर्थात अथर्वा ने अपने पिता ब्रह्मा की बात दिल और जान से मान लिया और पवित्रता उनके चेहरे पर झलक रही है।

तो अथर्ववेद में जिसे ब्रह्मा के नाम से याद किया गया है वह हज़रत इब्राहीम (अ.) हैं। अथर्वा के नाम से जिसे याद किया गया है, वह हज़रत इस्माईल (अ.) हैं। अंगीरा के नाम से जिसे याद किया गया है वह हज़रत इस्हाक़ (अ.) हैं। इसलिए जैसे यह तीनों पैगंम्बर ईसाई, यहूदी और मुसलमानों के पैगम्बर हैं, उसी तरह यह तीनों पैगंम्बर हिंदू धर्म के पैगंम्बर भी हुए। 'पुरूष मेधा' का अर्थ है मनुष्य की कुर्बानी। इसी को आज मुस्लिम समाज 'बकर ईद' के नाम से मनाते हैं।

जिस जगह यह घटना घटित हुई वह स्थान मिना (मक्का शहर के नज़दीक) है, जहाँ लोग हज के लिए जाते हैं और वहाँ पर तीन दिन खेमे (Tent) में रहते हैं और ईश्वर की प्रार्थना करते है। जिस जगह हज़रत इब्राहीम (अ.) ने शैतान को पत्थर मारा था, उसी स्थान पर हाजी आज भी कंकरी (छोटे पत्थर) मारते हैं।

(अधिक जानकारी के लिए A.H. Vidyarthi की पुस्तक Muhammad in Hindu Scriptures Adam Publications का अध्ययन करें।)

● हजरत इब्राहीम को भविष्य पुराण में अबीराम कहा गया है। आप मनु या हजरत नूह के दसवे वंशज हैं। इन दस लोगों का वर्णन भविष्य पुराण में इस प्रकार है-

द्विसहस्त्रे शताब्द न्ते बुद्धा पुनरथाब्रवीत् ।
सिमवंशं प्रवक्ष्यामि सिमो ज्येष्ठः स भूपति।
राज्यं पञ्च शतं वर्ष तेन म्लेच्छेन सत्कृतम् ।।
अर्कसदरतस्य सुतश्रच्तुस्त्रिशच्च राज्यकम।।
चतुश्शतं पुनज्ञे यं सिल्हास्ततनयोऽभवत् ।
राज्यं तस्य स्मृतं तत्र षष्ट् युत्तरचतुः शतम् ।।
इवतस्य सुतोज्ञेय यः पितुस्तुल्यं कृतं पदम् ।
कलजतस्य तनयः चत्वारि शंदद्वयं शतम् ।।
राज्यं कृतंतु तस्माच्च रऊनाम सुतः स्मृतः।
सप्तन्निशच्च द्विशतं तस्य राज्यं प्रकीतितम् ।।
तस्माच्च जूज उत्पन्नः पितुस्तुल्वं कृतं पदम् ।
नहूरस्तस्य तनयो वयः षष्टयुत्तरंशतम् ।।
राज्य चकार नृपतिर्बहुशवून् विहिंसयन् ।
ताहरस्तस्य तनयः पितुस्तुल्यं कृतं पदम् ।।
तस्नातुत्रोऽविरामच्श्र नहूरो हारनस्त्रयंः।
एवं ऐषा स्मृता वंशा नाममात्रेण कीर्तिताः।।

(भविष्य पुराण, प्रतिसर्ग पर्व, प्रथम खण्ड, चतुर्थ अध्याय) वेद व पुराणों के आधार पर धार्मिक एकता की ज्योति, लेखक :- डा. वेद प्रकाश उपाध्याय.)

मनु के तीन पुत्र थे-सिम, हाम और याकूत। सिम ने पांच सौ वर्ष राज किया। उनके पुत्र का नाम अर्कसद था जिसने ४३४ वर्ष राज्य किया। उन्हें सिंह नाम का पुत्र हुआ। जिस ने चार सौ साठ वर्षे राज्य किया। सिंह को इब्रत नाम का पुत्र हुआ। इब्रत को फालिख नाम का पुत्र हुआ। फालिख ने भी पिता के पद को शोभित किया। फालिख का पुत्र रउ था जिसने २३० वर्ष राज्य किया। उनको जूज नाम का पुत्र हुआ। जिस ने पिता के समान पद को शोभित किया। उनको नहुर नाम का पुत्र हुआ। जिस ने १०८ वर्ष राज्य किया। उनको ताहर (आजर) नाम का पुत्र हुआ। उनको तीन पुत्र हुए। **अबिराम**, नहुर और हारन। इस प्रकार वह म्लेच्छवंश के गुरू होंगे।

● हजरत इब्राहीम के पुत्र का नाम अथर्वा जिन्हें अरबी में इस्माईल कहते है, इनके नाम से ही अथर्ववेद है। हजरत मुहम्मद अर्थवा (हजरत इस्माईल) के एकसठवें (६१) वंशज हैं। इन दोनों के बीच जो लोग हैं उन के नाम आप इन्टरनेट पर देख

लिजीए। यह बहुत प्रसिद्ध है इसलिए बहुत सारी वेबसाईट पर इन का वर्णन है। हजरत मुहम्मद (स.) के बारे में हम इस पुस्तक के आगे पढ़ेंगे।

म्लेच्छ कौन?

● आज के युग में म्लेच्छ का अर्थ एक गन्दा इन्सान है। परन्तु प्राचीन युग में इस का अर्थ कुछ और था। भविष्य पुराण में म्लेच्छ का अर्थ निम्नलिखित बताया गया है-

आचारश्य विवेकश्च द्विजता देवपूजनम्।
कृतान्येतानि तेनैव तस्मान्म्लेच्छः स्मृतो बुधैः।।
विष्णुभक्त्यग्रि पूजा च ह्याहिंसा च तपो दमः।
धर्माण्येतानि मुनिभिर्म्लेच्छानां हि स्मृतानि वै।।

सदाचार, ऊंचा ज्ञान, ब्राम्हणत्व, देवपूजन (दिव्य परमात्मा की पूजा) हनूक नामक ईशदूत के द्वारा दिये गये इसी से उसे विद्वानों ने म्लेच्छ कहा। विष्णु की भक्ति, प्रकाशक परमात्मा की पूजा, अहिंसा, तपस्या, इन्द्रियदमन ये गुण मुनियों ने म्लेच्छों के बताए हैं।

(भविष्य पुराण, प्रतिसर्ग पर्व, प्रथम खण्ड, चतुर्थ अध्याय) वेद व पुराणों के आधार पर धार्मिक एकता की ज्योति, लेखक :- डा. वेद प्रकाश उपाध्याय.)

****
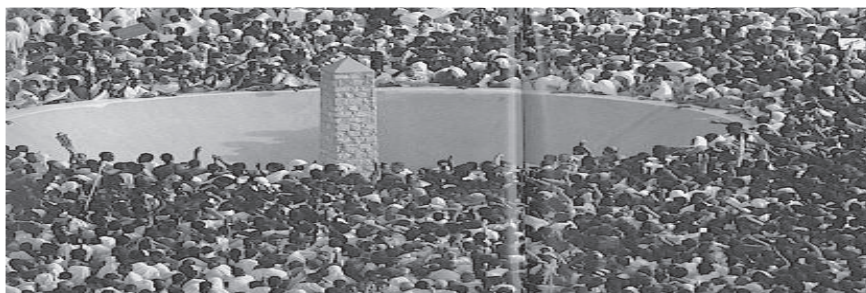
हज यात्री इस विशेष खंभे को पत्थर मारते हुए (इसी जगह शैतान ने हज़रत इब्राहीम (अ.) को गुमराह करने की कोशिश की थी।)

मीना जिसका वर्णन अथर्ववेद में है और इसी जगह हज़रत इब्राहीम (अ.) ने हज़रत इस्माईल (अथर्वा) की कुर्बानी देने की कोशिश की थी।

इसी जगह हज यात्री तीन दिन तंबु में रहकर ईश्वर की प्रार्थना करते हैं।

▾ ▾ ▾ ▾ ▾ ▾ ▾

७. मक्का या मक्तेश्वर?

सनातन धर्म (हिंदू धर्म) की धार्मिक किताबों में मक्का शहर और काबा शरीफ को सात नामों से याद किया गया है। उनका वर्णन निम्नलिखीत हैं-

१. इलास्पद

एल, एलिया, इला, इलाया, अल्लाह आदि यह सब नाम अलग-अलग धर्मों में ईश्वर के लिए बोले जाते है। पद यानी जगह (Place)। इलास्पद यानी ईश्वर की जगह.

२. इलायास्पद

इसका अर्थ भी ईश्वर की जगह है। पंडित श्रीराम शर्मा अचार्या ने वेदों के अपने हिंदी अनुवाद में इस का अनुवाद 'पृथ्वी का पवित्र स्थान' किया है।

३. नाभा पृथिव्या

नाभि का अर्थ है नाफ (Centre/Naval) और पृथिव्या यानी धरती। नाभा पृथिव्या यानी धरती का नाफ या धरती का केंद्र या Centre of earth.

- इलायास्पद पढेवयं नाभा पृथिव्या अधि ।।

(ऋग्वेद ३-२९-४)

इस का अर्थ है कि धरती का पवित्र स्थान यानी ईश्वर का घर पृथ्वी के केंद्र पर है।

४. नाभि कमल

परम पुराण में कहा गया है कि नाभि कमल वह तीर्थ स्थान है जहाँ से सृष्टी का निर्माण हुआ।

हरि वंश पुराण (पंडित श्रीराम शर्मा अचार्या द्वारा अनुदित, पृष्ठ ४९९-५०१, भाग-२) में भी यही बात कही गई है और यही बात 'हदीस शरीफ' में भी कही गयी है।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ी.) कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद (स.) ने कहा कि आकाश और पृथ्वी के निमार्ण के ज़माने में पृथ्वी पर चारों तरफ पानी ही-पानी था। तो उस पानी की सतह (Surface) से सब से पहले काबा का स्थान प्रकट हुआ, फिर धरती उस के नीचे से चारों तरफ फैलती गई। (मआ़रिफ़ते काबा, पृष्ठ-५)

५. आदि पुष्कर तीर्थ

पदम पुराण में है कि धरती का सब से प्राचीन, सब से पवित्र और सब से लाभदायक तीर्थ स्थान आदि पुष्कर तीर्थ है। पदम पुराण ने इस पवित्र स्थान की यात्रा का महत्व इन शब्दों में उल्लेख किया है-

- जो दिल से आदि पुष्कर तीर्थ जा कर सेवा की चाह करता है उस के तमाम पाप धुल जाते हैं।
- जो आदि पुष्कर तीर्थ की यात्रा करता है वह अनंत पुण्य (Too Much Eternal Blessings) का हक़दार होता है।
- सब तीर्थों में आदि पुष्कर ही प्राचीन तीर्थ स्थान है। आदि पुष्कर तीर्थ जा कर स्नान करने से मुक्ति मिलती है।

(ज़मज़म का कूआँ काबा शरीफ से ५० फिट की दूरी पर है और रोज़ाना लाखों लीटर पानी सऊदी सरकार इस से निकालती है। जिसे हाजी पीते हैं और स्वदेश के समय अपने साथ ले जाते हैं।)

६. दारूकाबन

ऋग्वेद में लिखा है कि, "हे ईश्वर की प्रार्थना करने वालो! दूर देश में समुद्र-तट के करीब जो दारूकाबन है वह इन्सान का बनाया हुआ नहीं हैं। इस में ईश्वर की प्रार्थना कर के उस की कृपा से स्वर्ग में दाखिल हो जाओ।"(ऋग्वेद १०-१५५-३)

(पवित्र काबा को पहली बार फ़रिश्तों ने बनाया था। मक्का शहर भारत देश से दूर और समुद्र तट के पास है।)

७. मक्तेश्वर:

Sir M. Monier Willium की संस्कृत-इंग्लिश डिक्शनरी में मक्तेश्वर का अर्थ है The city of Makkah/Yagya यानी मक्का शहर और कुर्बानी की जगह।

मक्का में ईश्वर का घर तो है ही, इस जगह हज़रत इब्राहीम (अ.स.) ने हज़रत इस्माईल (अ.स.) की कुर्बानी भी दी थी, जिसे अथर्ववेद में 'पुरूष मेधा' के नाम से लिखा गया है और हर साल हज के दिन लाखों जानवरों की कुर्बानी भी दी जाती है।

अथर्ववेद में काबा शरीफ की प्रशंसा:

- अब तक हम ने अलग अलग ग्रंथों में मक्का शहर और पवित्र काबा को किस नाम से याद किया गया है, इस का अध्ययन किया। अब अथर्ववेद में काबा शरीफ के बारे में क्या लिखा है इस का अध्ययन करते हैं।

अथर्ववेद में काबा शरीफ की प्रशंसा और वर्णन इस प्रकार है।

- **ऊर्ध्वो नु सृष्टा ३ स्तिर्यंडः नु सृष्टा ३: सर्वादिशः पुरूष आ वभूवाँ ३ I**
  पूरं यो ब्रह्मणों वेद यस्याः पुरूष उच्यते II
  (अथर्वेद १०:२:२८)

अर्थातः चाहे उस की दीवारें ऊंची और सीधी हों (या ना हों), मगर ईश्वर उस की हर दिशा में नज़र आता है। जो ईश्वर की प्रार्थना करते हैं वह यह जानते हैं।

नोटः- काबा शरीफ Cubical नज़र आता है। मगर यह Perfect cubical नही हैं। इस के हर दिवार का Size अलग अलग है। मगर यहाँ ईश्वर की ऐसी कृपा है की जो इसे देखता है वह बस देखते रह जाता है। और उसे इसको देखने में आनंद मिलता है और लोगो का इस के चारों तरफ परिक्रमा करने का मन चाहता है। और उस में भी वह आनंद महसूस करते हैं।

- **यो वै तां ब्रह्मणों वेदामृतेनावृतां पुरम I**
  तस्मै ब्रह्म च ब्राह्माश्च चक्षुः प्राण प्रजां ददुः
  (अथर्वेद १०:२:२६)

अर्थातः जो इस घर को पहचानता है (और इस के पास प्रार्थना करता है) उस पर ईश्वर की कृपा होती है, और (हज़रत इब्राहीम (अ.स.)) ब्रम्हा की दुआ उसके साथ रहती है। उसे ईश्वर ज्ञान, सम्मती, खुश्हाली और संतान देते है।

- **अष्टाचक्रा नवद्वारा देवानां पूरयोध्या I**
  तस्यां हिरायः कोशः स्वर्गो ज्योतिषवृतः
  (अथर्वेद १०:२:३१)

अर्थात फ़रिश्तों के रहने की इस जगह के चारों तरफ़ आठ सर्कल (Circle) हैं और नौ दरवाज़े हैं, इसे कोई विजय नहीं कर सकता। इस में अमर जीवन हैं और दिव्य ज्योती इस से हर तरफ़ फैलती रहती है।

श्लोक में जिसे सर्कल कहा हैं वह वास्तव में पहाड़ (पर्वत) है। काबा शरीफ के चारों तरफ आठ पहाड़ हैं। उन के नाम इस तरह हैं:

(१) जबले खलीज, (२) जबले क़ीक़ान, (३) जबले हिंदी, (४) जबले लाला, (५) जबले कादा, (६) जबले अबू-हदीदा, (७) जबले अबी-काबिस, (८) जबले उमर

नोटः- अरबी में 'जबले' का अर्थ पहाड़ है।

काबा शरीफ के चारों तरफ जो प्राचीन इमारत है, उस में नौ दरवाज़े थे। उन के नाम इस तरह हैः

(१) बाब-ए-इब्राहीम , (२) बाब-ए-अल-विदा, (३) बाब-ए-सफा, (४) बाब-ए-अली, (५) बाब-ए-अब्बास, (६) बाबे नबी, (७)

बाब-ए-सलाम, (८) बाब-ए-ज़ियाद, (९) बाब-ए-हरम

नोट- अरबी में 'बाब' का अर्थ दरवाज़ा है।

काबा शरीफ को विजय नहीं किया जा सकता। एक बार ५३० A.D. में यमन के राजा अब्राहा ने हाथियों का लश्कर ले कर मक्का पर चढ़ाई कर दिया था, ताकि वह काबा शरीफ को ढा दे। जब वह मक्का शहर के क़रीब पहुचा तो अबाबील नाम की बहुत सी छोटी चिडीयों ने अपनी चोंच में कंकरी (Small Stones) ले जा कर उन सैनिकों पर फेंकने लगी। और कंकरी लगते ही सैनिक अपने हाथियों समेत भूसा की तरह सड़-गल गये। इस तरह पूरी सेना का विनाश हो गया। इसका पूरा वर्णन आप कुरआन शरीफ़ के 'सूरह फ़ील १०५' में पढ़ सकते हैं। इस लिए इस शहर को विजय करना असम्भव है।

- **तस्मिन हिररायये कोशे त्र यरे त्रिप्रतिष्ठते।**
  तस्मिन यद यक्षमात्मन्वत तद वै ब्रह्मविदो विदु:
  (अथर्वेद १०:२:३२)

अर्थातः प्रार्थना के लायक उस ईश्वर के घर में तीन स्तंभ (Column) और तीन बीम (Beam) हैं और यह घर अमर जीवन का केंद्र है। ईश्वर की प्रार्थना करने वाले इस बात को जानते हैं।

Inside view of Kaaba

ऊपर का चित्र काबा शरीफ़ के अंदर का है। इस में आप तीन स्तंभ और तीन बीम (Beam) देख सकते हैं। (इंटरनेट पर भी यह चित्र खोजा और देखा जा सकता है।)

(www.youtube.com पर इस लिंक पर https://youtu.be/I-MimunZijM काबा शरीफ के अन्दर का दृश्य, इसमें तीन स्तंभ (Column) साफ नज़र आते है।)

- **प्रभ्राजमानां हरिरीं यशसा संपरीवृताम।**
  पुरं हिररायर्यी ब्रह्मा विवेशापराजिताम
  (अथर्वेद १०:२:३३)

अर्थात ब्रह्मा (हज़रत इब्राहीम (अ.) इस जगह रहे। यहाँ ईश्वर की दिव्य ज्योति (नूर) का प्रकाश फैला हुआ है। यहाँ की प्रार्थना लागों को अमर बना देती है।

धरती का केन्द्र

- **इलायास्तवा वयं नाभा पृथिव्या आधि।**
  (ऋग्वेद ३-२९-४)

ऋग्वेद में कहा गया है कि, ईश्वर का घर धरती के नाभ (केन्द्र) पर है। इसलिए हम इस बात का पता करते है कि धरती का केन्द्र कहां है और इस समय उस केन्द्र पर क्या है।

Equator o° Latitude है। यानी Horizontal Plane या Direction में यह पृथ्वी के मध्य में है। मगर धरती की वह जगह जहाँ मनुष्य बसते हैं वह Equator से 80° Latitude उत्तर और 40° दक्षिण के बीच में हैं। यानी Equator धरती के मध्य से तो गुजरता है। मगर धरती की वह जगह जहाँ इन्सान बसते है उस के मध्य से नही गुज़रता है। अगर हमें बसी हुई धरती के मध्य स्थान से गुज़रना है, जहाँ इन्सान बसते है, तो हमें अंदाज से 20° Latitude उत्तर की तरफ हटना होगा।

इसी तरह o° Longitude ग्रीन वीच (एक शहर) से गुज़रता है। मगर यहाँ भी इन्सानों द्वारा बसी हुई धरती के Vertical direction में मध्य से नही गुज़रता। अगर हमें Vertical direction में इन्सानों से बसी हुई धरती के मध्य से गुजरना है तो अंदाज से 40° पूरब की तरफ हटना होगा।

यानी वह धरती जिस पर इन्सान बसते है उस का केन्द्र अंदाज से 20° Latitude and 40° Longitude पर है। अब हम अगर धरती के नक्शे में इस जगह पर कौन सा शहर बसा है इस की तलाश करें तो इस मकाम पर हम मक्का शहर को पाते है।

मक्का शहर 21°Latitude and 39° Longitude पर है।

ऋग्वेद में है कि धरती के केन्द्र पर ईश्वर का घर है। तो मक्का शहर ही धरती के केन्द्र पर है, और काबा शरीफ ही ईश्वर का घर है।

ऋग्वेद में यह भी लिखा है-
'हे ईश्वर कि प्रार्थना करनेवाले लोगों! दूर देशो में समुद्र किनारे द्वारकाबन है जिसका निर्माण किसी मनुष्य ने नहीं किया। वहाँ प्रार्थना करके ईश्वर के आशीर्वाद से स्वर्ग में दाखील हो जाओ। (ऋग्वेद १०-१५५-३)
(इस श्लोक में 'काबा' को दारूकाबन कहा गया है। और काबा शहर समुद्र किनारे से लगभग ४० कि. मी. की दूरी पर है।)

तो अगर हम स्वर्ग में जाना चाहते है, तो ईश्वर के इस शहर और घर जाकर जरूर प्रार्थना करनी चाहिए।

इन्जील में काबा शरीफ का वर्णन

ईश्वर एक है। जो भी धार्मिक ग्रंथ उसने अवतारित किए उन में एक समान सत्कर्म के आदेश दिए। इन्जील भी ईश्वर ने अवतारीत किया है। ईश्वर ने अपने घर काबा में प्रार्थना करने का सभी मानवजाति को आदेश दिया था। इसलिए इन्जील में भी काबा शरीफ का वर्णन हमें मिलता हैं।

मक्का शहर का जिस प्रकार हिन्दू धर्म के ग्रंथों में सात नाम हैं। इसी प्रकार अन्य धर्मों के ग्रंथों में भी अनेक नाम हैं। पवित्र क़ुरआन में इस के छह नाम इस प्रकार हैं-

मक्का, बक्का, अल-बलद, अल-अमीन, उम्मुल क़ुरा, करया।

बाइबल में मक्का को बक्का के नाम से इस प्रकार याद किया है-

हे ईश्वर तेरा घर कितना सुंदर है

मेरी आत्मा तड़पती है तेरा घर देखने के लिए

हे महान और सारे ब्रम्हांड के पालनहार, वह सौभागी है

जिनको तेरा घर देखने का अवसर मिलता है।

वह तेरी बहुत प्रार्थना करते हैं।

वह सौभागी है जिनका तुझपर विश्वास है।

जब वह बक्का से गुज़रते हैं

तो उस झरने (जमजम) के पास ठहरते हैं।

जिसे बरसात का पानी (तेरी कृपा) भर देती है।

हे ईश्वर तेरे घर का एक दिन दूसरी जगहों से हजार दिन के बराबर है।

हे महान ईश्वर उनका सौभाग्य है जिनकी श्रद्धा तुझ में है। (Pslam 84:1-12)

यह श्लोक Prophet David (हज़रत दाऊद) की प्रार्थना के बोल है जो उन्होंने Palestine पर विजय से पहले मक्का जाकर कहे थे।

एक गलत विश्वास

'क्या मुसलमान काबा शरीफ को पूजते हैं'?

'नहीं,! मुसलमान काबा शरीफ को नहीं पूजते।

काबा शरीफ एक पवित्र घर या मस्जिद की तरह है। जिसे 'काबातुल्लाह' यानी 'ईश्वर का घर' कहते हैं। आज भी मुस्लिम धर्म के अनुयायी काबा शरीफ के अंदर नमाज़ पढ़ते हैं। यह अंदर से बिल्कुल खाली है, इस के अंदर कुछ भी नहीं है। यह अंदर से एक मस्जिद की तरह है। इस के अंदर का भाग आप www.youtube.com पर देख सकते है।

इसकी छत पर चढ़ कर हज़रत बिलाल (अ.) ने अज़ान दिया था। और आज भी लोग इस की छत पर गिलाफ (Black cloth covering of holy kaaba) चढ़ाने के लिए चढ़ते है। मुसलमान अगर काबा शरीफ को ईश्वर मानते तो इस की छत पर खड़े रहकर कोई अज़ान क्यों देगा? इस से साबित होता है कि मुसलमान काबा शरीफ की पूजा नहीं करते, बल्कि एक अत्यंत पवित्र स्थान की तरह आदर करते है। इस की सिर्फ परिक्रमा की जाती है जिसे 'तवाफ' कहते हैं। क्योंकि इस के उपर ईश्वर की रहमत (Blessing/आशीर्वाद) उतरती है और चारों तरफ फेलती है। पहले नमाज काबा शरीफ के बजाए फिलिस्तीन के शहर 'येरूस्लम' की एक मस्जिद 'मस्जिद-ए-अक्सा' की तरफ मुँह करके पढ़ी जाती थी। लगभग 624 A.D. के बाद से पवित्र कुरआन के आदेशानुसार नमाज़ 'काबा शरीफ' की तरफ मुंह करके पढ़ी जाने लगी। (पवित्र कुरआन २:१४४)

पहली बार काबा शरीफ को फरिश्तों ने बनाया था। उसके बाद हज़रत नूह (मनु) के काल में बाढ में यह गिर गया था। फिर हज़रत इब्राहीम (अ.) ने (अथर्ववेद में जिसे ब्रम्हा कहा गया है) उसे फिर से बनाया था। उसके बाद कई बार इसकी मरम्मत (Repairing) की गई। यदि भविष्य में किसी भूकंप में यह गिर भी जाता है तो इसके गिरने से इस्लाम धर्म खत्म नहीं होगा। क्योंकी ईश्वर हमेशा था, है, और रहेगा। और मुसलमान सिर्फ एक ही निराकार ईश्वर की पूजा करते हैं, और उसके द्वारा भेजी गयी इश-वाणी जो कुरआन के रूप में संग्रहीत है उसका अनुकरण करते हैं।
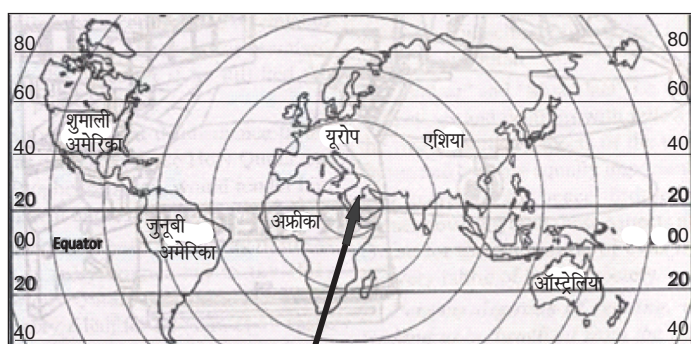
मक्का (धरती का केंद्र)

८. अंतिम ऋषि कौन हैं?

- अथर्ववेद का एक श्लोक इस प्रकार है-

तद् वा **अथर्वण:** शिरो देवकोशः समुब्जितः।
तत् प्राणे अभि रक्षति शिरो अन्नमथो मनः ।।२७।।
(अथर्ववेद १०:२:२७)

यह पुरूषमेधा के श्लोको में से एक हैं। इस श्लोक का अर्थ है, जहाँ अथर्वा का सर रखा गया है, वहाँ ईश्वर का स्थान है। जो चारों तरफ से सुरक्षित है। इस जगह की ईश्वर, फरिश्ते, अर्थवा और ब्रम्हा (इब्राहीम) रक्षा करते है।

इस श्लोक में स्थान मक्का है। जिसे अथर्वा कहा गया है वह हजरत इस्माईल हैं। और हजरत मुहम्मद अर्थवा (हज़रत इस्माईल) के ६१ वें वंशज हैं। आप ही अंतिम ऋषी हैं। पवित्र कुरआन में ईश्वर ने आप को 'खातेमुन नबी' कहा है (पवित्र कुरआन ३३:४०), जिस का अर्थ है 'आखरी नबी'।

यही बात ऋग्वेद (१-१६३-१) में लिखी है। इस श्लोक में आप को 'समुद्रादुत अरबन' कहा गया है। यह शब्द इस तरह बना है।स+मुद्र+दूत+अरब+न नालंदा विशाल शब्द सागर (Dictionary) के अनुसार (स) का अर्थ है साथ (Along with) (मुद्रा) का अर्थ है मुहर (Seal), दूत का अर्थ है पैगम्बर, अरब का अर्थ है अरब देश। (न) यह संस्कृत भाषा में शब्द के अंत में लगाने का रिवाज है। इस तरह 'समुद्रादूत अरबन' का अर्थ हुआ मुहर के साथ अरब वाला पैगम्बर। मुहर लगाने का अर्थ Seal करना या बंद कर देना। इस तरह यह अरब वाला दूत, पैगम्बरों के धरती पर अवतरीत होने की प्रक्रीया को Seal करने वाला, बंद करने वाला है। इस दूत के बाद अब कोई और दूत नहीं आएगा। अर्थात यही अंतिम ऋषी है।
(अब भी ना जागो तो पेज नं-१३३)

- हिन्दू धर्म के ग्रन्थों में आप की तीन प्रकार से वर्णन या भविष्यवाणी है।

१. **पहला प्रकार-** पहले प्रकार में आपके स्पष्ट नाम के साथ वर्णन या भविष्यवाणी है।

ऐसा वर्णन या भविष्यवाणी भविष्य पुराण, संग्राम पुराण, श्रीमद भागवत पुराण और अल्लोपनिषद में है।

२. **दूसरा प्रकार-** दूसरे प्रकार में आपकी भविष्यवाणी मिलते जुलते नाम से कि गई है। जैसे मामहे ऋषी, अहमद (अहमिद्धि और वेदाहमेत) इत्यादि। आप का ऐसा वर्णन या भविष्यवाणी ऋग्वेद, यजुर्वेद और सामवेद में है।

३. **तीसरा प्रकार :-** तीसरे प्रकार में न आप का स्पष्ट नाम है और ना मिलता-जुलता नाम है। बल्कि इस प्रकार में आप की नराशंस और कल्कि अवतार के नाम से भविष्यवाणी है। ऐसी भविष्यवाणी ऋग्वेद, अथर्ववेद और कल्कि पुराण में है।

डॉ. वेद प्रकाश उपाध्याय और डॉ. एम.ए. श्रीवास्तव ने अपनी अपनी पुस्तको में यह सिद्ध किया है की यह दोनों भविष्यवाणियां केवल हजरत मुहम्मद पर शत प्रतिशत सच प्रमाणीत होती है।

- अब हम विस्तार से अंतिम ऋषि हजरत मुहम्मद (स.) का वर्णन या भविष्यवाणी का अध्ययन करते है।

प्रकार १.

१) भविष्यपुराण में स्पष्ट नाम से भविष्यवाणी

एतस्मिन्नन्तिरे म्लेच्छ आचार्य्यरा समन्वितः।
महामद इति रव्यातः इति रव्यातः शिष्यशाखासमन्वितः।।५।।
नृपश्रेव महादेव मरूस्थलनिवासिनम्।

गड्डजलैश्च संस्नाप्य पश्रगव्यसमनिवतैः।
चंदनादिभिरभ्वर्च्य तुष्टाव मनसा हरम् ।।६।।

उसी बीच अपने शिष्यों के साथ मोहम्मद नाम के पवित्र म्लेच्छ वहाँ आऐंगे। राजा भोज उन से कहेगा, "हे रेगीस्तान में रहने वाले, शैतान को पराजीत करने वाले, चमत्कारी शक्तीयो के स्वामी, शत्रुवों से सुरक्षित, शुद्ध एवं सत्य चैतन्य एवं आनंद स्वरूप, मैं तुम्हें नमस्कार करता हूँ। तुम मुझे शरण में उपस्थित अपना दास समझो।

(भविष्य पुराण प्रतिसर्ग पर्व, तृतीय खण्ड एवं तृतीय अध्याय वेदों व पुराणों के आधार पर धार्मिक एकता की ज्योति, लेखक-डा.वेद प्रकाश उपाध्याय)

२) संग्राम पुराण में स्पष्ट नाम से भविष्यवाणी

- पंडित धरमवीर ने एक प्रसिद्ध पुस्तक 'अन्तिम ईश दूत' लिखा था, जो १६३२ में 'नैशनल प्रिंटिंग प्रेस', दरियागंज, नई दिल्ली से प्रकाशित हुई थी। अपनी इस पुस्तक में उन्होंने लिखा है कि काग-बुसंडी और गरुड़, श्री राम के साथ काफी समय तक रहे, और न वह केवल उनकी शिक्षाओं का पालन करते थे बल्कि वह श्री राम की इन शिक्षाओं को आम लोगों तक पहुँचाते भी थे। तुलसी दास जी ने उन्हीं शिक्षाओं का अपने संग्राम पुराण के अनुवाद में उल्लेख किया है। उन्होंने लिखा है कि शंकर जी ने अपने पुत्र से भविष्य के धर्म के बारे में इन शब्दों में बतायाः

यहां न पक्षपात कछु राखहुं
वेद पुराण, संत मत भाखहुं
बिना किसी भेदभाव के में संतों, वेदों और पुराणों की शिक्षाएं बता रहा हूँ।

सवंत विक्रम दोऊ अनङा।
महाकोक नस चतुर्पतङा
वह सातवी शताब्दी संवत में जन्म लेगा और उसके साथ चार चमकते सितारे होंगे।

राजनीति भव प्रीती दिखावै
आपन मत सबका समझावै
वह तर्क (बुद्धि और प्रेम) के साथ शासन करेगा और अपनी शिक्षाओं से लोगों को सहमत (Convince) करेगा।

सुरन चतुसुदर सतचारी।
तिनको वंश भयो अति भारी
उसके चार खलीफा होंगे जिनके द्वारा उसके अनुयायी बहुत बढ़ेंगे।

तब तक सुन्दर मद्दिकोया।
बिना <u>महामद</u> पार न होया।
तबसे मानहु जन्तु भिखारी।
समस्थ नात एहि व्रतधारी।
जब तक ईश्वरीय पुस्तक पृथ्वी पर है, बिना महामद का अनुसरण किए कोई सफल न होगा। आम लोग, भिखारी और जीव-जंतु महामद का नाम लेने से ईश्वर को मानने वाले बनेंगे।

हर सुन्दर निर्माण न होई
तुलसी वचन सत्य सच होई
तुलसी दास सत्य कहते हैं कि उसके (मुहम्मद (स.)) बाद उस जैसा महान व्यक्ति फिर कभी जन्म नहीं लेगा।
(संग्राम पुराण, स्कन्द १२, कांड ६, पद्यानुवाद, गोस्वामी तुलसीदास (संदर्भ स्त्रोतः हजरत मुहम्मद (स.) और भारतीय धर्मग्रन्थ, डा.एम.ए.श्रीवास्तव))

३) श्रीमद भगवद पुराण में स्पष्ट नाम से भविष्यवाणी

अज्ञान हेतु कृत मोहदान्धकार नांश विधांय हित दो दयेत विवेक। (श्रीमद भगवत पुराण २:७२)

भावार्थ- हजरत मुहम्मद (स.) के द्वारा अन्धकार का नाश होगा और ज्ञान और विवेक का प्रकाश उदय होगा।

('विवेक' means ability to recognize right and wrong)

४) अल्लोपनिषद में स्पष्ट नाम से भविष्यवाणी:-

नागेन्द्रनाथ बसू द्वारा संपादित विश्वकोष के द्वितीय खण्ड में उपनिषदों के वे श्लोक दिए गए हैं जिस में इस्लाम और पैगम्बर का उल्लेख है। इन में से कुछ प्रमुख श्लोक और उनके अर्थ इस प्रकार हैं:

अथर्ववेद के कई उपनिषद हैं, जिन में एक का नाम अल्लोपनिषद है। इस में दस श्लोक ऐसे है जिस में स्पष्ट रूप से ईश्वर को अल्लाह कहा गया है और हजरत मुहम्मद को अल्लाह का रसूल कहा गया है। वह दस श्लोक निम्नलिखीत हैं-

अस्माल्लां इल्ले मित्रावरूणा दिव्यानि धत्त।
इल्लल्ले वरूणा राजा पुन्दुर्द:।
हयामित्रो इल्लां इल्लल्ले इल्लां वरूणो
मित्रस्तेजस्काम: ।।१।।
होतारमिन्द्रो होतारमिन्द्र महासुरिन्द्रा:।
अल्लो ज्येष्ठं श्रेष्ठं परमं पूर्ण ब्रह्माणं अल्लाम् ।२।
अल्लो रसूल महामद रकबरस्य अल्लो अल्लाम् ।।३।।
(अल्लोपनिषद १,२,३)

अर्थात, "इस देवता का नाम अल्लाह है। वह एक है। मित्र और वरूण आदि उसकी विशेषताएँ हैं। वास्तव में अल्लाह वरूण है जो तमाम सृष्टि का बादशाह है। मित्रो! उस अल्लाह को अपना पूज्य समजो। वह वरूण है और एक दोस्त की तरह वह तमाम लोगों के काम सँवारता है। अल्लाह सबसे बड़ा, सबसे बेहतर, और अल्लाह ही ब्रह्मा है। मुहम्मद (स.) अल्लाह के श्रेष्ठतर रसुल हैं।"

(संदर्भ स्त्रोत :- हजरत मोहम्मद और भारतीय धर्मग्रंथ, लेखक-डॉ.एम.ए.श्रीवास्तव)

आदल्ला बूक मेककम
अल्लबूक निखादम ।।४।।
इस श्लोक का अनुवाद नहीं हो सका।

अला यज्ञन हुत हुत्वा अल्ला
सुर्य चंद्र सर्व नक्षत्रा ।।५।।
अल्लाह की युगों युगों से पूजा हो रही है, सूरज, चाँद और तारे सब अल्लाह की रचना है।

अल्लो ऋशीणां सर्व दिव्यां
इन्द्रायपूर्व माया परमन्तरिक्षा ।।६।।
अल्लाह संतों का रक्षक है, वह सबसे महान है, अल्लाह सब वस्तुओं से पहले है और सारे ब्रह्माण्ड से अधिक विलक्षण है।

अल्ल: पृथिव्या अन्तरिक्ष्ज्ञं विष्वरूपम् ।।७।।
अल्लाह का (उसकी शक्तिओं का) दर्शन पृथ्वी, आकाश और सौर्य मंडल की सभी वस्तुओं को होता है।

इल्लांकबर इल्लांकबर इल्लां
इल्लल्लेति इल्लल्ला ।।८।।
अल्लाह सबसे बड़ा है, अल्लाह सबसे बड़ा है, उस जैसा कोई नहीं।

ओम अल्ला इल्लल्ला अनदि
दे स्वरूपाय अथर्वण ष्यामा
ऊँ अर्थात अल्लाह। हम उसका आरंभ और उसका अंत नहीं पता कर सकते। सारी बुराइयों से रक्षा करने के लिए हम ऐसे अल्लाह से प्रार्थना करते हैं।

हुह्री जनान पषून सिध्दान
जलवरान् अदृष्टं कुरू कुरू फट
ऐ अल्लाह! बुरे, गुनाहगार, और लागों को गुमराह करने वाले धार्मिक लोगों(पुरोहितों) का नाश कर, और पानी से नुकसान पहुँचाने वाले कीटाणुओं (Virus & Bacteria) से हमारी रक्षा कर।

असुरसंहारिणी हुं ह्रीं अल्लो
रसुल महमदरकबरस्य अल्लो
अल्लाह दानव शक्ति का नाश करने वाला है, मुहम्मद (स), अल्लाह के पैगंबर हैं।

अल्लाम इल्लल्लेति इल्लल्ला
अल्लाह तो अल्लाह ही है, उस जैसा कोई नहीं।

(अल्लोपनिषद ४-१० हजरत मोहम्मद और भारतीय धर्मग्रन्थ डा.एम.ए.श्रीवास्तव)

गीता प्रेस, गोरखपुर से प्रकाशित 'कल्याण' पत्रिका के विषेशांक 'उपनिषद् अंक' में २२० उपनिषदों का वर्णन है। इन २२० उपनिषदों में अल्लोपनिषद को १५ वे स्थान पर रखा गया है। डॉ. वेद प्रकाश

उपाध्याय ने भी अल्लोपनिषद का वर्णन अपनी पुस्तक 'वैदिक साहित्य-एक विवेचना' में किया है, जो प्रदीप प्रकाशन से १६८६ में प्रकाशित हुआ है।

प्रकार २ :

दूसरे प्रकार की भविष्यवाणी या वर्णन में अंतिम ऋषी हजरत मुहम्मद (स.) का मिलता जुलता नाम है। इस प्रकार की कुछ भविष्यवाणियां निम्नलिखित है।

१) अथर्ववेद में मामहे ऋषी नाम से भविष्यवाणी :

एष ऋषये **मामहे** शतं निष्कानू दश स्त्रजः।
त्रीरा शतान्यर्वतां सहस्त्रा दष गोनामू।।

(अथर्ववेद २०.१२७.३)

भावार्थः- वह मामेह ऋषी है। ईश्वर जिन्हें दस गले के हार, तीन सौ घोडे, सौ सोने के सिक्के और दस हजार गाय देगा। (इस श्लोक की व्याख्या हम आगे पढ़ेंगे।)

२) अथर्ववेद में आप की अयमिदू (अहमद) नाम से भी भविष्यवाणी है।

अयमिदू वै प्रतीवर्त ओजस्वानू संजयो मणिः।
प्रजां धनं च रक्षतु परिपाणः सुमंड्ढ.ल।।

(ऋग्वेद ८.५.१६)

अहमद वह है जो लौटते है तो तेजवान शक्तिशाली हीरा सिद्ध होते है। प्रजा एव धन की रक्षा हर पहलू से करते है, तथा अतिउत्तम मोक्षदाता सिद्ध होते है। (अथर्ववेद ८-५-१६)

इसी तरह अथर्ववेद (२०-१२६-१४) में उताहमर्दाम नाम से आप की भविष्यवाणी है।

३) ऋग्वेद में अहमद नाम से भविष्यवाणी:

अहमिध्दि पितुष्परि मेधामृतस्य जग्रभ।
अहं सूर्य इवाजानि (ऋग्वेद ८.६.११)

मैंने ही रक्षक और प्रकृति के नियम को चलाने वाले परमेश्वर से तत्वदर्शिता प्राप्त की है। मैं सूर्य के समान प्रकाशित हुआ हूँ।

नोट- अहमद का अर्थ प्रशसंक या अभिमानकक्षक।

(भविष्य पुराण प्रतिसर्ग पर्व, चतुर्थ अध्याय, कलिकृतविष्णु स्तुतिः)(वेदों और पुराणों के आधार पर एकता की ज्योति पेज नं.२२)

४) यजुर्वेद में वेदाहमेत नाम से भविष्यवाणी :

वेदाहमेत पुरूष महान्ततादित्यवर्ण तमसः प्रस्तात..
..................................यनाय।

वह समस्त विद्याओं का स्त्रोत अहमद महानतम व्यक्तित्व है। यह सूर्य के समान अंधेरो को दूर भगाने वाले है। इस चमकते सूर्य को जान लेने के पश्चात ही मृत्यु पर विजय प्राप्त की जा सकती है। मुक्ति का अन्य कोई मार्ग नहीं है। (यजुर्वेद ८-६,६,१०)(स ं द र्भ स्त्रोतः अब भी ना जागो तो....पेज नं.६१)

ईश्वर ने कुछ महत्वपूर्ण कारणों से हजरत मुहम्मद (स.) की भविष्यवाणी बाईबल वेदों और विश्व के अन्य धर्म के ग्रन्थों में अहमद नाम से की है। इसका कारण और रहस्य आप मेरी पुस्तक 'अग्नि का रहस्य' में सकते हैं । हजरत इसा (अ.) ने भी आप की भविष्यवाणी अहमद नाम से ही की थी। (पवित्र कुरआन ६१:६)

प्रकार ३ :

● तीसरे प्रकार की भविष्यवाणी में हजरत मुहम्मद (स.) को नराशंस और कल्कि अवतार के नाम से याद किया है। डा.वेद प्रकाश उपाध्याय ने दो पुस्तकें लिखी है जिनके नाम हैं; 'कल्कि अवतार और मुहम्मद (स.)' और 'नराशंस और अन्तिम ऋषी'। डॉ. एम.ए.श्रीवास्तव ने एक पुस्तक लिखी है जिस का नाम है-'हजरत मुहम्मद और भारतीय धर्मग्रंथ'। इन दोनो ने सिद्ध किया है कि ग्रन्थों में जिसे कल्कि अवतार और नराशंस कहा गया है वह हजरत मुहम्मद (स.) ही है।

इन दोनों पुस्तकों में बहुत विस्तार से लिख गया है इसलिए हम भी इन का वर्णन अगले दो अध्यायों में करेंगे।

६. पवित्र नराशंस कौन हैं?

● नराशंस के बारे में सभी चारों वेदों में भविष्यवाणी है। लेकिन पिछले चार हज़ार वर्ष से नराशंस एक रहस्य थे। बीसवीं शताब्दी तक कोई विश्वास के साथ उनके व्यक्तित्व के बारे में नहीं कह सकता था। २० वीं शताब्दी में जब साहित्य और ज्ञान अन्य धर्मों के बारे में आसानी से उपलब्ध होने लगे और जब संस्कृत के विद्वानों ने अन्य धर्मों के साहित्य का अध्ययन किया। केवल तभी वे सबसे अधिक सम्मानित धार्मिक व्यक्तित्व की पहचान की पहेली को सुलझा सके।

जिन विद्वानों ने यह शोध कार्य किया वे है, डॉ. वेद प्रकाश उपाध्याय, (भूतपूर्व विभागाध्यक्ष, संस्कृत विभाग, पंजाब विश्वविद्यालय चंदीगढ), डॉ. एम. ए. श्रीवास्तव, पंडित धर्म वीर उपाध्याय आदि।

● पवित्र वेदों ने नराशंस के बारे में बहुत-सी बातों की भविष्यवाणी की है, उनमें से कुछ इस प्रकार हैः

१. पवित्र वेदों का कहना है कि वह मधुर भाषी होगा या उसका भाषण सम्मोहित करने वाला होगा (His talk will be extremely sweet and mesmerizing)

नराशंसः मिहप्रियम स्मिन्यज्ञ उप ह्ये। मधुजिहं हविष्कृतम् । (ऋग्वेद संहिता १.१३.३)

२. पवित्र वेदों में उल्लेख है कि नराशंस को भविष्य का पूर्वानुमान करेगा।

नराशंसः सुदूषूदतीमं यज्ञमदाम्यः। कविर्हि मधुहस्त्यः। (ऋग्वेद संहिता ५/५/२)

३. पवित्र वेदों का कहना है कि नराशंस अत्यंत सुंदर व्यक्तित्व वाला होगा।

नराशंसः प्रति धामान्यञ्जन तिस्त्रो दिवः प्रति मह्ना स्वर्चिः। (ऋग्वेद संहिता २/३/२)

४. पवित्र वेदों का कहना है कि नराशंस इंसानों के पापों को धो देगा।

नराशंसः वाजिनं वायजयन्निह क्षयद्वीरं पूषणं सुम्नैरीमहे।
रथं न दुर्गाद् वसवः सुदानवो विश्वास्मान्नो अहंसो निष्पिपर्तन।। (ऋग्वेद १/१०६/४)

५. पवित्र वेदों में उल्लेख है कि पवित्र नराशंस ऊंट की सवारी करेगा। उसकी १२ पत्नियां होंगी।

उष्ट्रा यस्य प्रवाहिणो वधूमन्तो द्विर्दश।
वर्ष्मा रथस्य नि जिहीडते दिव ईषमाण उपस्पृशः। (अथर्वेद, कुन्ताप सुक्त : २०/१२७/२)

६. पवित्र वेदों का कहना है कि पवित्र नराशंस की लोग (जनता) हर युग में प्रशंसा करेंगे।

इदं जना उप श्रुत नराषंसः स्तविष्यते। (अथर्वेद, हिंदी भाष्य १४०१)

७. पवित्र वेदों में भविष्यवाणी की गई है कि ईश्वर पवित्र नराशंस को निम्नलिखित चीज़ें देगाः

(१) १० फूल-मालाएँ (२) १०० सोने के सिक्के
(३) ३०० घोड़े और (४) १०,००० गाएं
एश इशाय मामहे शतं निष्कान् दश स्रजः।
त्रीणि शतान्यर्वतां सहस्रादश गोनाम्।। (अथर्ववेद २०:१२७:३)

८. पवित्र वेदों का कहना है कि ईश्वर पवित्र नराशंस को ६०,०६० शत्रुओं से बचाएगा।

अनस्वन्ता सतपतिर्मामहे मे गावा चेतिष्ठो असुरो मघानः। त्रैवृष्णों अग्ने दशभिः सहस्रैर्वैश्वानरः त्र्यरूणाश्चिकेत।। (ऋग्वेद म.५, सू.२७, मंत्र १)

● पिछले ४००० वर्षों से उपर दी गई जानकारी के आधारपर विद्वान नराशंस को पहचानने में असफल थें।

वर्तमान समय में जब विद्वानों ने अन्य धर्मों का अध्ययन किया तब उन्हें मालूम हुआ कि इस्लाम के हज़रत मुहम्मद (स.) ही वे पवित्र नराशंस हैं, जिनकी ४००० वर्ष पूर्व वेदों में भविष्यवाणी की गई थी।

● पवित्र वेदों में पवित्र नराशंस के बारे में की गई भविष्यवाणी हज़रत मुहम्मद (स.) से इस प्रकार मेल खाती हैः

'नराशंस' दो शब्दों का मिश्रण है, 'नर' और 'आशंस'। 'नर' का अर्थ है 'मनुष्य' और 'आशंस' का अर्थ है 'जिसकी प्रशंसा की जाए'। महान विद्वान सायण जिसने वेदों की व्याख्या की, कहते है 'नराशंस' का मतलब है जिसकी इंसान प्रशंसा करें। संस्कृत में इसे ऐसे कहेंगेः

नराशंसः यो नरैः प्रयशस्यते।

(सायण भाष्य, ऋग्वेद संहिता ५/५/२)

श्री दयानंद सरस्वती भी इसी अर्थ को सही मानते हैं।

(ऋग्वेद, हिन्दी भाषा, पेज २५, आर्य समाज द्वारा प्रकाशित)

● डॉ. वेद प्रकाश उपाध्याय कहते हैं, 'नर' शब्द का प्रयोग केवल मनुष्य के लिए किया जाता रहा है। इसे कभी भी देवताओं के लिए प्रयोग नहीं किया गया। इसलिए पवित्र नराशंस को देवता नहीं माना जा सकता। अतः पवित्र नराशंस, मनुष्य ही है।

अरबी भाषा में 'हम्द' का अर्थ है 'प्रशंसा', तथा 'मुहम्मद' का अर्थ है 'जिसकी प्रशंसा की जाए'। अतः अरबी भाषा में मुहम्मद का अर्थ वही होता है जो संस्कृत में नराशंस का अर्थ होता है।

पवित्र नराशंस के बारे में भविष्यवाणीयों का विश्लेषण

१. वेदों की प्रथम भविष्यवाणी कहती है कि 'पवित्र नराशंस' मधुर (Sweet) भाषी होगा, या उनकी बात मृदुल होगी।

इतिहासकार कहते है कि हज़रत मुहम्मद (स.) की बातचीत की शैली बहुत कोमल और मधुर थी। और अधिक जानकारी के लिए निम्नलिखित पुस्तकों का अध्यन करें।

a) "Life of Muhammad." By Sir William Muir. (Published by: Smith Elder and Co. London)
b) "Introduction to the speeches of Muhammad." By Lane Poole (Published by: MacMillan & co. London)

● दिव्य कुरान भी इसी तथ्य की पुष्टि निम्नलिखित आयत में करता है।

''(तुमने तो अपनी दयालुता से उन्हें क्षमा कर दिया) तो अल्लाह की ओर से ही बडी दयालुता है जिसके कारण तुम उनके लिए नर्म रहे हो, यदि कहीं तुम स्वभाव के क्रूर और कठोर हृदय होते तो यह सब तुम्हारे पास से छंट जाते।''

(पवित्र कुरान ३:१५६)

२. पवित्र वेदों में दूसरा उल्लेख है कि पवित्र नराशंस भविष्यवाणी करेगा।

पैगंबर होने की वजह से ईशदूत जिब्रील (अ.) समय-समय पर हज़रत मुहम्मद (स.) के पास आते थे। दिव्य कुरान के सीधे अवतरण के द्वारा या ईशदूत जिब्रील (अ.) के द्वारा हज़रत मुहम्मद (स.) को भविष्य के बारे में समय-समय पर जानकारी मिला करती थी, जिसे हज़रत मुहम्मद (स.) लोगों तक पहुँचा देते थे।

रोमन लोगों कि ईरानीयोंपर जीत की भविष्यवाणी, उनकी प्रसिद्ध भविष्यवाणियों में से एक है। ६१८ ईसवी में रोमनों ने अपने हार के बाद, ६२५ ईसवी में ईरानियों को फिर से नैनवा नामक स्थान पर हराया था। इस तरह हज़रत मुहम्मद (स.) की भविष्यवाणी सत्य साबित हुई। इसी तरह हदीस की पुस्तकों में हज़रत मुहम्मद (स.) की हज़ारों भविष्यवाणीयां हैं जो सच सिद्ध होती रही। उन सब को यहां लिखना सम्भव नहीं है।

३. पवित्र वेदों की तीसरी भविष्यवाणी है कि पवित्र

नराशंस का व्यक्तित्व अत्यन्त मोहक होगा।

यह एक ऐतिहासिक तथ्य है कि हज़रत मुहम्मद (स.) का व्यक्तित्व अत्यंत मोहक था। न केवल हज़रत मुहम्मद (स.) बल्कि सभी पैगंबर मोहक व्यक्तित्व के थे, प्रतिष्ठित परिवार से थे, सुचरित्र, धैर्यवान और दूर-दृष्टि वाले थे आदि। इसलिए ईश्वर को न मानने वाले लोग भी पैगंबर के बारे में व्यक्तिगत स्तर पर उन्हें बदनाम नहीं कर सकते थे। श्री कृष्ण और श्री राम के बारे में कहा जाता है के वे भी अत्यंत मोहक व्यक्तित्व वाले थे। श्री राम को 'आदर्श पुरुष' (अर्थात पुरूषोत्तम) भी माना जाता है।

४. पवित्र वेदों में चौथी भविष्यवाणी है कि पवित्र नराशंस मनुष्यों को उनके पापों से मुक्त कर देगा।

पैगंबरों का मूल कर्तव्य है कि इंसानों को पाप-मुक्त कर दे और ऐसा हज़रत मुहम्मद (स.) ने किया भी।

दिव्य कुरान में ईश्वर कहता है किः

''हे मुहम्मद! हमने तुम्हें सारे संसार के लिए सर्वथा दयालुता (Blessing for mankind) बना कर भेजा है।'' (पवित्र कुरान २१:१०७)
इसका अर्थ यह है कि उन्हें इसलिए भेजा गया है कि वह मानवजाति को मुक्ति प्राप्त करने में मद्द करें।

५. पवित्र वेदों में पाँचवी भविष्यवाणी है कि नराशंस की १२ पत्नियां होंगी।

यह उल्लेख केवल हज़रत मुहम्मद (स.) के लिए ही सही है, क्योंकि किसी भी धर्म के किसी धर्मगुरु की १२ पत्नियाँ नहीं थी। किसी धर्मगुरु की १२ से कम पत्निया थी तो किसी धर्मगुरू को १२ से ज्यादा भी पत्नियाँ थी। उदाहरणार्थ हज़रत इब्राहीम (अ.) की ३ पत्नियाँ थी। हज़रत सुलेमान (अ.) की १०० और श्री कृष्णजी की १६००० से अधिक पत्नियाँ थी। केवल हज़रत मुहम्मद (स.) की १२ पत्नियाँ थी। उनके नाम इस प्रकार हैं:

(१) हज़रत ख़दीजा (र.अ.), (२) हज़रत सौदा (र.अ.),
(३) हज़रत आयशा (र.अ.),(४) हज़रत हफ्सा (र.अ.),
(५) हज़रत उम्मे सलमा (र.अ.),
(६) हज़रत उम्मे हबीबा (र.अ.),
(७) हज़रत जैनब बिन्ते हजश (र.अ.),
(८) हज़रत जैनब बिन्ते खज़ीमा (र.अ.),
(९) हज़रत जुवैरिया (र.अ.),(१०) हज़रत सूफ़िया (र.अ.)
(११) हज़रत रेहाना(र.अ.) और
(१२) हज़रत मैमूना (र.अ.)
(संदर्भ स्त्रोत :-'मुहम्मद और भारतीय धर्मग्रंथ': लेखक एम. ए. श्रीवास्तव)

६. पवित्र वेदों में छठा उल्लेख है कि नराशंस ऊँट की सवारी करेंगे।

चूँकि हज़रत मुहम्मद (स.) मक्का/मदीना में रहते थे, जिसके चारों ओर रेगिस्तान है और जैसा कि ऊँट रेगिस्तान में यात्रा करने के लिए सर्वोत्तम साधन है। इसलिए हज़रत मुहम्मद (स.) ने भी उँटों की सवारी की।

ब्राह्मण को ऊँट की सवारी करने की अनुमति नहीं है। इसलिए इससे यह भी पता चलता है कि पवित्र नराशंस ब्राह्मण नहीं थे और न ही भारत वासी हैं। (राजस्थान प्राचीन काल में रेगीस्तान (Desert) नही था)।

७. पवित्र वेदों में सातवां उल्लेख है कि पवित्र नराशंस की लोग प्रशंसा करेंगे।

माइकल एच. हार्ट द्वारा लिखित पुस्तक "The most 100 influential persons in history." में लेखक ने हज़रत मुहम्मद (स.) को पहले स्थान पर रखा है। अर्थात ऐसा ऐतिहासिक व्यक्तित्व जिनसे दुनिया के सभी लोग सबसे अधिक प्रभावित हुए वे एकमेव व्यक्ति हज़रत मुहम्मद (स.) ही हैं।
अज़ान (मस्जिदों में नमाज़ को बुलाने के लिए दी जाने वाली पुकार), में मुसलमान, दिन भर में पाँच निर्धारित समय पर, सारी दुनिया में लाउड स्पीकर पर बुलंद आवाज़ में हज़रत मुहम्मद (स.) का नाम

लेते हैं।

जैसे एक स्थान से दूसरे स्थान पर समय धीरे-धीरे परिवर्तन होता है उसी प्रकार नमाज और अजान का समय भी बदलते रहता हैं, इस कारण हर मिनट और हर सेकेंड को विश्व में कही न कही अजान दी जाती हैं। और उनका (हज़रत मुहम्मद (स.)) नाम पुकारा जाता है। अतः मानव वंश में हज़रत मुहम्मद (स.) ही सर्वाधिक प्रशंसनीय व्यक्ति हैं।

८. पवित्र वेदों में भविष्यवाणी की गई है कि ईश्वर पवित्र नराशंस को निम्नलिखित चीजें देगाः

(अ) १० फूल. मालाएँ (ब) १०० सोने के सिक्के
(क) ३०० घोड़े और (ड) १०,००० गाएं

पिछले ४००० वर्ष से वेदों की यह भविष्यवाणी विद्वानों के लिए एक अनबूझ पहेली ही बनी रही। सब इसे समझ पाने में असमर्थ थे। हज़रत मुहम्मद (स.) पर ध्यान केंद्रित करने से इसका हल इस प्रकार से मिला :

अ) हज़रत मुहम्मद (स.) के पास १० समर्पित अनुयायी थे जिन्हें 'अशरए मुबश्शिरह' कहा जाता है। 'अशरा' का अरबी भाषा में अर्थ है १०, और 'मुबश्शिरह' का अर्थ है 'जिन्हे खुश खबरी दे दी गई' (स्वर्ग की)

इन दस भाग्यशाली लोगों के नाम इस प्रकार हैंः

(१) हज़रत अबू बक्र (र.), (२) हज़रत उमर (र.), (३) हज़रत उस्मान (र.), (४) हज़रत अली (र.), (५) हज़रत तल्हा (र.), (६) हज़रत साद बिन अबी वक्क़ास (र.), (७) हज़रत सईद बिन जैद (र.), (८) हज़रत अब्दुर रहमान बिन औफ (र.), (९) हज़रत अबू ओबैदा बिन जर्राह (र.), और (१०) हज़रत जुबैर(र.)

यह १० व्यक्ति हज़रत मुहम्मद (स.) के अत्यंत समर्पित अनुयायी थे और उनके लिए प्राण त्यागने के लिए उत्सुक रहते थे और हमेशा उनके पास रहने की कोशिश करते थे। इसलिए इनकी तुलना दस फूल-मालाओं से की गई हैं।

ब) हज़रत मुहम्मद (स.) के लगभग १०० अनुयायी ऐसे थे जिन्होंने अपना सब कुछ छोड़ दिया, अपना देश, अपना परिवार, अपना व्यापार आदि, और पैगंबर मुहम्मद (स.) की मस्जिद के निकट बसेरा किया। इन्हें 'असहाबे सुफ्फ़ह' कहा जाता है।

इन १०० लोगों ने इस्लाम की शिक्षाओं को सीखने और दूसरों को सिखाने के लिए अपना जीवन समर्पित कर दिया। चुँकि इस्लाम की शिक्षाओं को फ़ैलाने में यह लोग बहुत महत्वपूर्ण थे इसलिए इनकी 'सोने के सिक्कों' से तुलना की गई।

क) शुरू में मक्का के लोगों ने इस्लाम और मुसलमानों को व्यक्तिगत स्तर पर समाप्त करने का प्रयास किया। अतः हज़रत मुहम्मद (स.) मदीना नामक एक सुरक्षित स्थान को प्रवास कर गये, और वहां से ईश्वर का संदेश फैलाने की ज़िम्मेदारी को पूरा करते रहे। इस चरण में मुसलमानों और इस्लाम का विनाश करने के लिए मक्का के लगभग एक हजार सैनिकों ने मदीना पर आक्रमण कर दिया। स्वयं का बचाव करने के लिए हज़रत मुहम्मद (स.) और उनके ३१३ अनुयायियों ने १००० आक्रमणकारियों का मुकाबला किया और उन्हें परास्त कर दिया।(इस युद्ध में १४ अनुयायी मारे गए थे।) इन ३१३ लोगों के साहस और बहादुरी को देखते हुए इनकी घोड़ों से तुलना की गई है, जो कि साहस और बहादुरी का प्रतीक माना जाता है। इस लिए वेदों के उल्लेख में इनको ३०० घोड़े कहा गया है (यानी मिसाल दी गई है)।

ड)हज़रत मुहम्मद (स.) के मक्का से मदीना प्रवासन (Migration) के आठ वर्षों के बाद जब मक्का के लोगों ने हज़रत मुहम्मद (स.) के साथ की गई अपनी शांति-संधि को तोड़ा तो हज़रत मुहम्मद (स.) ने अपने १०,००० अनुयायियों को एकत्रित किया और मक्का की ओर कूच (प्रस्थान) किया। बिना किसी युद्ध या रक्तपात के, उन्होंने मक्का पर जीत प्राप्त कर लिया। चूंकि इन १०,००० अनुयायियों ने कभी भी किसी व्यक्ति को नुकसान नहीं पहुँचाया जैसा कि गायें किसी को नुकसान नहीं पहुँचाती है इसलिए वेदों में इनका गायों के रूप में उल्लेख किया गया है।

● पैगंबर सिर्फ धर्म के नियमों को केवल समझा सकता है, मगर वह इस्लाम की शिक्षाओं को समझने और उन पर नियमित रूप से अनुसरण करने के लिए बुद्धि नहीं दे सकता। परंतु ईश्वर ऐसा कर सकता है। इसलिए जो भी कर्म १० अशरए मुबश्शिरह, १०० असहाबे सुफ्फह, ३१३ रक्षकों और १०,००० अनुयायिओं ने किए, वह सब ईश्वर द्वारा दी गई समझ की ही देन है। इसलिए हम ऐसा कह सकते हैं कि ईश्वर ने उन्हें उपहार के रूप में हज़रत मुहम्मद (स.) या पवित्र नराशंस को दिया।

९. पवित्र वेदों में उल्लेख है कि ईश्वर पवित्र नराशंस को ६०,०६० शत्रुओं से बचाएगा।

जब मक्का के लोग इस्लाम के प्रसार को रोकने में असफल रहे, तो उन्होंने हज़रत मुहम्मद (स.) की हत्या करने की योजना बनाई। एक रात चालीस परिवारों से चालीस योद्धाओं ने हज़रत मुहम्मद (स.) के घर का घेराव किया ताकि सुबह के समय जब हज़रत मुहम्मद (स.) नमाज के लिए घर से बाहर निकलें तो वह सब एक साथ मिलकर उन की हत्या कर सकें।

उस रात, हज़रत मुहम्मद (स.) अपने घर से बाहर निकले लेकिन दुश्मन उन्हें नहीं देख सके। हज़रत मुहम्मद (स.), उनके बीच से होते हुए निकले और मदीना प्रवास कर गये।

उस समय मक्का की जनसंख्या लगभग ६०,००० के लगभग थी और वे सभी हज़रत मुहम्मद (स.) के शत्रु थे। यह एक चमत्कार ही था के हज़रत मुहम्मद (स.) अपने दुश्मनों के बीच से होते हुए सुरक्षित मदीना पहुँच गये। इसलिए ईश्वर ने यह कहा कि वह पवित्र नराशंस को ६०,०६० शत्रुओं से बचाएगा।

● ऊपर दिए गये (Facts & Figure) को देखते हुए, डॉ. वेद प्रकाश उपाध्याय, डॉ. एम. ए. श्रीवास्तव, पंडित धर्मवीर उपाध्याय और कई अन्य विद्वान इस बात से सहमत हैं कि पवित्र नराशंस और हज़रत मुहम्मद (स.) एक ही हैं।

● नराशंस, कल्कि अवतार और हज़रत मुहम्मद (स.) के बारे में और विस्तृत जानकारी के लिए कृपया निम्न पुस्तकों का अध्ययन करें:

1. Kalki Autar and Hazrat Muhammad (pbuh)
by Dr. Ved Prakash Upadhyay,
Publisher:-Jamhoor Book Depot,
DEOBAND.(U.P) Pin: 247554
2. Narashansa aur Antim Rishi,
by Dr. Ved Prakash Upadhyay
Publisher:-Jamhoor Book Depot,
DEOBAND. (U.P) Pin: 247554
3. Muhammad (s) aur Bhartiya Dharm Granth, by Dr. M.A. Shrivastav
Publisher:- Madhur Sandesh Sangam,
E-20, Abul Fazl Enclave, Jamia Nagar,
New Delhi-110025.
E-mail:
madhursandeshsangam@yahoo.com
4. Muhammad (pbuh) in World Scripture, by A. H. Vidyarthi
Publisher: Adam Publishers &
Distributors, 1542, Pataudi House, Darya Ganj, New Delhi-110002.
www.adambooks.com

▼▼▼▼▼▼▼

१०. कल्कि अवतार कब आएंगे?

कल्कि अवतार कौन हैं ?

● पवित्र पुराणों के अनुसार कुल २४ अवतार हैं उनमें गौतम बुद्ध २३ वें अवतार हैं। भगवत पुराण के अनुसार २४ वें अवतार का नाम कल्कि होगा।

● २३ वें अवतार गौतम बुद्ध ने अपने भक्त नंदा से कहा 'हे नंदा!, इस दुनिया में मैं पहला बुद्ध नहीं हूँ और न ही मैं आखरी हूँ। आने वाले समय में, इस दुनिया में एक और बुद्ध आएगा, जो सच्चाई और दानता सिखाएगा। शुद्ध और पवित्र शिक्षाएं देगा। उसका दिल निर्मल होगा। वह ज्ञानी होगा। वह लोगों का नेतृत्व करेगा और सभी लोग उससे मार्गदर्शन लेंगे। वह सत्य सिखाएगा। वह दुनिया को जीवन का सही रास्ता देगा, जो शुद्ध और पूर्ण होगा। हे नंदा, उसका नाम मैत्रेय होगा।'

(Gospel of Buddha by Carus, page 217)

अन्तिम अवतार किस युग में आएगा?

● Osborne द्वारा लिखित 'Encyclopedia of history' के अनुसारः धरती की आयु ४५५ करोड़ वर्ष है।

● हिन्दू धर्म के अनुसार काल को 4 युगों में बांटा गया है।

● पहला युग सत्युग है, इसे कृत युग भी कहते हैं। यह 17 लाख 28 हज़ार वर्ष लम्बा है।

● दूसरा युग त्रेता युग है, यह १२ लाख ९६ हज़ार वर्ष लम्बा है।

● तीसरा युग है द्वापर युग। यह ८ लाख ६४ हज़ार वर्ष लम्बा है।

● आखरी युग कलियुग है। यह ४ लाख ३६ हज़ार वर्ष लम्बा है।

● वर्तमान युग कलियुग है, और इसके लगभग ५१०० वर्ष बीत चुके हैं।

भागवत पुराण में लिखा है की,

● इत्थ कलौ गतप्राये जनेषु खर धर्मणि
धर्म त्राणाय सत्वेन भगवानवतरिष्यति

(भगवत पुराण १२:२:२७)

अर्थात- अंतिम अवतार जिनका नाम कल्कि अवतार है, कलियुग में जन्म लेंगे।

कल्कि अवतार किस वर्ष जन्म लेगा?

त्रिलोक सागर में लिखा है कि,

● पणछस्सयं वस्संपण मासजंद गमिय वीर णिवुइ दो
सगराजो सो कल्कि चतुणवतिय महिप सगमासं

(त्रिलोक सागर, पृष्ठ ३२)

जैन धर्म के 'त्रिलोक सागर ग्रन्थ' (लेखक नेमी चंद) के अनुसार महावीर स्वामी की मृत्यु के ६०५ वर्ष ५ महीने बाद राजा शक का जन्म हुआ और राजा शक की मृत्यु के ३९४ वर्ष और सात महीने बाद कल्कि अवतार ने जन्म लिया।

● उत्तर पुराण के अनुसार महावीर स्वामी के मृत्यु के १००० साल बाद कल्कि अवतार ने जन्म लिया.
(Gunbhadra-indian-Antiquary Vol x V.P. 143)

● महावीर स्वामी की मृत्यु की अनुमानित वर्ष ५७१ B.C. (ईसा पूर्व) है। इसलिए कल्कि अवतार के जन्म की अनुमानित तिथि ५७१ A.D (ईसवी) है।

(हज़रत मुहम्मद (स.) और भारतीय धर्मग्रन्थ पेज नं. ३८/३९)

कल्कि अवतार किस दिन जन्म लेंगे?

- द्वादश्यां शुक्ल पक्षरस्य माघवे माघवम
  जातो दट्टशुतुः पुत्रं पित्रौहृश्टमानसौ
  (कल्कि पुरान, २:१५)

कल्कि पुराण के अनुसार कल्कि अवतार का जन्म माधव महीने की १२ तारीख अर्थात पूर्णिमा से दो दिन पहले होगा।

कल्कि अवतार कहाँ जन्म लेंगें?

- शम्भले विष्णुयशसो गृहे प्रादुर्भविष्याम्यहम्।
  (कल्कि पुराण, २:४)

कल्कि अवतार का जन्म संभल ग्राम में होगा।

कल्कि अवतार का किस परिवार से संम्बन्ध होगा?

- शम्भल ग्राम मुख्यस्य ब्राह्मणस्य महात्मन
  भवने विष्णुयशसः कल्कि प्रादुर्भाविष्यति
  (कल्कि पुराण, १२:१८२)

कल्कि अवतार प्रमुख पुजारी के घर में पैदा होगा। उसके पिता का नाम विष्णुयश होगा।

- सुमत्या विष्णुयशसा गर्भधत्त वैष्णवम् ।
  (कल्कि पुराण २:४ एवं २:११)

कल्कि अवतार की माँ का नाम सुमति होगा।

कल्कि अवतार की विषेशताएं क्या होंगी?

- अश्वमाशुगमारूमह्य देव दत्तं जगगत्पति
  असिनासाधु दमनमष्टैश्वर्य गुणान्वित
  (भगवत पुराण, १२ अस्कंध, २:१६)

भागवत पुराण के अनुसार आठ गुणों से सजा कर ईश्वरदूतों ने उसे एक तेज रफ्तार घोड़ा और तलवार उसके हाथ में दी, ताकि वह दुनिया की रक्षा सभी उपद्रवी तत्वों से कर सके।

- भागवत पुराण के अनुसार कल्कि अवतार अंतिम अवतार होगा। (१:३:२४ भागवत पुराण)

- कल्कि पुराण के अनुसार परशुराम एक पहाड़ी पर कल्कि अवतार को ज्ञान देंगे।

- कल्कि पुराण के अनुसार कल्कि अवतार उत्तर दिशा की ओर जाएगा और फिर वापस आ जाएगा।

- कल्कि पुराण (२:५) के अनुसार कल्कि अवतार के चार साथी होंगे, जो शैतानों को काबू करने में कल्कि अवतार की मदद करेंगे।
  चतुर्भिभ्रातृभिर्देव करिष्यामि कलिक्षयम्।
  (कल्कि पुराण, २:५)

- कल्कि पुराण (२:७) कहते हैं कि कल्कि अवतार की ईशदुतों के व्दारा सहायता की जाएगी।

- भागवत पुराण में है कि, कल्कि अवतार अति उत्तम व्यक्तित्व का होगा।
  विचरन्नाशुना क्षोण्यां हयेनाप्रतिमद्युतिः
  नृपालिंगप्तछदो दस्युन् कोटिशोनिहनिष्यातिः
  (भगवत पुराण १२, अस्कंध २, १:२०)

- अथतेषां भाविष्यन्ति मनांसि विशदानिवै ।
  वसुदेवांगरागति पुण्यगंधा निलस्पृशाम ।
  (भगवत पुराण १२:२:२६)

भगवत पुराण में हैं कि, कल्कि अवतार का शरीर सुगन्धित होगा और उसके चारों ओर सुगंधित हवा हो जाएगी।

- अष्टा गुणाः पुरूषं दीप्यन्ति
  प्रज्ञा च कौल्यं च दमः श्रुत च
  पराक्रमश्च बहुभाषिता च
  दानं यथा शक्ति कृतज्ञता च ।।
  (भागवत पुराण १२:२)

भागवत पुराण में यह उल्लेख है कि कल्कि अवतार आठ निम्न लिखित गुणोंवाला होगाः ज्ञान (Knowledge), सम्मानित वंश (Honoured Family), आत्मसंयम (Self Control), दिव्य ज्ञान (Divine Knowledge), बहादुरी (Braveness), संयत भाषण (Balanced Speech), सबसे बड़े दानी (Extremely Charitable), और अत्यधिक आभारी (Great Obliged)।

● कल्कि अवतार वैदिक धर्म की स्थापना करेगा।

अब जब हमें कल्कि अवतार के बारे में बहुत सी जानकारियां हैं, तो आइये हम यह पता करें कि कल्कि अवतार कब आने वाले हैं या आ कर चले भी गए।

विश्लेषण :

● जब अमेरिका ने अफ़ग़ानिस्तान पर B-52 बम वर्षक विमानों से हमला किया था तो वे अमेरिका से उड़ान भरने के बाद और बम बरसाने के बाद अफ़ग़ानिस्तान की भूमि को बिना छुए वापस लौट गए थे। अमेरिका ने सफलतापूर्वक कई बार पाकिस्तान में तालिबान के ठिकानों पर उपग्रह-निर्देशित प्रक्षेपास्त्रों (Satellite guided missiles) के साथ हमला किया था।

तो हम एक ऐसे युग में हैं, जहाँ एक आदमी दुनिया के दूसरी किनारे (छोर) पर हमला कर के धरती पर बगैर कदम रखे वापस आ सकता है। और एक मानव रहित उपग्रह-निर्देशित मिसाइल (Satellite guided missiles) ३००० किलोमीटर की दूरी से सटीकता के साथ दुश्मन के ऊपर गिराया जा सकता है।

अनुसंधान और विकास का काम इतना तेज़ है कि थोड़े समय के बाद लोग आकाश में उपग्रह पर रखे लेज़र बंदूकों के माध्यम से लड़ेगे। क्या हम अभी भी उम्मीद करते हैं कि दुनिया के रक्षक "अंतिम अवतार" जन्म लेकर घोड़े और तलवार से दुश्मन से लड़ेंगे?

ऐसा होने के लिए, पहले पूरी मानवजाति को उसकी वैज्ञानिक प्रगति के साथ नष्ट होना होगा। और फिर जो लोग बचेंगे उन्हें अपना जीवन पुनः शून्य की स्थिति से फिर से आरंभ करना होगा और फिर उन कुछ लोगों में जो बच गए, उन के बीच में यदि कोई दुष्ट व्यक्ति है, तो वह तलवार से समाप्त हो सकता है।

लेकिन अगर ऐसा होता है तो दुनिया के उद्धारक के आने का क्या फ़ायदा है? इसलिए अगर हम एसा सोचते हैं तो हम ग़लत हैं।

● अरबी लोग ११०० ई. से सोडा और कोयले के मिश्रण से विस्फोटक बनाते और प्रयोग करते आ रहे हैं। विस्फोटक के बनते ही तलवार का महत्व कम हो गया था। इसलिए कल्कि अवतार का जन्म ११०० A.D के पहले ही हुआ होगा।

● उत्तर पुराण और त्रिलोक सागर के अनुसार महावीर स्वामी की मौत के १००० वर्षों के बाद कल्कि अवतार को जन्म लेना है, जो कि लगभग ५७१ A.D है क्योंकि महावीर स्वामी का देहान्त ५७१ B.C में हुआ था। अब हमें यह पता करना चाहिए कि किसी संत या प्रसिद्ध धार्मिक व्यक्तित्व ने भारत में ५७१ A.D में जन्म लिया या नहीं?

● २४ वां अवतार कोई अज्ञात व्यक्ति नहीं हो सकता, उसे प्रसिद्ध होना ही चाहिए, जैसे गौतम बुद्ध, श्री राम और श्री कृष्ण बहुत प्रसिद्ध हैं, और हर कोई उन्हें जानता है। लेकिन दुर्भाग्य से हम ऐसे किसी प्रसिद्ध व्यक्ति अथवा अवतार को नहीं जानते जिन्होंने भारत में ५७१ A.D के आसपास जन्म लिया हो।

● यह एक संयोग है कि कल्कि अवतार और हज़रत मुहम्मद साहब के जन्म का समय एक ही है। चलिए पुष्टि के लिए कल्कि अवतार को जानने और हज़रत मुहम्मद (स.) साहब की पहचान कल्कि अवतार के रूप में करने के लिए, हम निम्नलिखित जानकारियां और दिव्य पुराणों में की गई भविष्यवाणियों का मिलाप करते हैं-

- जन्म तिथि
- जन्म स्थान
- पारिवारीक पृष्ठभुमि
- पिता का नाम
- माता का नाम
- उनके शिक्षक या ज्ञान के स्त्रोत (His teacher or source of knowledge)
- उनकी जिम्मेदारियां

- उनके सहयोगी
- उनका व्यक्तित्व
- आखरी अवतार होना
- अन्य संम्बधित पूर्वानुमान

जन्म का दिन

कल्कि पुराण (२:२५) के अनुसार कल्कि अवतार माधव महीने की १२ तारीख अर्थात चौदहवी के (पूर्णिमा) चाँद से दो दिन पहले जन्म लेगा। हज़रत मुहम्मद (स.) के जन्म का दिन १२ रबी उल अव्वल है। यह दिन भी चौदहवीं के चॉद से दो दिन पहले है।

जन्म स्थान

कल्कि पुराण के अनुसार कल्कि अवतार का जन्म संभल ग्राम में होगा। हिंदुस्तान में संभल नाम का कोई स्थान नहीं है। दो स्थानों के नाम इससे मिलते जुलते हैं जो हैं-संभलपुर और संभार झील। लेकिन वहाँ कोई नहीं जानता कि अवतार या पैगंम्बर जैसे किसी बड़े व्यक्ति ने वहाँ जन्म लिया है। डॉ. वेद प्रकाश उपाध्याय (संस्कृत विद्वान, पंजाब विश्वविदयालय) कहते हैं कि 'संभल' स्थान की विशेषता है, स्थान का नाम नहीं। वैदिक संस्कृत में 'सम' का अर्थ है 'शांति' अर्थात संभल वह स्थान है जहाँ हर किसी को शांति मिले। हज़रत मुहम्मद (स.) मक्का में पैदा हुए जिसका नाम 'बलदिल अमीन' है (कुरआन ६५:३)। बलद का अर्थ है शहर और अमीन का अर्थ है शांति। प्रसिद्ध पुस्तक 'Encyclopedia of Britanica' इस प्रसिद्ध पुस्तक में भी मक्का को अमन (शांति) का शहर कहा गया है।

मक्का शहर में इन्सान और जानवर सब के लिए शांति है। धार्मिक कानून के मुताबिक कोई भी मक्का शहर में इन्सान और जानवर किसी की भी हत्या नहीं कर सकता है और न पेड़-पौधे तोड़ सकता है।

परिवारिक पृष्ठभूमि

भागवत पुराण के अनुसार कल्कि अवतार का जन्म पुरोहित के घर में होगा। हज़रत अब्दुल मुत्तलिब जो हज़रत मुहम्मद (स.) के दादा हैं, मक्का के मुख्य धर्मगुरू और काबा के न्यासी (Trusty) भी थे।

माता पिता का नाम

कल्कि अवतार के पिता का नाम विष्णुयश होगा। जिसका अर्थ है विष्णु या ईश्वर के उपासक। हज़रत मुहम्मद (स.) के पिता का नाम अब्दुल्लाह है, जिसका भी अर्थ है ईश्वर का उपासक या आज्ञाकारी। कल्कि पुराण के अनुसार, कल्कि अवतार की माँ का नाम 'सुमति' होगा अर्थात शांतिपूर्ण (Peaceful) और विचारशील। हज़रत मुहम्मद (स.) की माँ का नाम था 'आमना', जिस का अर्थ भी शांतिपुर्ण, और विचारशील है।

कल्कि अवतार की अन्य विषेशताएं:

- कल्कि पुराण के अनुसार कल्कि अवतार अपने शहर से उत्तर की ओर जाएंगे और फिर वापस आएंगे। हज़रत मुहम्मद (स.) अपने पैतृक शहर 'मक्का' से उत्तर की तरफ 'मदीना' चले गए थे और आठ साल बाद वह फिर से 'मक्का' विजयी हो कर लौटे।

- कल्कि पुराण का कहना है कि कल्कि अवतार पहाड़ पर जाएंगे वहाँ परशुराम से ज्ञान प्राप्त करेंगे। यह एक ऐतिहासिक तथ्य है कि हज़रत मुहम्मद (स.) 'ग़ार-ए-हिरा' नामक गुफा में शांति और चिंतन के लिए जाते थे। ४० साल की उम्र में उन्हें ईश्वरदूत 'हज़रत जिब्रईल' के द्वारा पहाड़ की गुफा में पहली बार कुरआन का ज्ञान प्राप्त हुआ।

- भागवत पुराण (१२:२:६) का कहना है कि कल्कि अवतार दुनिया के रक्षक होंगे। पवित्र कुरआन में ईश्वर कहता है कि 'हमने हज़रत मुहम्मद (स.) को 'रहमत-उल-लिल आलमीन' के रूप में भेजा है।' (कुरआन २१:१०७)। 'रहमत' का अर्थ है 'कृपा (Blessing)', और 'आलमीन' का मतलब है 'दुनिया' (सम्पूर्ण सृष्टि)। इस का मतलब

है कि हज़रत मुहम्मद (स.) से दुनिया को शांतिपूर्ण जीवन, मुक्ति, मोक्ष, और सफलता के लिए मार्गदर्शन मिलेगा।

● कल्कि पुराण (२:५) के अनुसार कल्कि अवतार अपने चार साथियों की मदद से 'काली' अर्थात शैतान को परास्त करेंगे। डब्लू. एल. लैंगर (Encyclopedia of world history page :184) का कहना है कि हज़रत मुहम्मद और उनके चार साथियों हज़रत अबू-बक्र, हज़रत उमर, हज़रत उस्मान, और हज़रत अली (रज़ि) ने इस्लाम के संदेश को आम किया और पुरानी अमानवीय परंपरा को समाप्त किया।

● कल्कि पुराण में हैं कि, ''कल्कि अवतार की युद्धक्षेत्र में स्वर्गदूतों के द्वारा सहायता की जाएगी।''

हज़रत मुहम्मद (स.) और उनके साथी बद्र की लड़ाई में ३१३ थे, जबकि दुश्मन के पास १००० सैनिक थे। खंदक की लड़ाई में मुसलमान ३००० थे, जबकि दुश्मन सैनिक २५००० से अधिक थे। इन दोनों ही लड़ाईयों में, और अन्य कई बार दुश्मन पर विजय के लिए स्वर्गदूतों के द्वारा सहायता की गई। पवित्र कुरआन भी इसकी पुष्टि करता है। देखें अध्याय (३:१२३:११५), (८:६), (२३:६) आदि।

● भागवत पुराण (१२:२२१) के अनुसार कल्कि अवतार के शरीर की गंध सुगंधमय होगी, जिस की वजह से उनके चारों ओर हवा सुगंधित हो जाएगी।

हदीस में है कि एक बार जब हज़रत मुहम्मद (स) सो रहे थे, तब आप की पत्नी हज़रत उम्मे सलमा (रज़ि) ने आपका पसीना जमा कर लिया। जब हज़रत मुहम्मद (स.) जागे तो उन्हों ने पूछा, मेरे पसीने के साथ तुम क्या करोगी? हज़रत उम्मे सलमा ने कहा, हम इसे खुश्बू के रूप में इस्तेमाल करेंगे। जो भी हज़रत मुहम्मद (स.) से हाथ मिलाता था उसका हाथ दिनभर सुगंधित रहता था।(शमाइले तिरमिज़ी पृष्ठ:२०८)।

हज़रत मुहम्मद (स.) के दास, हज़रत अनस (रज़ि) ने कहा, हम हमेशा जान जाते थे कि हज़रत मुहम्मद (स.) कब अपने कक्ष से निकलते हैं, क्योंकि तब सारी हवा भी सुगन्धित हो जाती थी।
("Life of Mohammad" By Sir William Muir - page No. 342)

● भागवत पुराण के अनुसारः (खंड २, अध्याय २) में है कल्कि अवतार आठ विशेष गुण बुध्दिमत्ता (wisdom), सम्मानित वंश (honoured family), स्वंय पर नियंत्रण (Self control), दिव्य ज्ञान (divine knowledge), वीरता (braveness), अत्यंत दानशीलता (extremely charitable), मृदु भाषी (balance/sweet speech) और कृतज्ञता (gratefulness) आदि से सुसज्जित तथा संम्पन्न होंगे।

● गैर मुस्लिम लेखकों के व्दारा लिखित पुस्तकें भी हज़रत मुहम्मद (स.) के आठ गुणों की पुष्टि करती हैं;

1. Life of Mohammad by Sir William Muir. Published by Smith elder & co.(London)
2. Introduction of the speeches of Mohammad by Lane Poole. Published by Macmillan & Co. (London)
3. Mohammad and Mohammad by R.Bos Worth Smith.

● भागवत पुराण (१२:२:१६) में है कि कल्कि अवतार को आठ गुणों के साथ तेज रफ्तार घोड़ा और तलवार भी दी जाएगी, जिससे वे दुराचारीयों का नाश करेंगे।

ईश्वर-दूत हज़रत जिब्रईल (अ.) ने हज़रत मुहम्मद (स.) को बुर्राक नामक तेज़ रफ्तार घोडा दिया था। हज़रत मुहम्मद (स.) के पास ७ घोड़े और ६ तलवारें थीं और उन्हें वह इस्लाम का सन्देश लोगों तक पहुँचाने तथा अत्याचारियों से लड़ने के लिए इस्तेमाल करते थे।

● भागवत पुराण (१:३:२४) में है कि कल्कि अवतार अंन्तिम अवतार होंगे।

दिव्य कुरआन में भी हजरत हज़रत मुहम्मद (स.) को आखरी पैंगम्बर कहा गया हैं।

(कुरआन ३३:४०)

● पुराण के अनुसारः कल्कि अवतार वैदिक धर्म की स्थापना करेंगे।

● जब मनु (हज़रत नूह) के लोगों ने उनकी बात नहीं मानी तो एक बहुत बडे सैलाब ने सारी दुनिया को घेर लिया और इसमें सिर्फ मनु के अनुयायी ही बच पाए। अगर मनु और उनके अनुयायी बाढ के बाद वैदिक धर्म को मान रहे थे तो इस्लाम एक वैदिक धर्म ही है क्योंके मनु (हजरत नूह) ने ईश्वर के जो आदेश और धर्म अपने अनुयायीयों को सिखाया था वही ईश्वर के आदेश और धर्म को हजरत मुहम्मद (स.) ने भी अपने अनुयायीयों को सिखाया है। कुरआन की यह आयत इसकी पुष्टि करती हैंः

● "उसने तुम्हारे लिए धर्म की वही पद्धति नियुक्त की है जिसका आदेश उसने नूह (मनु) को दिया था, और जिसे (ऐ मुहम्मद) अब तुम्हारी ओर हमने प्रकाशना (वही/Revelation) के द्वारा भेजी है, और जिसका आदेश हम इबराहीम और मूसा और ईसा को दे चुके हैं, इस ताकीद के साथ कि कायम करो इस दीन (धर्म) को और इसमें अलग-अलग न हो जाओ।" (पवित्र कुरआन ४२:१३)

यह सब लिखने का उद्‌देश क्या है?

यदि हम विदेश जाएँ जहाँ पर हर एक नया और अपरिचित हो, ऐसे में हमें यदि मालूम हो के उन्ही में से एक व्यक्ति हमारे देश का है तो उसके विषय में बिना कुछ जाने ही दोस्ती, सहानभुति और आकर्षण का एहसास होता है। क्योंकि उस व्यक्ति और हमारे बीच समानता है, और वह है मातृभूमि।

● यह समानता का विचार दो अपरिचितों के बीच की दूरी को कम करता है। ऐसा ही उस समय भी होता है जब हम अपने और दूसरे धर्मों के बीच समान बातों को जानें। अब हमने जाना के हिन्दू धर्म के पवित्र नराशंस/कल्कि अवतार और इस्लाम के हज़रत मुहम्मद (स.) एक ही हैं। हमने यह भी जाना के वेदों में मक्का का बहुत आदरपूर्वक उल्लेख है।

● हमने जाना के वेदों और कुरआन में हज़रत आदम, हज़रत इब्राहीम, हज़रत इस्माईल का उल्लेख है। इस तरह यह दोनों धर्म के अनुयायों के महापुरूष हुए।

● पवित्र वेद और पवित्र कुरआन के बहुत सारे श्लोक और आयत भी एक समान है।(जिन का हम इस पुस्तक में आगे उल्लेख करेंगे।) यह समानता का एहसास और ज्ञान हिन्दू-मुस्लिम के बीच के द्वेष को कम कर देगा। इसलिए यह जानकारी हमें आम लोगों के बीच फेलाना चाहिए। जिससे उनके बीच भेद भाव कम हो और मानव जीवन में शांति आए और संसार के लोग समृद्ध जीवन व्यतित करें।

▼ ▼ ▼ ▼ ▼ ▼ ▼

११. कुरआन में हिन्दू धर्म का उल्लेख

साबईन कौन?

● पवित्र कुरआन में हिन्दू धर्म को साबईन कहा गया है। वह आयतें जिन में हिन्दू धर्म का उल्लेख है वह निम्नलिखित है।

● "विश्वास रखो कि अरबी नबी को माननेवाले (मुसलमान) हों या यहुदी, ईसाई हों या साबईन, जो भी अल्लाह और अन्तिम दिन पर ईमान लाएगा (प्रलय के दिन कर्मों का हिसाब होगा ऐसा मानेगा) और अच्छे कर्म करेगा, उसका बदला उसके रब के पास है और उसके लिए किसी डर और गम कि बात नहीं है।" (पवित्र कुरआन २:६२)

● "मुसलमान हों या यहूदी, साबइन हों या ईसाई, जो भी अल्लाह और अन्तिम दिन को मानेगा और अच्छे कर्म करेगा बेशक उसके लिए न किसी डर की बात नहीं है और ना किसी गम का।" (पवित्र कुरआन ५:६९)

● "जो लोग ईमान लाए, और जो यहूदी हुए, और साबइन, और ईसाई, और मजूस, और जिन लोगों ने अल्लाह का साझी ठहराया, इन सबके बीच अल्लाह कियामत के दिन फैसला कर देगा। हर चीज़ अल्लाह की नज़र में है।" (पवित्र कुरआन २२:१७)

● दस से अधिक विद्वानों ने पवित्र कुरआन की व्याख्या लिखी है। और हर विद्वान ने साबईन धर्म के अलग अलग श्रद्धा और विशेषताएँ बताई है। और वह सब हिन्दू धर्म और इस धर्म के मानने वालों में पाई जाती हैं। इसलिए विद्वानों का मानना है की साबईन यह हिन्दू धर्म का ही नाम है।

वेदों का कुरआन में उल्लेख

● कुरआन में वेदों को चार नामों से उल्लेख है-

१) सुहफे-उला, २) ज़बरूल अव्वलीन, ३) ज़बर, ४) बाईयनात

● विश्व में कौन कौन सी ईश्वरी ग्रन्थ प्रसिद्ध है?

१. यहूदी धर्म की तौरात

२. ईसाई धर्म की इन्जील (बाईबल)

३. हजरत दाऊद की जुबूर

४. इस्लाम धर्म की कुरआन

● हजरत नूह को भी ईश्वरीय ग्रन्थ मिले थे। और हजरत इब्राहीम को भी।

यहूदी, ईसाई और मुसलमान यह सब हजरत इब्राहीम को अपना पैगम्बर मानते है। और सब के पास अपना अपना ग्रन्थ है। और उनके ग्रन्थों में हजरत इब्राहीम के ग्रन्थ के सारे आदेश हैं! इसलिए हजरत इब्राहीम के ग्रन्थ का समय बीतने के साथ क्या हुआ इस की किसी को खबर नहीं है।

● ईसाई हजरत दाऊद और हजरत मूसा दोनों को मानते हैं। इसलिए ईसाई भाईयों ने दोनों पैगंम्बरों के ग्रन्थों (तौरात और जुबूर) को अपने ग्रन्थ न्यू टेस्टामेंट/बाइबल में शामिल कर लिया।

यहूदियों की जो ओल्ड टेस्टामेंट (Old Testament) बाइबल है, वह जुबूर और तौरात ही है।

● कुरआन में ईश्वर ने जब भी इन ग्रन्थों का ज़िक्र किया तो उनको नाम लेकर किया। यहाँ तक कि हजरत इब्राहीम के ग्रन्थ को भी सुहुफे इब्राहीम कहा। अब जो ग्रन्थ बचा है वह है हजरत नूह के अनुयायों का ग्रन्थ।

● आज विश्व में ३१ प्रतिशत ईसाई हैं। २२.७४ प्रतिशत मुसलमान है। और १३.८ हिन्दू भाई है। तो हिन्दू भाईयों की संख्या विश्व में तीसरे नम्बर पर है।

पवित्र कुरआन यह सारे विश्व के लिए है। इसलिए ऐसा नहीं हो सकता है की यह हिन्दू भाईयों को और उनके ग्रन्थों को बिलकुल नज़र अन्दाज कर दे। इसलिए मौलाना शम्स नवेद उस्मानी ने शोध किया, और अपनी किताब 'अब भी ना जागो तो' में लिखा है

कि यह चार नाम- सुहफे उला, जबरूल अव्वलीन, जबर और बय्यानात यह पवित्र कुरआन में तौरात, जुबूर, और इन्जील के लिए नहीं इस्तेमाल हुए हैं। बल्कि यह वेदों के लिए ही इस्तेमाल हुए है।

पवित्र कुरआन में वेदों को उनके नाम से क्यो नहीं याद किया गया?

सन १८०० AD में मॅक्स मुल्लर ने वेदों को पुस्तक का रूप दिया। इसके पहले यह एक पुस्तक के रूप में न थे। वेद के अलग-अलग खण्ड और सूक्त अलग-अलग ऋषियों के पास थे। और सब के सब उन्हें याद थे।

हिन्दू विद्वान वेदों को आदि ग्रन्थ भी कहते है क्योंकि यह सर्व प्राचीन है। सुहफे उला का अर्थ इस तरह है। सुहफ का अर्थ है ग्रन्थ। उला का अर्थ है पहले वाले या प्राचीन या आदि। इस तरह सुहफे उला और आदि ग्रन्थ एक ही नाम हुए।

जबर का अर्थ है बिखरे हुए पन्ने (Pages)। अव्वलीन यह अव्वल शब्द से बना है, जिसका अर्थ है आदि या पहले के या प्राचीन। जबरूल अव्वलीन का अर्थ है प्राचीन बिखरे हुए पन्ने। वेद एक पुस्तक के रूप में न थे बलके अलग अलग खण्ड या सूक्त अलग अलग ऋषियों के पास थे। इसलिए इन्हें जबरूल अव्वलीन कहा गया। और यह सब विद्वानों को याद थे और वह इसे आदि ज्ञान कहते थे। इसलिए जबरूल अव्वलीन और आदि ज्ञान यह एक ही नाम हुए।

● ऋग्वेद काव्य (Poem) रूप में है। यर्जुवेद वाक्य (Prose) रूप में है। बय्यानात का अर्थ है, बयान किया हुआ या साफ साफ बताया हुआ ईश्वरीय आदेश। वह ग्रन्थ जिन में ऐसे साफ वाक्य हों और जो काव्य की तरह न हो उन्हें बय्यानात कहा गया है। ऐसे ग्रन्थ यर्जुवेद है।

● जबर यह उन ग्रन्थों को कहते है जिस में काव्य रूप में आदेश हो। ऐसे ग्रन्थ ऋग्वेद और सामवेद है।

● तो पवित्र कुरआन में वेदों को उन की स्थिती (Condition) के अनुसार याद किया है।

● कुरआन की ऐसे कुछ आयतें जिनमे वेदोंको 'सुहफे ऊला' और 'जबरूल अव्वलीन' कहा गया है वह आयतें निम्नलिखीत हैं-

कुरआन की आयत (२६:१९६) में कहा गया है किः

''और वे कहते हैं कि 'यह (पैग़म्बर) अपने रब (परमेश्वर) की ओर से हमारे पास (अपनी पैगंबरी साबित करने के लिए) कोई निशानी क्यों नहीं लाता?' ।

(उनके सवालों का जवाब ईश्वर ने ऐसे दिया।)

''क्या उन के पास इसका स्पष्ट प्रमाण नहीं आ गया, जो कुछ कि सुहफे ऊला (आदिग्रंथो) में उल्लिखित है?'' (आदिग्रंथो या वेदों में हजरत मुहम्मद (स.) कि भविष्यवाणी ३१ बार कि गयी है। क्या यह उन के पैगम्बर होने का ठोस सबूत नहीं है?)

इस आयत के प्रकट होने का एक कारण यह हो सकता है कि अरब देश का हज़ारो वर्ष से भारत देश से व्यापारिक संबध रहा है। और भारतीय लोगों के बहुत सारे कबीले यमन, सऊदी अरब, बहरीन आदि. में बसे हुए थे।* और वहाँ बसे भारतीय लोगों ने जब यह सवाल हज़रत मुहम्मद (स.) से किया तो ईश्वरने उपरोक्त आयत (श्लोक) द्वारा उनको जवाब दिया।

(*''मुहम्मद (स.) के जमाने का हिन्दुस्तान'', लेखकः क़ाज़ी मुहम्मद अतहर मुबारक पूरी)

● पवित्र कुरआन की एक आयत इस तरह है 'बेशक जबरे अव्वलीन में इस (पवित्र कुरआन) की खबर मौजूद है।' (पवित्र कुरआन २६:१९६) अर्थात ईश्वर ने जो आदेश पवित्र कुरआन में दिये वह आदेश प्राचीन ग्रंथों (आदिग्रंथों) में भी मौजूद है। इस आयत का दूसरा अर्थ यह है कि पवित्र कुरआन अवतरीत होगा इसकी भविष्यवाणी (खबर) सभी प्राचिन ग्रंथों में है। ऋग्वेद ने पवित्र कुरआन को अंतिम मशाल और वेद को पहली मशाल कहा है।

(इस पाठ का शेष भाग पेज नं. ६५ पर)

१२. हिन्दू धर्म क्या है?

● किसी शब्द का अर्थ अगर हम किसी शब्दकोश में देखें तो उस एक शब्द के दर्जनों अर्थ मिलेंगे।

लेखक उन दर्जनों अर्थों में से केवल उस अर्थ को चुनता है जो उसकी अपनी सोच, श्रद्धा और कल्पना के अनुसार होती है।

इसीलिए वेद, भगवद्गीता, और पवित्र कुरआन, इन्जील यह अपनी मूल भाषा में तो एक है। मगर इनकी जो व्याख्या हुई है उस में बहुत अंतर है। इस का कारण व्याख्या करने वाले की अपनी विचारधारा है, जो दूसरों से कुछ अलग होती है।

● मैंने एक पुस्तक लिखी है जिसका शीर्षक है- 'Law of Success for Both the worlds' जो अमेरिका से प्रकाशित हुई थी। इस पुस्तक में मैंने सभी धर्मों का परिचय दिया है। इस पुस्तक के लिए जब मैंने सभी धर्मों के बारे में शोध किया तो धर्मों के मूल आदेश में बहुत समानता पाया। तो मेरी सोच में एक प्रकार की उदारता आ गई है और मेरा ध्यान धर्मों की समानता की तरफ ज़्यादा जाता है। और इसी उदार दृष्टिकोण से मैंने हिन्दू धर्म का भी अध्ययन किया है।

● मैं ऐसा नहीं कहता कि जो में लिखता हूँ वही सच है। मैं यह कहता हूँ की उदार दृष्टिकोण से अगर आप भी धर्म के बारे में शोध करेंगे तो वही पाएंगे जो मैंने लिखा है। मैंने अपने शोध से हिन्दू धर्म को जैसा पाया वह निम्नलिखीत है।

धर्म की पहचान :-

जब हम किसी धर्म का पालन करते हैं तो,

१) हमारी **श्रद्धा** उस धर्म के ग्रन्थों की शिक्षा के अनुसार होती हैं।

२) हमारी **प्रार्थनाएँ** उस धर्म के ग्रन्थों की शिक्षा के अनुसार होती हैं।

३) हमारे **कर्म** (जीवनशैली) उस धर्म के ग्रन्थों की शिक्षा के अनुसार होते हैं।

इसलिए अगर हम ग्रन्थों के अनुसार हिन्दू धर्म की श्रद्धा, प्रार्थनाएँ और कर्म (जीवनशैली) को समझ लें तो हिन्दू धर्म भी समझ में आ जाएगा। अब हम इन तीन विषयों को एक एक करके समझने की कोशिश करते है।

१) श्रद्धा :-

निम्नलिखीत सात प्रश्नों के उत्तर किसी भी धर्म के श्रद्धा को स्पष्ट करते हैं। और इसके उत्तर हर धर्म में कुछ अलग है। तो अब हम हिन्दू धर्म में इन प्रश्नों के उत्तर का शोध करते हैं।

१) ईश्वर कौन?

२) ईश्वर के आदेश हम को किस के द्वारा मिले?

३) ईश्वर के आदेश हम को कैसे मिले?

४) क्या हमारा और इस सृष्टि का अंत होगा?

५) मरने के बाद क्या होगा?

६) ईश्वर सृष्टि का काम कैसे चलाता है?

७) भाग्य क्या है?

१. ईश्वर कौन?

पवित्र वेदों में ईश्वर के बारे में निम्नलिखीत श्लोक हैं।

(१) ''हे ईश्वर में आस्था रखने वालो, उस ईश्वर के सिवाय किसी और की पूजा न करो, ईश्वर केवल एक ही है।'' (ऋग्वेद ८:१:१)

(२) ''ईश्वर ही पृथ्वी और आकाश का निर्माणकर्ता (मालिक) है।''(ऋग्वेद १:१६:७)

(३) ''हे ईश्वर! तू ही पहला है और तू ही आखरी है तथा सर्वज्ञानी है।''(ऋग्वेद २:३१:१)

(४) "हे ईश्वर! तेरा ही प्रत्येक वस्तु पर नियंत्रण है।"(ऋग्वेद २:१६:१०)

(५) "वह (ईश्वर) समस्त देवों का एक देव है।" (ऋग्वेद १०:१२१:०८)

(६) "उस परमेश्वर की कोई प्रतिमा नहीं हैं।" (यजुर्वेद १०:७१:४)

२. ईश्वर के आदेश हम को किस के द्वारा मिले?

१) अग्निं दूतं वृणीमहे (ऋग्वेद १-१२-१)
हम अग्नि को दूत चुनते हैं।

इस श्लोक से यह बात सिद्ध होती है कि हिन्दू धर्म में भी ईश्वर के दूत की अवधारणा है।

२) "जब भी धर्म क्षीण होने लगता है और अधर्म की वृद्धि होती है, तब सर्वशक्तिमान हरि निःसंदेह (मार्गदर्शन के लिए) एक आत्मा पैदा करता है।" (श्रीमद् भागवत महापुराण ६-२४-५६)

यह श्लोक दूत के धरती पर जन्म लेने के कारण को स्पष्ट करता है।

भगवद्गीता का एक श्लोक इस प्रकार हैं-

● (श्री कृष्ण जी ने कहा, ईश्वर कह रहा है कि,)

प्राचीन काल के सात बड़े ऋषि, और मनु की पीढ़ी से भेजे जाने वाले चौदह (ऋषि) विचार करते हुए मेरी इच्छा पर चलने वाले थे। इस संसार में यह सारी मानवजाति सबसे पहले निर्माण किये जाने वाले मनुष्य से और उन (ऋषियों की पीढ़ी) से ही पैदा हुए हैं। (गीता अध्याय १०, श्लोक ६)

इस श्लोक में आप इस बात को समझने का प्रयास कीजिए 'मनु की पीढ़ी से भेजे जाने वाले चौदह', यह कौन थे?

मनु के समय में आए महाजल प्लावन में जो बच गए थे वह मनु की सन्तान ही थे और सब ईश्वर की इच्छा अनुसार ही चलने वाले थे। तो इन चौदह को भेजने का क्या कोई खास उददेश था?

इन को सन्देष्टा (पैगम्बर) बना कर मानवजाति के मार्गदर्शन के लिए भेजा था। और इन चौदाह के नाम का हमने 'मनु या हजरत नूह' अध्याय में उल्लेख किया है।

● भगवद्गीता का एक श्लोक इस प्रकार है-

"मैंने (ईश्वर ने) भक्ति के कभी परिवर्तित न होने वाले, (धर्म के ज्ञान) को विवस्वत से कहा। विवस्वत ने मनु तक इस ज्ञान को फैलाया, और मनु ने इश्वाकु तक इस ज्ञान को आगे बढ़ाया।"(भगवद्गीता ४:१)

विवस्वत, मनु, इश्वाकु यह सब ईश्वर के सन्देष्ठा या प्रतिनिधि हैं जिन के द्वारा ईश्वर ज्ञान मानवजाति तक पहुँचाता और फैलता रहा।

तो ईश्वर के आदेश मानवजाति को ईश्वर अपने प्रतिनिधि द्वारा देता है। जिनका अलग अलग धर्म में अलग-अलग नाम है। जैसे अवतार (मनु/सन्देष्ठा), नबी, प्रोफेट इत्यादि।

३. ईश्वर के आदेश हम तक कैसे पहुँचते है?

भगवद्गीता का एक श्लोक इस प्रकार है-

● मेरे (ईश्वर) द्वारा वेदों में भी मरने के बाद इस संसार से जाने के लिए दो मार्ग बताए गए है। इन दोनों मार्गों में निःसंदेह एक उज्वल मार्ग है और दूसरा अंधकारमय मार्ग है।(भगवद्गीता ८:२६)

इस श्लोक में आप इस बात पर ध्यान दिजीए कि कौन ज्ञान दे रहा है और कैसे दे रहा है।

ईश्वर ज्ञान दे रहा है और वेदों के द्वारा दे रहा है। तो ईश्वर ग्रन्थों के द्वारा अपने आदेश और निर्देश देता है। और ग्रन्थ में मौजूद आदेश को समझाने वाले सन्देष्ठा होते है।

४. क्या हमारा और इस सृष्टी का अंत होगा?

हिन्दु धर्म के अनुसार हमारा और इस सृष्टी दोनों का अंत होगा।

४.१ सृष्टी का अंत

सृष्टि के अंत को प्रलय कहा गया है। भगवद् गीता के कुछ श्लोक जो प्रलय के बारे में है वह निम्नलिखीत हैं-

● (श्री कृष्ण जी ने कहा,)

"हे पार्थ (अर्जुन)! वह (ईश्वर) मनुष्य होने से परे है, लेकिन किसी और निर्मित वस्तु या देवता की भक्ति न करने से ही उसे प्राप्त किया जा सकता है। यह वह ईश्वर है जिसके द्वारा सारी निर्मित वस्तुओं का यह फैलाव है, और जिसके द्वारा निर्मित वस्तुओं का अंत यानी प्रलय का स्थित होना है।" (भगवद्गीता ८:२२)

(निर्मित वस्तु का अर्थ है वह सभी जीव और पदार्थ जिसका ईश्वर ने निर्माण किया है।)

● (श्री कृष्ण जी ने कहा,)

"(ईश्वर कह रहा है की) अगर मैं (ब्रम्हाण्ड को सही रखने का) कर्म न करूँ तो इस ब्रम्हाण्ड में बिगाड़ और अव्यवस्था हो जाएगी। (जब कि प्रलय यानी कयामत के समय मैं ब्रम्हाण्ड की सारी वस्तुओं को) कूड़ा करकट की तरह टकरा कर मिला दूंगा, और फिर सब से पहले निर्मित किए जाने वाले मानव की इस सारी (नस्ल/मानवजाति) का विनाश करने वाला हो जाऊंगा।" (भगवद्गीता ३:२४)

● गरूड़ पुराण में लिखा है की यमपुर के रास्ते में बारह सूर्य ऐसे तपते हैं जैसे वह प्रलय के अन्त में तपते हैं। (गरूड़ पुराण अध्याय १)

अर्थात गरूड़ पुराण के इस श्लोक से हम अनुमान लगा सकते हैं की एक दिन प्रलय होगा और प्रलय के दिन सूर्य की गरमी धरती पर बारह तपते हुए सूर्य के बराबर होगी।

तो इस तरह एक दिन इस ब्रम्हाण्ड का अंत होगा और वह दिन प्रलय का दिन होगा।

४.२ जन्म और मृत्यु

मानवजाति के अंत के बारे में दो विचारधाराएं है।

पहली विचारधारा (आवागमन) पुनर्जन्म है। अर्थात् मनुष्य मरने के बाद फिर इसी धरती पर अपने कर्मों के अनुसार दूसरा जन्म लेता है। यह विचारधारा या विश्वास वैदिक शिक्षा के विरूद्ध है।

दूसरी विचारधारा है की मनुष्य को मरने के बाद और एक अनंत जीवन मिलेगा। और उस अनंत जीवन में वह अपने कर्मों के अनुसार नरक में या स्वर्ग में होगा। मगर वह इस धरती पर पहली मृत्यु के पश्चात फिर जन्म नहीं लेगा। यह विश्वास वेदों की शिक्षा के अनुसार है।

इस श्रद्धा की पृष्टि करनेवाले तो बहुत से श्लोक हैं। उन में एक निम्नलिखीत है-

● पवित्र और निष्पाप लोगों के लिए स्वर्ग है। शुद्ध होने के बाद जो (नया) शरीर उन्हे प्राप्त होगा उसमें हड्डियां नहीं रहेगी, उनके शरीर को आग नहीं जलाती और ज्ञान प्राप्ति के पश्चात वह प्रकाशमयी दुनिया में प्रवेश करेंगे। स्वर्ग की दुनिया में उनके लिए बहुत आनंद हैं। (अथर्ववेद ४:३४:२)

४.३ पुनर्जन्म श्रद्धा का विश्लेशण(Analysis)

१) छान्दोग्य उपनिषद (अध्याय ५-खण्ड-१०, मन्त्र नं.१-१०) में पुनर्जन्म की शिक्षा है।

२) छान्दोग्य उपनिषद (अध्याय-८, खण्ड-६, मन्त्र नं.५) में पुनर्जन्म न होने की शिक्षा है।

३) बृहदारण्यक उपनिषद (अध्याय-४, खण्ड-४, मन्त्र नं.४) में पुनर्जन्म की शिक्षा है।

४) बृहदारण्यक उपनिषद (अध्याय-५, खण्ड-१०, मन्त्र नं.१) में पुनर्जन्म न होने की शिक्षा है।

५) महाभारत में भीष्म पितामह बहुत समय तक शरशैय्या (तीरों के बिस्तर पर) लेटे रहे क्योंकि उस समय सूर्य दक्षिण में था। और ऐसे समय मृत्यु होने से पुनर्जन्म होता है ऐसी उन की श्रद्धा थी। (महाभारत में यह पुनर्जन्म श्रद्धा की शिक्षा हुई)
(महाभारत, भीष्म पर्व, भीष्म वध उपपर्व)

६) महाऋषी वेद व्यास जी ने महाभारत के स्वर्ग रोहण पर्व, अध्याय ५, मन्त्र नं. २७-२६ में अभिमन्यु, द्रोणाचार्य, कर्ण इत्यादि को स्वर्ग प्राप्त हुआ ऐसा लिखा है। (महाभारत में यह पुनर्जन्म श्रद्धा का इन्कार हुआ।)

क्योंकि यह लोग भी भीष्म पितामह के साथ घायल हुए मगर इन को मरकर स्वर्ग प्राप्त हुआ। तो भीष्म पितामह को भी गम्भीर रूप से घायल अवस्था में पुनर्जन्म के डर से प्रतीक्षा करते रहने की आवश्यकता नहीं थी।

इस तरह महाभारत में भी दो प्रकार की शिक्षा नजर आती है।

७) महाराज विकासानन्द आचार्य जी ने एक पुस्तक लिखी है जिस का नाम है, 'पुनर्जन्म एक रहस्य'। इस में इन्होंने विस्तार से यह प्रमाणित किया है कि जब किसी ग्रन्थ में दो प्रकार की शिक्षाएं हों, जो एक दुसरे के बिल्कुल उलट हों, तो वह शिक्षाएं सही मानी जाएगी जो वेदों के अनुसार हों। क्योंकि वेद ही हिन्दू धर्म का आधार है। तो छान्दोग्य उपनिषद, बृहदारण्यक और महाभारत में दोनों प्रकार की शिक्षाएं है। अर्थात पुनर्जन्म होता है और नहीं होता है। नहीं होना वेदों की शिक्षा है। इसलिए पुनर्जन्म नहीं होता है यही सत्य है और हिन्दू धर्म की मूल विश्वास है।

पुनर्जन्म की विश्वास किन लोगों ने फैलाया और क्यों फैलाया इस का महाराज विकासानन्द जी ने अपनी पुस्तक 'पुनर्जन्म एक रहस्य' में विस्तार से वर्णन किया है।

५. मरने के बाद क्या होगा?

भगवद् गीता के कुछ श्लोक इस प्रकार है।

(श्री कृष्ण जी ने कहा, ईश्वर कह रहा है कि;)

● हे कुन्ती के पुत्र (अर्जुन)! मैंने ब्रम्हाण्ड के आरम्भ में, इन सारे मनुष्यों का निर्माण किया है, और ब्रम्हाण्ड के अंत यानी प्रलय के समय, मरने के बाद मेरी इच्छा से ईश्वरी प्रकृति के द्वारा, सारे मनुष्य दुबारा उठाए जाएँगे (जीवित किए जाएंगे)।
(भगवद्गीता ६:७)

● ईश्वर जो निर्मित वस्तुओं से पूरे तौर पर अलग है, वह किसी के अच्छे कर्मों और बुरे कर्मों का हिसाब लेने का जिम्मेदार नहीं है। अज्ञानता के कारण मनुष्य ऐसा कहता है। क्योंकि उसके अज्ञानता ने ज्ञान पर पर्दा डाल कर उसको छिपा दिया है।(भगवद्गीता ५:१५)

● (जो लोग) तीनों वेदों में (बताए गए) स्वर्ग (में मिलने) वाले सोम पान को पीने के लिए और स्वर्ग को पाने के लिए प्रार्थना करते हैं, वह लोग (संसार में) पापों से पवित्र हो कर भलाई वाले कर्म करते हुए, (केवल) मेरी भक्ति करते हैं, और फिर **कर्मों के फल के तौर पर स्वर्ग** में देवताओं के लोक में राजाओं की तरह, देवताओं के द्वारा दिए गए भोगों से, दिव्य आनन्द लेते हैं। (भगवद्गीता ६:२०)

● अर्थात मरने के बाद फिर अनंत जीवन के लिए जीवित किए जाएंगे। फिर प्रलय के दिन ईश्वर कर्मों का हिसाब किताब लेगा। पुण्य कर्म वाले स्वर्ग और पाप कर्म वाले नर्क में जाएंगे।

६. ईश्वर इस ब्रम्हाण्ड का काम कैसे चलाता है?

भगवद् गीता के दो श्लोक इस प्रकार है।

(श्री कृष्ण जी ने कहा, ईश्वर कह रहा है की,)

● "ईश्वर के उपदेशों के अनुसार भक्ति करने से निःसंदेह, देवता तुम्हें जीवन की आवश्यक सारी वस्तुएँ देंगे। इनके द्वारा दी गई वस्तुओं को दूसरों को

दिए बिना अथवा दूसरों के कल्याण में लगाए बिना जो इनका उपभोग करता है, वह सच में चोर है।
(भगवद्‌गीता ३:१२)

● (जो लोग) तीनों वेदों में (बताए गए) स्वर्ग (में मिलने) वाले सोम पान को पीने के लिए और स्वर्ग को पाने के लिए प्रार्थना करते हैं, वह लोग (संसार में) पापों से पवित्र हो कर भलाई वाले कर्म करते हुए, (केवल) मेरी भक्ति करते हैं, और फिर कर्मों के फल के तौर पर स्वर्ग में देवताओं के लोक में राजाओं की तरह, देवताओं के द्वारा दिए गए भोगों से, दिव्य आनन्द लेते हैं। (भगवद्‌गीता ९:२०)

ऊपर बताए श्लोकों को पढ़कर जो बात समझ में आती है वह इस तरह है-

● श्लोक नं. ३:१२ में कहा गया है की ईश्वर के आदेशों के अनुसार भक्ति करने से निःसंदेह देवता तुम्हें जीवन की आवश्यक सारी वस्तुएं देंगे।

इस श्लोक से यह बात समझ में आता है कि ईश्वर और देवता यह अलग अलग है। और देवता ईश्वर का आदेश मानते हैं।

● श्लोक नं. ९:२० में कहा गया है कि सत्कर्म करनेवाले कर्मों के फल के तौर पर स्वर्ग में देवताओं के लोक में राजाओं की तरह, देवताओं के द्वारा दिए गए भोगों से दिव्य आनन्द लेते हैं।

बाइबल और कुरआन में ईश्वर के ऐसे जीव को जो स्वर्ग में मृतक की सेवा करते हैं उनको फरिश्ते कहा गया है। इसलिए भगवद्‌गीता में जिसे देवता कहा गया है वह फरिश्ते हैं।

● ईश्वर के आदेश और ईश्वरीय ज्ञान को मनुष्यों को बताने वाले महापुरूषों की भगवद्‌गीता में नाम लेकर चर्चा की गई है। जैसे श्री रामचंद्र जी, श्री कृष्ण जी इत्यादि। भगवद्‌गीता में इनको देवता नहीं कहा गया है। लोग खुद से उनको देवता कहते हैं। ऐसे नाम लेकर संबोधित करने वाले श्लोक का एक उदाहरण निम्नलिखित है-

● इसी तरह मौत तक, सारे कर्मों को केवल मेरे (ईश्वर के) सहारे पर करने वाले वासुदेव (यानी कृष्ण) के जैसा महान मनुष्य बहुत सारे पैदा होनेवाले मनुष्यों और ज्ञानियों में से (कोई एक) अत्यंत दुर्लभ है। (भगवद्‌गीता ७:१९)

तो ईश्वर इस ब्रम्हाण्ड का काम देवताओं के द्वारा चलाता है। (अन्य धर्मों में ईश्वर के आदेश का पालन करने वाले और स्वर्ग में लोगों की सेवा करनेवाले देवताओं को फ़रिश्ते कहते है।)

७. भाग्य क्या है?

चार आदमी अपनी रोजी-रोटी भिक्षा माँग कर कमाया करते थे। माँ पार्वती को उन पर दया आई तो उन्होंने अपने पति श्री शंकर जी से उन चारों को अमीर बनाने की प्रार्थना की। श्री शंकर जी ने कहा, 'गरीबी इनके भाग्य में हैं, वे अमीर नहीं हो सकते हैं।'

माता पार्वती के निरंतर आग्रह पर श्री शंकर जी ने उन्हें धन को सोने (Gold) के रूप में देने का निश्चय किया। शंकर जी ने बहुत सारा सोना उस रास्ते के बीच में रख दिया, जहाँ से ये चारों आदमी रोज जाया करते थे।

वें गरीब आदमी अपनी आमदनी बढ़ाने के लिए अपने भीख़ मांगने के तरीके को हर दिन बदला करते थे। उस दिन उन्होंने निश्चय किया कि आज वे अंधे आदमियों की तरह भीख मांगेगे और फिर चारो अपनी आखों पर पट्‌टी बांध कर भीख माँगने के लिए चल दिए।

वे उसी रास्ते पर गए, जिस रास्ते से रोज जाते थे और वहाँ ढेर सारा सोना भी पड़ा था, लेकिन आँखों पर कपडे की पट्‌टी बाँधे रहने के कारण वे सोने के उपर से गुजर जाते हैं और जिंदगीभर गरीब ही रहते है।

तो होता वही है जो भाग्य में होता है। और यह एक प्रसिद्ध कहावत है की समय से पहले और भाग्य

से अधिक कुछ भी नहीं मिलता है। भाग्य यह ईश्वर निर्धारित करता है। और अच्छा और बुरा भाग्य यह दोनों ईश्वर की तरफ से है। ऐसी हिन्दू धर्म में विश्वास या मान्यता भी है।

२) प्रार्थना

अब तक हमने हिन्दू धर्म के ग्रन्थों के आधार पर श्रद्धा, ईश्वर, अवतार, ईश्वरीय ग्रन्थ, प्रलय, स्वर्ग-नरक, देवता और भाग्य के बारे में अध्ययन किया है।

अब हम हिन्दू धर्म के ग्रन्थों के आधार पर प्रार्थना के बारे में शोध करेंगे।

● मैंने अपने शोध में पाया के हिन्दू धर्म में चार प्रकार के प्रार्थना के आदेश हैं।

१) मन्त्रों को पढ़कर ईश्वर की प्रार्थना करना।
२) दान देकर ईश्वर की प्रार्थना करना।
३) उपवास रखकर ईश्वर की प्रार्थना करना।
४) और पवित्र धामों की यात्रा करके ईश्वर की प्रार्थना करना।

अब हम इन चारों ईश्वर के प्रार्थना के प्रकार का एक एक करके अध्ययन करेंगे।

भगवद् गीता के अनुसार प्रार्थना का तरीका

भगवद् गीता के कुछ श्लोक इस प्रकार हैं-

(श्री कृष्ण जी ने कहा, ईश्वर कह रहा है कि,)

● भक्त को चाहिए कि नियोजित समय अनुसार भक्ति, यानी एक ईश्वर में एकाग्रता के लिए १) सदैव अपने आप को शान्त जगह पर ले जाए, और एकांतवाली जगह पर स्थिर होकर, २) अपने आप को निर्माता व शासक और मालिक न मानकर, और किसी और निर्मित वस्तु की ओर आकर्षित हुए बिना, ३) अपनी बुद्धि और सोच को ईश्वर की याद में लगाए। (भगवद् गीता ६:१०)

● पवित्र भूमि जो न बहुत अधिक ऊंची हो और न बहुत अधिक नीची हो, उस पर घास अथवा पतला मुलायम वस्त्र अथवा मृगछाया बिछाकर, अपने आप को मजबूती से स्थित करके बैठ जाए।

(भगवद् गीता ६:११)

● इस आसन पर बैठकर, मन, इच्छाओं और कर्मों को वश में करके, मन में केवल एक सबसे श्रेष्ठ ईश्वर को रखते हुए ईश्वर की प्रसन्नता और मन को बुरे कर्मों से पवित्र करने के लिए भक्ति करे।

(भगवद् गीता ६:१२)

● शरीर, सर और गर्दन को सीधा रखकर मन को किसी (निर्मित वस्तु की ओर) न भटकाकर, एक ईश्वर की याद को स्थिर करके, किसी भी दिशा में न देखते हुए, अपनी नाक के अगले छोर पर मन को केन्द्रित करते हुए। (भगवद् गीता ६:१३)

● शान्त मन के द्वारा, भय के बिना, ईश्वर के आदेशनुसार जीवन व्यतीत करने वाले की तरह, मन में ईश्वर की श्रद्धा को स्थिर करके, अपने आप को वश में रखते हुए, मुझे ही सबसे श्रेष्ठ मान कर, मुझ में ही अपनी बुद्धि और सोच को लगाकर बैठे। (भगवद् गीता ६:१४)

● निःसंदेह इस एकाग्रता की अवस्था में मनुष्य ईश्वर के होने का अनुभव अपने आप करता है, तो वह बिल्कुल सन्तुष्ट और शान्त हो जाता है, और इस हालत में दिव्य शान्ति के कारण उसकी सोच का ईश्वर की याद से जुड़ना, इस बात का साधन बन जाता है कि वह अपने आप को सारे अश्लील और बुरे कर्मों से दूर रख सके।

(भगवद् गीता ६:२०)

● इसलिए उस ईश्वर की याद के साथ जुड़कर भक्ति करने को, सारे सांसारिक दुःखों का शिकार होने से मुक्त जानो। (भगवद् गीता ६:२३)

● इस तरह अपने आप का सदैव नियोजित समय के अनुसार, एक ईश्वर में एकाग्रता वाली भक्ति में लगाने वाला भक्त, ईश्वर के भय का एहसास पा लेता है, और फिर सारी उलझनों और पापों से मुक्ति पाकर, सुखी और संतुष्ट हो जाता है और (मौत के बाद स्वर्ग के) सर्वोच्च शान्ति व सुख (वाले धाम) को

प्राप्त करता है। (भगवद् गीता ६:२८)

प्रार्थना किस समय और कितनी बार करें?

● अथर्ववेद का एक श्लोक इस प्रकार है।

अग्निः प्रातः सवने पात्वस्मान् वैश्चानरो विश्वशंभुः।(अथर्ववेद ०६:४७:०१)

भावार्थ-सब मनुष्यों के प्रिय, जगदुत्पादक, सबके कल्याणकारी परमेश्वर प्रातः काल की उपासना में हमारी रक्षा करें।

अर्थात प्रार्थना का सबसे महत्वपूर्ण समय प्रातःकाल है।

● हे ईश्वर हम तेरी प्रार्थना सुबह, दोपहर और सूरज डूबने के बाद करते है। तो हमें अपना सच्चा भक्त बना। (ऋग्वेद १०-१५१-६५)

● वेदों में त्रिकालसंध्या के बारे में लिखा है यानी दिन में तीन बार ईश्वर की भक्ति करनी चाहिए। सुबह, दोपहर, शाम। तो दिन में तीन बार ईश्वर को याद करने का हिन्दू धर्म में शताब्दियों से नियम रहा है।

ईश्वर की प्रार्थना में क्या पढें?

● ऋग्वेद खण्ड ३, सुक्त ६२, मन्त्र नं. १० इस प्रकार है।

तत्सवितुर्वरेन्यं भर्गो देवस्य
धीमहि धीयो यो नः प्रचोदयात् ।।

पवित्र श्लोक को पढ़ने के पहले ईश्वर का नाम लिया जाता है और ईश्वर की प्रशंसा की जाती है। इसलिए इस पवित्र श्लोक को पढने के पहले ऊँ **भूर्भुवःस्वः** भी पढा जाता है। ऊँ **का अर्थ ईश्वर** है। ऐसा अल्लोपनिषद मन्त्र नं.६ में लिखा है। तो इस पूरे मन्त्र को इस तरह लिखेंगे-

ऊँ भूर्भुवः स्वः
तत्सवितुर्वरेन्यं भर्गो देवस्य
धीमहि धीयो यो नः प्रचोदयात् ।
(ऋग्वेद ३:६२:१०)

इस मन्त्र का अर्थ है-

'स्तुति के योग्य वह ओम (ईश्वर) है, जो भूलोक, स्वर्ग लोक और नरक लोक का निर्माण करने वाला व पालने वाला है। हम बुद्धि व हदय के साथ तेरी भक्ति करते है। क्योंकि तू ही मदद करने वाला और सहारा है। (हे ईश्वर हमें सीधे मार्ग का) उपदेश दे।'

● यह प्राचीन काल से दिन में तीन बार पढ़ा जाने वाला सबसे श्रेष्ठ मन्त्र है, इसलिए इसे **गायत्री महामंत्र** कहते है। गायत्री दो शब्दों से बना है। (गेय अर्थ गाया जाना और त्री का अर्थ तीन है) गायत्री मन्त्र यानी सुबह दोपहर और शाम को गाया जाने वाला मन्त्र।

● चौदह साल के वनवास के दौरान एक बार श्री हनुमान जी ने श्रीराम जी से पूछा कि मैं ईश्वर की प्रार्थना कैसे करू, तो श्रीराम जी ने श्री हनुमान जी को इस तरह ईश्वर की प्रार्थना करने का तरीका सिखाया।

प्रथमः ताराकः चयवादितिय दंड मुच्यते तीतय
कुंडला कारमचतुर्थ अर्धे चंन्द्रकः
पंचं बिन्दू संयुक्तः ओम मित्यजयोती रूपक
(श्रीराम तत्व अमृत)

पहले सीधे खड़े हो जाओ। फिर दंडवत (सजदा) करो, फिर सीधे बैठ जाओ, फिर आधे चांद की तरह सामने झुक जाओ। फिर सीधे बैठ जाओ और ईश्वर की याद में ध्यान लगाओ।

अष्टांग

● वेदों के अनुसार ईश्वर की भक्ति का सर्वश्रेष्ठ तरीका 'अष्टांग' हैं। अष्ट का अर्थ है आठ। अंग का अर्थ है शरीर। अष्टांग का अर्थ है शरीर के आठ भागों से जमीन को छुकर ईश्वर की प्रार्थना करना। शरीर के आठ भाग इस प्रकार है। माथा, नाक, दोनों हाथ, दोनों घुटने, दोनों पैर के पंजे। अष्टांग को अरबी में सजदा कहते है और अंग्रेजी में Postration कहते है। बायबल में भी इस प्रकार कि भक्ति को सर्वोत्तम माना गया है।

(जेनीसीस १७:३, जोशो ५:१४, मॅथ्यु २६:३६)

तो हिन्दू धर्म में प्रार्थना-

१) ईश्वर में ध्यान लगाकर,
२) दिन में तीन बार पवित्र वेदों के पवित्र मन्त्रों का जाप करके,
३) अष्टांग के द्वारा की जाती है।

मूर्तिपूजा और ग्रन्थो के आदेश

पवित्र वेदों के कुछ श्लोक जो मुर्तिपूजा से मना करते है, वह निम्नलिखीत है-

● ''हे मित्रो! उसके (ईश्वर के) सिवा अन्य की स्तुति न करो अन्यथा दण्डनीय होगे।'' (ऋग्वेद, मण्डल ८: सूक्त १: मन्त्र १)

● ''उस की कोई प्रतिमा नहीं है, उसका नाम ही अत्यन्त महान है, सब से बड़ा यश यही है।'' (यजुर्वेद अध्याय ३२ मन्त्र ३)

● जो असंभूति (अर्थात प्रकृति रूप जड पदार्थ जैसे सूर्य, धरती इत्यादि) की उपासना करते हैं वे घोर अंधकार (अन्धन्तम नामक नरक) में प्रविष्ट होते हैं। और जो सम्भूति (जड पदार्थ व प्रकृति से भिन्न सृष्टि जैसे मूर्ति, चित्र इत्यादि) में रमण करते हैं वे उससे भी अधिक अन्धकारमें पड़ते हैं। (यर्जुरवेद ४०:०६)

● ''हे स्तोताओं! तुम अन्य किसी देवता का आश्रय न लो, अन्य किसी देवता की स्तुति न करो।''(अथर्ववेद काण्ड २०, सूक्त ८५, मन्त्र १)

● भगवद्‌गीता में ईश्वर का आदेश इस प्रकार है-

''जो लोग मुझे निर्मित वस्तु (जैसे चित्र, मूर्ति इत्यादि) मानकर श्रद्धा रखते हुए मुझे मन में स्थित करके सदैव मेरी भक्ति में लगे रहने वाले हैं उन लोगों का इस तरह मुझे निर्मित वस्तु मानकर मेरी भक्ति में लगना भटकना और विनाश है, यह मेरा निर्णय है।'' (भगवद् गीता १२:२)

मूर्तिपूजा से मन की मुराद क्यों पूरी होती है?

(श्री कृष्ण जी ने कहा, ईश्वर कह रहा है कि,)

''वह उस (निर्मित वस्तु) पर श्रद्धा रखकर उसमें अपनी सोच और समझ को लगाकर (उस निर्मित वस्तु की) भक्ति आरम्भ करके, उससे (अपनी इच्छाओं को पूरा करने की) अपेक्षा करता है तो निःसंदेह (निर्मित वस्तु या देवता से माँगी हुई मुराद) प्राप्त कर लेता है, (जबकि) सच यह है कि उस (निर्मित वस्तु या देवता) से, इच्छा की गई मुरादें, मेरे द्वारा ही उसको दी जाती है।'' (भगवद् गीता ७:२२)

(निर्मित वस्तु का अर्थ है वह सभी जिन को ईश्वर ने निर्माण किया है। जैसे देवी-देवता, सूर्य-चन्द्रमा, पृथ्वी इत्यादि।)

तो इन्सान चाहे जिससे अपने मन की मुराद मांगे, उसे पूरी तो ईश्वर ही करता है। मगर मुक्ति उसी को मिलेगी जो बस उस एक ईश्वर की भक्ति करेगा।

दान

धर्म के अनुसार दान करना यह भी ईश्वर की प्रार्थना और ईश्वर के आदेश का पालन करना है। मगर हम दान क्यों करें, इस बारे में जानने का प्रयास करते है।

कल्पना कीजिए कि एक बच्चे के मां-बाप किसी दुर्घटना में मारे गए, और ईश्वर उस अनाथ को रोजी (खाना) देना चाहता है (क्योंकी ईश्वरने सारे प्राणियों को रोजी देने की जिम्मेदारी खुद ली है।) तो यह काम ईश्वर किस तरह करेगा? देवता उसके लिए दूध की बॉटल लेकर आकाश से नहीं उतरेंगे। उसके बजाय ईश्वर उस बच्चे के करीबी रिश्तेदारों और प्रियजनों की आमदनी में बढ़ोत्तरी करेगा और उनके द्वारा उस बच्चे की परवरिश का इंतेजाम करेगा।

इस तरह समाज में अगर एक बुढ़ी औरत विधवा हो जाए और दुनिया में उसका और कोई सहारा भी न हो तो उसके लिए भी ईश्वर आसमान से खाना नहीं उतारेगा बल्कि समाज के मालदार लोगों की आमदनी से ही उसका खर्चा पुरा होगा। इसलिए ईश्वर हर मालदार आदमी की आमदनी में गरीबों का हिस्सा भेजता है। इसलिए अगर कोई मालदार बगैर दान और खैरात किए अपनी सारी कमाई अकेले खा जाता है, तो वह उस अनाथ और विधवा

के हिस्से की दौलत भी खा जाता है, जो ईश्वरने उस मालदार की आमदनी में अनाथ और विधवा के लिए भेजा था। और यह गुनाह का काम है।

इसलिए ईश्वरने पवित्र वेदों में दान करने का आदेश दिया है और हर धनवान के लिए यह अनिवार्य किया है कि वह अपने अतिरिक्त बचत का कुछ हिस्सा हर वर्ष दान करे। वेदों के निम्नलिखित श्लोकों से आप इसकी महत्ता की कल्पना कर सकते है।

● "यदि कोई व्यक्ति अपनी कमाई अकेले खाता है तो वह पाप खाता है।" (ऋग्वेद १०-११७-६)

● "वे दुःखों से कभी छुटकारा नहीं पाएंगे, जो किसी गरीब अथवा अनाथ को खाना नहीं खिलाता हैं और अकेले खाता है, जबकि उन के पास खाना अत्याधिक होता हैं।" (?????)

● "वह व्यक्ति जो गरीब और ज़रूरतमंद की मदद करने के लिए दान करता है, वह उदारवादियों में से एक है। उसे हमेशा लाभ प्राप्त होता है और उसका शत्रु उसका मित्र बन जाता है।" (ऋग्वेद १०-११७-२)

● "दानी व्यक्ति अमरता को प्राप्त करता है। विनाश, ड़र और दुःख उसके जीवन को छूते भी नहीं हैं। दान किया हुआ धन इन दानियों को संसार और स्वर्ग में सुख प्रदान करता है।"

(पवित्र ऋग्वेद १०:१६७:८)

● "ईश्वर के आदेशों के अनुसार भक्ति करने से निःसन्देह, देवता तुम्हें जीवन की आवश्यक सारी वस्तुएँ देंगे। इनके द्वारा दी गई वस्तुओं को दूसरों को दिए बिना अथवा दूसरों के कल्याण में लगाए बिना, जो उनका उपभोग करता है, वह सच में चोर है।"(भगवद्‌गीता ३:१२)

● इसलिए हर व्यक्ति को अपने अतिरिक्त बचत से कुछ न कुछ दान करना चाहिए। यह ईश्वर का आदेश है और धर्म है। और दान करने से ईश्वर प्रसन्न होता है।

उपवास

उपवास रखना भी ईश्वर की आज्ञा का पालन करना और ईश्वर को प्रसन्न करना है। मगर ऐसा क्यों?

उपवास क्यों करें?

● लोगों को शराब की लत क्यों होती है? क्योंकि उन का अपने आप पर नियंत्रण (Control) नहीं होता। इसी लिए एक शराबी इस बात को जानता है कि वह ग़लत कर रहा है। फिर भी अपने आप से हार कर शराब पीता है।

शराब, सिगरेट, जुआ और ऐसे बहुत से गलत काम वही छोड़ सकता हैं जिसका अपने आप पर और अपनी इच्छाओं पर मज़बूत नियंत्रण (Control) होगा।

● भूख इन्सान कि सबसे बड़ी कमज़ोरी है। भूख से बेताब हो कर लोग चोरी करते है, डाका डालते है, और औरतें भीख माँगती है या अपनी इज्ज़त बेचती है। जो इन्सान भूख लगने पर भी अपने आप पर नियंत्रण रख सकता है और साधारण इन्सानों की तरह दिन गुजार सकता है। वह अपनी हर इच्छा पर नियंत्रण कर सकता है।

उपवास यह विधी अपने आप पर नियंत्रण करने की एक ट्रेनिंग है।

उपवास रखने वाला अपने इच्छाओं पर नियंत्रण रख कर सत्कर्म करता है। इसलिए ईश्वर उपवास रखने वालों से प्रसन्न होता है।

इसलिए मनुस्मृति में उपवास के आदेश है।(मनुस्मृती ६:२४, ४:२२२, ११:२०४ अनुवाद डा. आर.एन.शर्मा) और इन उपवासों में दिन भर पानी पीने और फल खाने का आदेश नहीं है बल्कि दिन में केवल एक बार भोजन करने का आदेश है। और सभी प्राचीन धर्मों में ऐसा ही ईश्वर का आदेश था।

इस्लाम में भी आरम्भ में उपवास करते समय केवल रात का भोजन करने का आदेश था। मगर लोगों को इस से कठिनाई होती थी। तो दयालु

ईश्वर ने प्रातःकाल तक भोजन करने की अनुमति दे दी। (संदर्भः पवित्र कुरआन.......... .)

पवित्र धाम की यात्रा

यात्रा क्यों करे?

अपने घर और परिसर से निकल कर जब व्यक्ति दूर पवित्र स्थान जाता है तो, उस धाम पर उसे महापुरूषों और ज्ञानियों से भेट होती है। जो उस व्यक्ति की अज्ञानता को दूर करने में सहायता करते है। ईश्वर की प्रार्थना का सही तरीका बताते है। इससे धर्म और समाज का सुधार होता रहता है। इसलिए पवित्र धामों की यात्रा भी ईश्वर की प्रार्थना है और धर्म में इसकी भी महत्ता है। भारत देश में चार पवित्र धाम है यह सब जानते है। मगर शास्त्रों में एक पांचवे धाम का वर्णन भी है जो सब से प्राचीन और पवित्र है। हम इस धाम की यात्रा को अच्छी तरह समझने का और प्रयास करते हैं।

मनु के युग में महाजल प्लावन आया था। इस में मनु और उसके कुछ साथी बच गए थे। और मनु की कौम के सारे अवज्ञाकारी डूब कर मर गये थे।

उस के बाद यह दुनिया मनु के बेटों से फिर बसी। हम सब मनु की ही संतान है। मनु की संतान धरती के चाहे जिस क्षेत्र में बसे हो, उसने उस भयंकर बाढ़ को जरूर याद रखा। आप इंटरनेट पर सर्च करके पता करे तो आप को मालूम होगा के विश्व के हर देश में इस बाढ़ की कथा जरूर मौजूद है। मगर इस बात से आश्चर्य भी होता है की हर देश की कथा में कुछ न कुछ असमानता (Difference) जरूर है। ऐसा क्यों?

- जब एक पिता के सब संतान है। और बाढ़ भी एक ही था। तो इस कथा में मतभेद क्यो हुआ? इस का कारण है Communication error. अर्थात कहने और सुनने में होनेवाली निरंतर गलती!
- आप अगर दस लोगों को एक सर्कल के रूप में बैठा दें। फिर एक व्यक्ति के कान में चुपके से कुछ कहें और उसे कहें कि आपकी कही हुई बात वह अपने पड़ोसी व्यक्ति के कान में चुपके से कह दे। इस तरह हर व्यक्ति अपने बगल वाले व्यक्ति के कान में वह बात कहता रहें। जब दसवे व्यक्ति तक बात पहुंचेगी और आप उस से वही बात सुनेंगे जो आप ने पहले व्यक्ति के कान में जो कहा था तो आप को यह सुनकर बहुत आश्चर्य होगा की दसवाँ व्यक्ति आपकी बात बिल्कुल तोड़मरोड कर बताएगा। और ऐसी बात कहेगा जिस का अर्थ आप की कही हुई बात से बिल्कुल अलग होगा।

यह एक सत्य है। इसीलीए मैनेजमेंट में बोले हुए आदेश Verbal Communication से मना किया जाता है और लिखित किया जाता है।

महाजल प्लावन की कथा के साथ भी यही हुआ और विश्व के अन्य धर्मों के साथ भी यहीं हुआ। ऐसा न हो इसलिए ईश्वर ने अपना सब से पवित्र धाम धरती के केन्द्र पर बनाया। और विश्व के सभी लोगों को जीवन में एक बार धरती के केन्द्र (Center of Earth) पर जमा होकर एक साथ प्रार्थना (Prayer) करने का हुक्म दिया है।

विश्व के लोग जब तक एक जगह जमा होते रहेंगे। और एक दूसरे की गलती तथा धर्म के बिगाड़ को दूर करते रहेंगे तो फिर धर्म के कानून कभी नहीं बदलेंगे।

पवित्र ग्रन्थों के वह श्लोक जिस में ईश्वर के सब से पवित्र स्थान और उस की यात्रा का वर्णन है, वह निम्नलिखित है-

- इलायास्पद पढेवयं नाभा प्रथिव्या अधि ।।

(ऋग्वेद ३-२९-४)

इस का अर्थ है कि धरती का पवित्र स्थान यानी ईश्वर का घर, पृथ्वी के केन्द्र पर है।

- "हे ईश्वर की प्रार्थना करने वालो! दूर देश में समुद्र-तट के करीब जो दारूकाबन है वह इन्सान का बनाया हुआ नहीं हैं। इस में ईश्वर की प्रार्थना कर के उस की कृपा से स्वर्ग में दाखिल हो जाओ।"(ऋग्वेद १०-१५५-३)

- जो दिल से आदि पुष्कर तीर्थ जा कर सेवा की चाह करता है उस के तमाम पाप धुल जाते हैं।
(पदम पुराण)
- जो आदि पुष्कर तीर्थ की यात्रा करता है वह अनंत पुण्य (Too Much Eternal Blessings) का हक़दार होता है। (पदम पुराण)
- सब तीर्थों में आदि पुष्कर ही प्राचीन तीर्थ स्थान है। आदि पुष्कर तीर्थ जा कर स्नान करने से मुक्ति मिलती है। (पदम पुराण)

जीवनशैली

हिन्दू धर्म में जीवनशैली कैसी हो इस की जानकारी हमें वेदों से मिलती है। वेदों के कुछ उपदेश हम ने पहले अध्याय के अन्त में लिखा था। और बहुत से आदेश हम अध्याय नं. १४ में लिखेंगे।

सारांश

हिन्दू धर्म को समझने के लिए हमने हिन्दू धर्म में १) श्रद्धा (विश्वास) २) प्रार्थना ३) जीवनशैली का अध्ययन किया। अब तक हम ने जो पढ़ा उस का सारांश निम्नलिखीत है।

१) श्रद्धा

- हिन्दू धर्म में ग्रन्थों से निम्नलिखीत सात श्रद्धाएं प्रमाणित हैं-

१) ईश्वर एक है।

२) ईश्वर अवतार (सन्देष्ठा) द्वारा मानवजाति का मार्गदर्शन करता है।

३) ईश्वर पवित्र ग्रन्थों द्वारा अपना ज्ञान देता है।

४) एक दिन प्रलय होगा और इस ब्रम्हाण्ड का अन्त हो जाएगा।

मनुष्य को मरने के बाद परलोक में फिर अनन्त जीवन मिलेगा।

५) ईश्वर परलोक में कर्मों के आधार पर मनुष्य को स्वर्ग या नरक में रखेगा।

६) ईश्वर के आदेश से देवता (फरिश्ते) इस ब्रम्हाण्ड को चलाने की व्यवस्था करते रहते है।

७) अच्छा और बुरा भाग्य ईश्वर की तरफ से है।

२) प्रार्थना

हिन्दू धर्म में ईश्वर को प्रसन्न करने के और ईश्वर की प्रार्थना करने के चार तरीकों का आदेश है।

१) शारीरिक प्रार्थना करना इस में पवित्र मन्त्रों का जाप उपासना है। ध्यान लगाना है और अष्टांग करना है।
२) दान देना।
३) उपवास रखना।
४) पवित्र धाम की यात्रा करना।

३) जीवनशैली

कुछ श्लोक जो हिन्दू धर्म में जीवनशैली निर्धारित करते हैं वह निम्नलिखीत है-

मनुष्य सत्य के मार्ग पर विनम्रतापूर्वक चले।
(ऋग्वेद१०:३१:०२)

भाई, भाई से और बहन, बहन से व्देष न करे। एक मन और गति वाले होकर मंगलमयी बात करे। (अथर्ववेद३:३०:३)

मैं तुम्हारे लिए हार्दिक एकता, एकमनता और व्देष रहित भाव निर्धारित करता हूँ, परस्पर प्रेम रखो जैसे; गौ अपने बछड़े से प्रेम करती है।
(अथर्ववेद३:३०:१)

पुत्र पिता का अनुगत हो और माता के साथ एक मन वाला हो। (अथर्ववेद-३:३०:२)

पत्नी पति से मीठी मधुर वाणी बोलने वाली हो।
(अथर्ववेद-३:३०:२)

सत्कर्म करने का आदेश हर धर्म में होता है। वैसे ही वेदों में भी है। जो हम अध्याय नं. १४ में पढ़ेंगे।

****

१३. इस्लाम धर्म क्या है?

● इस्लाम का अर्थ है अपने आप को ईश्वर के हवाले कर देना। ईश्वर जेसी श्रद्धा रखने कहे वैसी श्रद्धा रखना है। जैसी प्रार्थना करने कहे वैसी प्रार्थना करना है। और जैसी जिन्दगी व्यतीत करने कहे वैसी ज़िन्दगी व्यतीत करना है।

● इस्लाम धर्म को समझने के लिए हम इस्लाम धर्म के धार्मिक ग्रन्थों के आधार पर इस धर्म की श्रद्धा, प्रार्थना और जीवनशैली को समझने का प्रयास करेंगे।

श्रद्धा

● इस्लाम धर्म में श्रद्धा को समझने के लिए अब हम निम्नलिखीत सात प्रश्नों के उत्तर का शोध करते है।

१) ईश्वर कौन?
२) ईश्वर के आदेश हम को किस के द्वारा मिले?
३) ईश्वर के आदेश हम को कैसे मिले?
४) क्या हमारा और इस सृष्टि का अंत होगा?
५) मरने के बाद क्या होगा?
६) ईश्वर सृष्टि का काम कैसे चलाता है?
७) भाग्य क्या है?

१. ईश्वर कौन है?

पवित्र कुरआन में ईश्वर के बारे में निम्नलिखित वर्णन है।

''कहो वह अल्लाह एक है, और अकेला है। अल्लाह संर्वसम्पन्न है। सबसे निरपेक्ष है और सब उसके मोहताज हैं। न उसकी कोई संतान है और न वह किसी की संतान है। और कोई उसका समकक्ष नही है।'' (पवित्र कुरआन ११२:१-४)

(अल्लाह संर्वसम्पन्न है का अर्थ है की वह किसी पर निर्भर नहीं।)

२) ईश्वर के आदेश हम को किस के द्वारा मिले?

पवित्र कुरान में लिखा है (ईश्वर कहता है कि) हमने जो रसूल (सन्देष्टा) भेजा है वह इसलिए भेजा है कि हमारे आदेशानुसार हमारा आज्ञापालन किया जाए। (पवित्र कुरआन ४:६४)

अर्थात ईश्वर अपने आदेश पैगम्बर द्वारा भेजता है। और वह पैगम्बर ईश्वर के आदेश बताने के साथ उसका पालन करके भी मानवजातिको बताते और सिखाते है।

३) ईश्वर के आदेश हम को कैसे मिले?

पवित्र कुरआन में लिखा है कि,

यह (कुरआन) अल्लाह की किताब हैं, इसमें कोई संदेह नहीं। मार्गदर्शन है उन डरनेवालों के लिए जो बिन देखे अल्लाह को मानते हैं। नमाज़ पढ़ते हैं, जो रोजी (धन) हम ने उनको दी है, उसमें से ख़र्च करते हैं, जो किताब (ग्रन्थ) तुम पर उतारी गई है (अर्थात् कुरआन) और जो किताबें तुम से पहले उतारी गई थीं उन सब पर ईमान लाते हैं (सब को सही मानते है), और परलोक (आख़िरत) में विश्वास रखते हैं। ऐसे लोग अपने रब की ओर से सीधे मार्ग पर हैं और वही सफलता प्राप्त करने वाले हैं।

अर्थात ईश्वर अवतारित ग्रन्थों द्वारा धर्म का ज्ञान देता है। और मार्गदर्शन देता है।

४) क्या हमारा और इस सृष्टी का अंत होगा?

पवित्र कुरआन में लिखा है,

"**प्रत्येक व्यक्ति को मृत्यु का स्वाद चखना** है और तुमको सम्पूर्ण बदला तो मात्र कियामत (प्रलय) के दिन मिलेगा। अतः जो व्यक्ति आग से बच जाए और जन्नत (स्वर्ग) में पहूँचा दिया जाए वास्तव में वही सफल रहा। और संसार का जीवन तो मात्र धोखे का सौदा है।" (पवित्र कुरआन ३:१८५)

• क्या इस सृष्टि का अंत होगा?

पवित्र कुरआन की एक सूरः (अध्याय) इस प्रकार है-

"(१) खड़खड़ाने वाली (२) क्या है खड़खड़ाने वाली (३) और तुम क्या जानो कि क्या है वह खड़खड़ाने वाली (४) जिस दिन लोग पतिंगों की तरफ बिखरे हुए होंगे। (५) पहाड़ धुनके हुए रंगीन उन की तरह हो जाऐंगे। फिर जिस व्यक्ति का (सत्कर्मों के कारण) पलड़ा भारी होगा (ईश्वर के न्याय के तराजू में) (७) वह मनभावन आराम में होगा (८) और जिस व्यक्ती का कर्मों का पलड़ा (पाप कर्मों के कारण) हलका होगा (९) तो उसका ठिकाना गढ़ढा (नरक) है। (१०) वह भड़कती हुई आग है।" (पवित्र कुरआन १०१ : १-११)

- पवित्र कुरआन के (अध्याय) सुरे अर-रहमान की आयत नं. ३७ के अनुसार कयामत के दिन आकाश लाल रंग का होगा। (पवित्र कुरआन ५५:३७)
- हजरत मुहम्मद (स.) ने कहा कयामत के दिन सूर्य धरती से केवल एक मील के अंतर पर होगा।
- अर्थात एक दिन धरती का अंत होगा। उस दिन को कयामत कहते है।

आधुनिक ज्ञान के अनुसार भी एक दिन इस सृष्टि का अन्त होगा। उस का वर्णन इस प्रकार है।

वैज्ञानिक तथ्य तथा आँकड़े (Scientific Facts and Figure)

सूर्य में Atomic Fusion की प्रक्रिया निरंतर होती रहती है। हेलियम गैस के दो एटम Fusion के द्वारा मिलकर एक By product बनाते है और इस प्रक्रिया में गर्मी और प्रकाश उत्पन्न होता हैं, जो हमारी Solar System और हम प्राप्त करते हैं। जिस प्रकार तेल और पेट्रोल पृथ्वी पर एक सीमित मात्रा में हैं और एक समय के पश्चात यह खर्च हो जायेंगे और खत्म हो जायेंगे, इसी प्रकार सूर्य में हेलियम गैस सीमित है और एक समय के पश्चात खर्च हो जाएगी। वैज्ञानिक अनुमान लगाते हैं कि इसे बहुत ज्यादा समय लगेगा, लेकिन कोई भी यह भविष्यवाणी नहीं कर सकता है कि यह कब होगा?

जब हेलियम गैस खर्च हो जाएगा और Fusion Process रूक जाएगा, तो सूर्य ठंठा होना शुरू हो जायेगा और सूर्य तथा इस सोलर सिस्टम के मरण की प्रक्रिया शुरू हो जायेगी। सूर्य गुलाबी होने और विस्तृत होना शुरू हो जायेगा और बुध, शुक्र, मंगल, पृथ्वी और कुछ ग्रहों जो पृथ्वी से परे है उन को भी अपने घेरे में ले लेगा। वह लंबे समय तक इस दशा में रहेगा, फिर सूर्य सिकुड़ना शुरू करेगा और एक ठोस मास बन जायेगा या ब्लेक होल बन जाएगा। जब गैस वाला सूर्य पृथ्वी को घेरे में लेगा, तब कोई रात नहीं होगी और लगातार वह एक दिन बहुत लंबे समय तक चलेगा।

पृथ्वी में गुरूत्वाकर्षण शक्ति (Gravitational force) है, जो प्रत्येक वस्तु को पृथ्वी के केन्द्र की ओर आकर्षित करती है। जब शक्तिशाली सूर्य का गोला पृथ्वी को अपने घेरे में ले लेगा तो सूर्य की गुरूत्वाकर्षण शक्ति को बेकार (Neutral) कर देगी। और पृथ्वी पर प्रत्येक वस्तु भार रहित (Weightless) महसूस करेगी। जिस प्रकार अंतरिक्ष यात्री अंतरिक्ष में महसूस करता है।

इसलिए पृथ्वी पर प्रत्येक वस्तु तैरना अथवा उड़ना शुरू कर देगी, जिस प्रकार वस्तुएँ अंतरिक्ष में रॉकेट के कॉकपिट में तैरती हैं अथवा आकाश में बादल उड़ते हैं।

तो जैसा वर्णन कयामत के बारे में धार्मिक ग्रन्थों में था विज्ञान ने उसकी पुष्टी कर दी है।

५) मरने के बाद क्या होगा?

पवित्र कुरआन में लिखा है-

"इन्कार करने वालों ने बड़े दावे से कहा है कि मरने के बाद हरगिज़ दोबारा न उठाए जाएंगे (जीवित किए जाएंगे)। उन से कहो, नहीं, मेरे रब की कसम तुम अवश्य उठाए जाओगे। फिर जरूर तुम्हें बताया जाएगा कि तुम ने धरती पर क्या कुछ किया है, और ऐसा करना अल्लाह के लिए बहुत आसान है।"

अतः अल्लाह पर ईमान लाओं और उसके सन्देष्ठा पर और उस प्रकाश (कुरआन) पर जो हमने (अल्लाह ने) उतारा है। और अल्लाह जानता है जो कुछ तुम करते हो। जिस दिन वह तुम सबको एक एकत्र होने के दिन (कयामत के दिन) एकत्र करेगा यही दिन पराजय-विजय का दिन होगा। और जो व्यक्ति अल्लाह पर ईमान लाया होगा और उसने अच्छे कर्म किए होंगे, अल्लाह उसके पाप उससे दूर कर देगा। और उसको ऐसे बागों (स्वर्ग) में प्रवेश करेगा जिनके नीचे नहरें बहती होगी। वह सदैव उसमें रहेंगे। यही है बड़ी सफलता। और जिन लोगों ने अवज्ञा की और हमारी आयतों को झुठलाया वही लोग आग (नरक) वाले है। उसमें वह सदैव रहेंगे, और वह बुरा ठिकाना है। (पवित्र कुरआन ६४:७-१०)

६) ईश्वर सृष्टी का काम कैसे चलता है?

पवित्र कुरआन में लिखा है,

ऐ लोगों जो इमान लाए हो। (इस्लाम धर्म स्वीकार किया है) बचाओं अपने आपको और अपने घर वालों को उस आग से जिसका इंधन इन्सान और पत्थर होंगे। जिस पर कठोर स्वभाव के सख्त पकड़ करने वाले फरिश्ते होंगे जो कभी अल्लाह के आदेश की अवहेलना नहीं करते और जो आदेश भी उन्हें दिया जाता है उसका पालन करते है।
(पवित्र कुरआन ६६:७)

स्वर्ग, नर्क, धरती, आकाश इन सब स्थान पर ईश्वर के आज्ञा के अनुसार फरिश्ते काम करते है।

७) भाग्य क्या है?

- हजरत अबादा बिन सामत फरमाते है की हजरत मुहम्मद (स.) ने फरमाया, अल्लाह ने सब से पहले जिस वस्तु का निर्माण किया वह कलम (Pen) है। फिर अल्लाह ने कलम को लिखने का आदेश दिया। कलम ने पुछा कि क्या लिखु? तो अल्लाह ने कहा भाग्य लिखो। तो कलम ने जो कुछ हो चुका है और जो होगा सब लिख दिया।
(तिरमीजी, बाहवाला-मुन्तखब अबवाब, Vol-1 Hadees No. 88)

- हजरत उम्मे सलमा (रजि.) ने हजरत मुहम्मद (स.) से कहा या रसूल अल्लाह। आप ने खैबर में जो जहरीली बकरी का गोश चख लिया था उस के कारण आप हर वर्ष बीमार हो जाते है। तो हजरत मुहम्मद (स.) ने कहा की मुझे जो कष्ट पहुचता है वह मेरे भाग्य में हजरत आदम (अ.स.) के जन्म से पहले ही लिख दिया गया था।

(इब्ने माजा, बा-हवाला, मुन्तखब अबवाब Vol-1 Hadees No. 117)

अर्थात भाग्य का अस्तित्व है और वही होता है जो भाग्य में लिखा होता है।

प्रार्थना :-

- हजरत मुहम्मद (स.) ने कहा इस्लाम की इमारत पांच स्तंभों पर खड़ी है। (अर्थात इस्लाम के पांच महत्त्वपूर्ण नियम है।)

१) कलमा

२) नमाज़

३) रोज़ा

४) ज़कात

५) हज

इस हदीस में जो पहला अंक कलमा है यह श्रद्धा से जुड़ा है जिस के बारे में अभी हमने पढ़ा।

कलमा का अर्थ है Statement या वाक्या। कुल सात कलमें है जो एक मुसलमान के श्रद्धा को लिखित रूप से स्पष्ट करते हैं। उस में जो पहला कलमा है वह इस प्रकार है।

● ''ईश्वर एक है। उस एक ईश्वर के सिवा कोई भी पूजने के योग्य नहीं है। और हजरत मुहम्मद ईश्वर के (अंतिम) सन्देष्ठा है।''

इस सत्य और तथ्य को हृदय से मानना और मुख से कहना इसे कलमा पढ़ना कहते हैं।

अरबी में इसे ऐसे पढ़ा जाता है;

''ला इलाहा इल्लल लाह, मोहम्मदूर रसूलल्लाह।''

जो कोई भी इसे हृदय से मानेगा और पढ़ेगा वह ईश्वर की नज़र में ईश्वर के मूल धर्म को मानने वाला होगा। अर्थात मुसलमान होगा।

● जो छठे नं. का कलमा है उसका नाम है कलमा-ए-मुफस्सल। मुफस्सल का अर्थ है विस्तार से किसी बात का बताना। तो इस कलमें में एक मुसलमान को और किन बातों पर विश्वास करना अनिवार्य है उसका विस्तार से वर्णन है। वह कलमा इस प्रकार है-

''आ मन तो बिल्लाहे व मलाएकातेही व कुतुबेही व रूसुलेही वल यवमील आखीर वल कदरे खैरेही व शररेही मीनल लाहे ताला वल बासे बादल मौत।''

इस कलमें में जो सात बातें कही गई हैं उन बातों को हर मुसलमान को सच मानना और उन पर श्रद्धा रखना अनिवार्य है। वह सात बाते है-

१) ईश्वर एक है।

२) सभी पैगम्बर सच्चे हैं।

३) सभी ईश्वरीय ग्रन्थ सच्चे हैं।

४) फरिश्तों का अस्तित्व है।

५) एक दिन प्रलय (कयामत) होगा।

६) हम अपने कर्मों का हिसाब देने कयामत में फिर जीवित किए जाएंगे ।

७) अच्छा और बुरा भाग्य ईश्वर की तरफ से है।

● ऐसे विश्वास रखने वाले व्यक्ति ने अगर पाप किए या जैसी प्रार्थना करनी चाहिए थी वैसी नहीं किया तो कुछ दिन नरक की सज़ा मिल सकती है। फिर उस के बाद वह स्वर्ग का हकदार होगा। और जो ईश्वर को एक नहीं मानता है वह चाहे जितना भी पुण्य करे, उसे सारे पुण्य का फल धरती पर ही मिलेगा। मृत्यु के बाद उस के भाग्य में केवल नरक होगा। ऐसी शिक्षा इस्लाम की है।

नमाज

नमाज़ के बारे में ईश्वर के आदेश इस प्रकार है।

● ''नमाज कायम करो सूरज ढलने से लेकर रात के अंधेरे तक और प्रातःकाल को कुरआन अवश्य पढ़ा करो। क्योंके प्रातःकाल फरिश्तों के हाज़िर होने का समय है।'' (पवित्र कुरआन १७:७८)

● ऐ लोगो जो एक ईश्वर में श्रद्धा रखते हो संयम (सब्र/Patience) और नमाज से मदद लो। (पवित्र कुरआन २:१५३)

नमाज़ के द्वारा ईश्वर से मद्द लेने का अर्थ हैं कि कठिन समय में नमाज़ क़ायम कर ईश्वर से कठिनाई दूर करने की प्रार्थना करो तो कठिनाई अवश्य दूर होती है।

● इस वर्ष २०१५ में वर्षा कम हुई। और सितंबर में ही वर्षा बंद हो गयी। तो मुसलमानों ने मुंबई में नागपाडा के पास मैदान में वर्षा (बारिश) के लिए नमाज़ पढ़ कर दुआ मांगी। तो कुछ दिन वर्षा हुई।

मगर फिर रूक गई। फिर उस के बाद भिवंडी में नमाज़ पढ़ कर दुआ मांगी तो फिर चार दिन वर्षा हुई।

आप इस बात को भविष्य में नोट करें के जब भी नमाज़ पढ़ कर वर्षा के लिए दुआ मागी जाएगी तो वर्षा अवश्य हो गई। चाहे वह कुछ दिन के लिए क्यों न हो।

तो नमाज़ एक बहुत प्रभावशाली ईश्वर के प्रार्थना की विधि है और ईश्वर की कृपा को जरूर आकर्षित करती है। नमाज यह ध्यान लगाना पवित्र आयतों को पढ़ना और (अष्टांग) सजदा करने का एक मिलाजूला तरीका है।

● नमाज में हम खडे होकर कुरआन की आयतों (मन्त्र) को पढ़ते हैं। झुककर ईश्वर की प्रशंसा करते है। सजदा (अष्टांग) करके ईश्वर की प्रशंसा करते हैं। और बैठकर ईश्वर में ध्यान लगाते है। यह संक्षिप्त में नमाज का तरीका है।

नमाज दिन में पांच बार पढ़ते हैं।

१. सूयोदय से पहले
२. दोपहर सूरज के कुछ ढलने के समय
३. दिन में तिसरे पहर
४. सूर्यास्त के बाद
५. रात के समय

एक समय की नमाज़ पढ़न में ५ मिनट से २० मिनट का समय लगता है।

रोजा (उपवास)

उपवास के बारे में ईश्वर ने पवित्र कुरआन में ऐसा आदेश दिया है; ''ऐ लोगों जो एक ईश्वर में श्रद्धा रखते हो, तुम्हारे लिए रोजे (उपवास) अनिवार्य कर दिए गए, जिस तरह तुम से पहले पैगम्बरों के अनुयायियों के लिए अनिवार्य किए गए थे। इस से आशा है कि तुम में परहेजगारी (ईश्वर से ड़रने) का गुण पैदा होगा।'' (पवित्र कुरआन २:१८३)

● इस आयत में दो बातों की तरफ ध्यान दीजिए।

पहली बात यह है की उपवास पहले ईश्वर द्वारा भेजे गए सभी धर्मों में भी अनिवार्य था। यह इस्लाम धर्म का कोई नया कर्मकांड नहीं है।

और दूसरी बात यह है कि उपवास का उद्देश भी ईश्वर ने स्पष्ट कर दिया है। उपवास व्यक्ति में ईश्वर से ड़र कर और ईश्वर के आदेशानुसार गुनाहों से बचने की शक्ति उत्पन्न करता है।

ईश्वर ने एक महीने उपवास रखने का आदेश दिया है। उपवास में सुर्यादय के ६० मिनट पहले से सूर्यास्त तक न कुछ खाना है और न कुछ पीना है। और यौन समन्ध से दूर रहना है।

दान

● दान क्यों दे?

हजरत अबु दरदा कहते हैं कि हजरत मुहम्मद (स.) ने कहा की ''समाज के कमजोर (गरीब) लोगों की सेवा करके मुझे प्रसन्न करो। क्योंकि अल्लाह तुम्हें उनके कारण ही धन देता है।''
(अहमद, अबु दाऊद, तिरमीजी, तर्जुमाने हदीस, Vol-2, No-231)

अर्थात ईश्वर सब को जीविका (रोजी-रोटी) देता है। श्रीमंत को कारोबार, नौकरी और खेती-बाड़ी से देता है, और निर्धन और असहाय को श्रीमंत के आमदनी में बढ़ोतरी करके देता है। तो हर श्रीमंत को जो आमदनी प्राप्त होती है, उस में गरीबों के हिस्से का धन भी ईश्वर की तरफ से भेजा हुआ होता है। इसलिए उनका हिस्सा उनको देना हर श्रीमंत के लिए अनिवार्य है।

● और समाज में मानवजाति के कल्याण के बहुत से ऐसे काम है जो अगर दान के पैसों से लोग करते रहे तो एक सुख-शान्ति वाले समाज का निर्माण होगा। समाज के काम जो दान के पैसों से करना हैं उस का वर्णन पवित्र कुरआन में इस प्रकार है-

"सदका (जकात/दान) तो वास्तव में निर्धनों और (आर्थिक तोर से) कमजोरों के लिए हैं, और उन कार्यकर्ताओं के लिए है जो जकात के कार्यों पर नियुक्त है (अर्थात दान जमा करने और बाटने वालों के पगार के लिए)। और उनके लिए जिनके दिलों को जोड़ना वंछित है। (अर्थात जिन के दिल में इस्लाम के बारे में अज्ञानता है उन तक सत्य ज्ञान पहुँचाने के लिए इस दान की रकम को खर्च कर सकते है।) इसके अतिरिक्त जकात की रकम गुलाम को अजाद कराने और कर्ज में डूबे लोगों का कर्जा चुकाने, और अल्लाह के मार्ग में (अर्थात सत्य धर्म की स्थापना और पुण्य काम में) और यात्रियों की सहायता के लिए है। यह एक आदेश है अल्लाह की ओर से और अल्लाह ज्ञानवाला विवेकवाला है।"

(पवित्र कुरआन ९:६०)

● अगर दान न दें तो क्या होगा?

पवित्र कुरआन में ईश्वर कहता है-"जो धन जमा करता है और उस को गिन गिन कर रखता है और सोचता है की उस का धन उस को अमर कर देगा। ऐसा कभी नहीं होगा। वह अवश्य हुतमा में डाला जाएगा। तुम जानते हो हुतमा क्या है? वह अल्लाह की भडकाई हुई आग है। जो हृदय तक जला देगी।"

(पवित्र कुरआन १०४:२/७)

(हुतमा एक भयानक नरक का नाम है।)

● दान देने से क्या लाभ होगा?

ईश्वर अपनी कृपा से मनुष्यों को धनदौलत देता है। मगर दान देने का आदेश देते समय यह नहीं कहता है कि जो धन में अपनी कृपा से तुमको दिया था वह गरीबों में बांट दो। बल्कि कहता है की जो दान तुम गरीबों में बांट दोगे वह में समझूंगा कि तुमने मुझे कर्ज (Loan) दिया है। फिर में यह कर्ज तुम को कई गुना बड़ा कर लौटाऊंगा। दान देने पर ईश्वर धरती पर भी मनुष्य के धन में बढोतरी करता है और मरने के बाद स्वर्ग का वादा किया है।

● इस विषय में पवित्र कुरआन कि कुछ आयतें इस प्रकार हैं-

"अगर तुम अल्लाह को अच्छा क़र्ज़ दो तो वह तुम्हें कई गुना बढ़ाकर देगा और तुम्हारे क़ुसूरों (पापों) को माफ़ करेगा, अल्लाह बड़ा गुणग्राहक (सत्य कर्मों की प्रशंसा करनेवाला) और सहनशील है।" (पवित्र कुरआन ६४:१७)

और यही बात सुरे रोम आयत ३९, सुरे बकर आयत २४५, सुरे हदीद आयत १८ में भी लिखी हुई है।

● वर्ष पुरा होने पर जो आप की बचत (Saving) है उस का २.५ प्रतिशत दान देना अनिवार्य है। दान आमदनी (Income) पर नहीं है बल्कि बचत पर है। कोई व्यक्ति करोड़ो रूपये कमाए, मगर बचत नहीं है तो (ज़कात) दान माफ है।

हज

● धरती के केन्द्र पर अगर विश्व के हर क्षेत्र से लोग आकर एक जैसे कपड़े में और एक जैसी प्रार्थना करें तो उस समय उपस्थित सभी व्यक्तियों में एक दूसरे से प्रेम की सदभावना उत्पन्न होती है। लोगों को एक दूसरे की जीवन शैली का पता चलता है। लोग अपनी श्रद्धा में आए बिगाड को सही करते है। इस तरह धर्म भी सुरक्षित रहता है और विश्व में एक दूसरे से प्रेम भी बढ़ता है। इस्लाम धर्म में धनवान लोगों पर हज अनिवार्य करने का ईश्वर का यह उद्देश हो सकता है।

● जब किसी की मृत्यु होती है तो उस व्यक्ति के घरवाला मृतक को कफन पहना कर शहर से बाहर कब्रिस्तान में दफन कर आते हैं।

मृतक कब्रिस्तान में प्रलय (कयामत) तक रहेगा। प्रलय के दिन ईश्वर सबको फिर जीवित करेगा। मृतक और सभी लोग प्रलय के दिन मैदाने-महशर (अपने कर्मों का हिसाब देने की जगह) पर जाएंगे। वह अपने कर्मों का हिसाब देंगे। और पुण्य अधिक हुए तो स्वर्ग वरना नरक मिलेगा।

हज, मरने से स्वर्ग/नरक में जाने तक जो होगा उसकी रिहर्सल (Rehearsal) है।

हाजी केवल दो कपड़े पहनता है। यह कफन पहनना हुआ। हज के अवसर पर वह मक्का शहर से बाहर टेन्ट में रहता है, यह कब्रिस्तान में रहना हुआ। उसके बाद वह अराफात के मैदान में जाकर पूरा दिन ईश्वर की प्रार्थना करता है। यह ईश्वर के सामने अपने कर्मों का हिसाब देना हुआ। अंतर इतना है प्रलय के दिन पाप अधिक हुए तो नरक निश्चित है। हज में हम ईश्वर से विनंती करके पाप माफ कराते है।

तो ईश्वर ने हज के द्वारा मानवजाति को अपने पाप माफ कराने का एक अवसर देकर उपकार किया है।

● हजरत अबु मूसा अशारी (रजि.) कहते है कि हजरत मुहम्मद (स.) ने फरमाया ''हाजी हज के बाद अपने गुनाहों से ऐसे पाक हो जाता है जैसे वह अपनी माँ के पेट से आज ही पैदा हुआ है।''

(हदीस-बज़ार)

● पवित्र कुरआन में हज के बारे में ईश्वर के निम्नलिखित आदेश हैं-

● अल्लाह की खुशनुदी (प्रसन्नता) के लिए जब हज और उमरा का निश्चय करो, तो उसे पूरा करो।

(पवित्र कुरआन २:१९६)

● निःसन्देह सबसे पहला उपासनागृह (इबादतगाह) जो मानवजाति के लिए निर्मित हुआ वह वही है जो मक्का में स्थित है। उसको भलाई और बरकत दी गई है और सारे संसार वालों के लिए मार्गदर्शन केन्द्र बनाया गया हैं। उसमें खुली निशानियाँ है, इब्राहीम का उपासना स्थल है, और उसका हाल यह है कि जिसने उसमें प्रवेश किया वह सुरक्षित हो गया। लोगों पर अल्लाह का यह हक (अधिकार) है कि जिसको उस घर तक पहुंचने की क्षमता प्राप्त हो वह इसका हज करे। (पवित्र कुरआन ३:९७)

● जिस के पास इतना धन है की वह मक्का जा कर आ सकता है। और उस के परिवार को उसके मक्का जाने से कोई आर्थिक तकलीफ नहीं होगी तो उस व्यक्ति को जीवन में एक बार मक्का जाकर हज करना अनिवार्य है।

जीवनशैली

● क्या हजरत मुहम्मद (स.) से पहले के लोग ईश्वर से अपरिचीत थे?

नहीं।

जो लोग हज़रत मुहम्मद (स.) से पहले और उनके युग में थे उन की मानसिक स्थिति या विश्वास हम पवित्र कुरआन की इस आयत से समझ सकते है;

● (हे मुहम्मद!, नकार करने वालो से कहो,) बताओ, अगर तुम जानते हो कि यह धरती और इसकी सारी मानवजाति किसकी है? ये ज़रूर कहेंगे अल्लाह की। कहो फिर तुम होश में क्यों नहीं आते? इनसे पूछो, सातों आसमानों और महान सिंहासन का मालिक कौन है? ये ज़रूर कहेंगे अल्लाह। कहो, फिर तुम अल्लाह से डरते क्यों नहीं? इनसे कहो, बताओ अगर तुम जानते हो कि हर चीज़ पर प्रभुत्व किसका है? और कौन है वह जो शरण देता है और उसके मुक़ाबले में कोई शरण नहीं दे सकता? ये अवश्य कहेंगे कि यह बात तो अल्लाह ही के लिए है। कहो, फिर कहाँ से तुमको धोखा लगता है (जब तुम एक ईश्वर को मानते हो तो इस्लाम धर्म स्वीकार करने से क्यों डरते हो?)

(पवित्र कुरआन सुरे मोमिनून आयत ८४.८६)

अर्थात ईश्वर एक है, और वही सारे ब्रम्हाण्ड का मालिक है। यह हजरत मुहम्मद (स.) के युग के लोग अच्छी तरह जानते थे। तो फिर हजरत मुहम्मद (स) का पैगम्बर बनकर पृथ्वी पर आने का क्या उद्देश्य था?

● उसका कारण यह था की वह लोग एक ईश्वर को तो मानते थे, मगर ईश्वर के साथ और बहुत सारे मूर्तियाँ की पूजा करते थे। और उसे ईश्वर की सत्ता में भागीदार मानते थे। और वह मूर्तियाँ किन की थी उस के बारे में पवित्र कुरआन में निम्नलिखित वर्णन है।

जिनको ये लोग पुकारते हैं (पूजते है) वे तो खुद अपने रब के पास पहुँच प्राप्त करने का वसीला ढूँढ

रहे हैं कि कौन उससे अधिक निकट हो जाए और वे उसकी दयालुता के उम्मीदवार और उसके अज़ाब से डरे हुए हैं। वास्तविकता यह है कि तेरे रब का अज़ाब है ही डरने के योग्य।

(सूरह बनी इस्राईल आयत ५७)

यानी वह लोग ऐसे महापुरूष जो ईश्वर की बहुत उपासना करते थे उन की मूर्ति बनाकर इस उद्देश्य से पूजते थे की यह तो ईश्वर के प्रिय है। यह हमारे लिए ईश्वर से सिफारिश करेंगे। या ईश्वर ने इनको कोई शक्ति दी होगी तो हमारा भला भी करेंगे।

हजरत मुहम्मद (स.) को ईश्वर द्वारा धरती पर पैगम्बर बना कर भेजने का पहला कारण यह था कि ऐसी श्रद्धा का सुधार हो जाए।

- पृथ्वी पर पैगम्बर बन कर आने का दुसरा कारण हजरत मुहम्मद (स.) ने इन शब्दों में बताया है। ''ईश्वर ने मुझे प्रेषित इसलिए बनाया है कि मानवजाति को सर्वश्रेष्ठ आचरण सिखाऊँ।''

(मोअत्ता, इमाम मालिक)

तो इस्लाम धर्म में जीवनशैली के दो मुख्य रूप है-

१) ईश्वर के सिवा और कोई नहीं जो मानवजाति का कुछ भी भला या बुरा कर सके, इस विश्वास के साथ जीवन व्यतीत करना।

२) सर्वश्रेष्ठ आचरण के साथ जीवन व्यतीत करना।

- निम्नलिखीत बातें इस्लाम में अनिवार्य नहीं है।

१) टोपी पहनना।
२) कुर्ता-पायजमा पहनना।
३) दाढी रखना।
४) खतना कराना।
५) मांसाहार करना।
६) इस्लामी नाम रखना।

जो महत्वपूर्ण बात इस्लाम में अनिवार्य है वह है की हर छोटे बड़े पाप से बचा जाए।

- आज इस्लाम धर्म को समझने की और हजरत मुहम्मद (स.) द्वारा बताए गए ईश्वर के आदेश पर चलने की जितनी आवश्यकता अन्य धर्मों के लोगों को है उतनी ही आवश्यकता खुद मुसलमानों को भी है।

****

'कुरआन में हिन्दू धर्म का उल्लेख' शीर्षक अध्याय का शेष भाग....

(ऋग्वेद ३:२९:३)

- इसी प्रकार पवित्र कुरआन की आयत नं (१६:४३-४४) में प्राचीन ग्रंथों को बाय्यनात और जूबुर कहा है। इस तरह पवित्र कुरआन में हिन्दू धर्म और वेदों दोनों का वर्णन है। मगर वह अरबी भाषा में होने के कारण साधारण व्यक्तियों के लिए उन्हें पहचानना संभव न था।

******

हिन्दू धर्म और इस्लाम धर्म की समानताएं

श्रद्धा

ईश्वर- वेद और कुरआन दोनों के अनुसार ईश्वर एक है और उस एक के सिवा और कोई पूजने के लायक नहीं है।

पैगम्बर- हिन्दू धर्म के ग्रन्थों में हमने हज़रत आदम, हज़रत नूह, हज़रत इब्राहीम, हजरत इस्माईल, हज़रत मुहम्मद के बारे में पढ़ा। इन सब को एक मुसलमान को मानना अनिवार्य है।

ग्रन्थ- दोनों धर्मों में जो ग्रन्थ हैं वह एक दुसरे की पुष्टि करते है। वेदों ने कुरआन को अन्तिम मशाल कहा (ऋग्वेद ३-२९-३) और कुरआन ने वेदों को सुहफे उला (आदीग्रन्थ) कहा।(कुरआन २६:१९६)

प्रलय- दोनों धर्मों में प्रलय, स्वर्ग, नरक और हिसाब किताब की मान्यता है।

फरिश्ते- गीता के अध्ययन से हमने जाना कि ईश्वर की प्रार्थना करनेवाले और उसके आदेश के अनुसार स्वर्ग में व्यवस्था करनेवालो को देवता कहा गया है।(भगवद् गीता ९:२०)

मुसलमान ऐसे जीवों को फरिश्ते कहते है।

भाग्य- दोनों धर्म में भाग्य ईश्वर की तरफ से है ऐसा मानना है।

प्रार्थना

हिन्दू धर्म में ध्यान लगाना, ईश्वर की प्रशंसा के वेदों के मन्त्र पढ़ना और अष्टांग करना, और इस्लाम में नमाज पढ़ना यह एक जैसी ईश्वर की प्रार्थना है।

दान- दोनों धर्मों में दान देने के आदेश है।

उपवास- दोनों धर्मों में उपवास के आदेश है।

यात्रा/हज- हिन्दू धर्म में ईश्वर के घर की यात्रा करने का और इस्लाम धर्म में हज करने का बहुत महत्व है।

ऊपर बताए गए वर्णन से हमे पता चलता है कि हिन्दू धर्म की मूल शिक्षा और इस्लाम धर्म की मूल शिक्षा में बहुत समानताए है।

दोनों धर्मों की मूल शिक्षाओं में इतनी समानताए क्यों है?

पवित्र कुरआन की एक आयत इस प्रकार है-

● उसने (ईश्वर ने) तुम्हारे लिए धर्म की वही पद्धति नियुक्त की है जिसका आदेश उसने नूह (मनु) को दिया था। और जिसे (ऐ मुहम्मद) अब तुम्हारी ओर हमने प्रकाशना (वही/Revelation) के द्वारा भेजी है, और जिसका आदेश हम इबराहीम और मूसा और ईसा को दे चुके हैं, इस ताकीद के साथ कि कायम करो इस दीन (धर्म) को और इसमें अलग-अलग न हो जाओ। (पवित्र कुरआन ४२:१३)

अगर हम ऐसा माने कि हिन्दू धर्म कि शिक्षा और धर्म के कानून मनु (हजरत नूह) की शिक्षा के अनुसार है।

तो ईश्वर ने वही शिक्षा हजरत मुहम्मद (स.) को भी दी है, जो आयत (४२:१३) से सिद्ध है। इसी लिए दोनों धर्मों की मूल शिक्षाएं एक समान है।

क्या वैदिक धर्म ही इस्लाम धर्म हैं?

● डा. वेद प्रकाश उपाध्याय अपनी पुस्तक 'वेदो और पुराणों के आधार पर धार्मिक एकता की ज्योति' की प्रस्तावना में पेज नं. ५ पर लिखते है। भविष्य पुराण में कही-कही इस्लाम धर्म को 'नैगम धर्मम' कहा गया है जिस का अर्थ है वैदिक धर्म।

इसी पुस्तक में पेज नं. २२ में हजरत मुहम्मद (स.) की भविष्य वाणी का वर्णन करते हुए डॉ.वेद प्रकाश जी ने भविष्यपुराण के प्रतिसर्ग पर्व तृतीय खण्ड एवं तृतीय अध्याय के निम्नलिखित श्लोक का ऐसा

अनुवाद किया है-

रात्रौ स देवरूपश्च बहुमायाविशारदः।
पैशाचं देहमास्थाय भोजराजं हि सोऽब्रवीत।।
आर्य धर्मो हि ते राजन सर्वधर्मोत्तमः स्मृतः।
ईशाज्ञया करिष्यामि पैशाचं धर्मदारूणम।।
रात्री में कोई देवदूत पैशाचदेह धारण करके राजा भोज से बोला कि ''हे राजन! यद्यपि तुम्हारा आर्य धर्म सभी धर्मों से उत्तम है, फिर भी इसी धर्म को पैशाचधर्म नाम से ईश्वर की आज्ञा से स्थापित करूंगा।''

अर्थात मनु का सिखाया हुआ आर्य धर्म सबसे प्राचीन और सत्य धर्म था। और उसी धर्म को ईश्वर ने हर पैगम्बर के साथ भेजा है। इस्लाम भी ईश्वर का भेजा हुआ वही मूल धर्म है, जिसे अब ईश्वर भारत देश (और सारे विश्व में) फैलाएगा।

● महर्षि वेद व्यास जी इस का कारण भविष्य पुराण में यह बताते हैं-

● भ्रष्टाचार और हिंसा पवित्र काशी के सात शहरों में फेल गया है। भारत में अब राक्षस, साभार भिल और जाहील (अज्ञानी) रहते है। मलिच्छों के देश में मलिच्छ बुद्धिमान और वीर है। सभी उत्तम गुण मुसलमानों में हैं। और अपराधी आर्य देश में जमा हो गए है। इसलिए भारत देश में भी इस्लाम फैलेगा। यह जानने के बाद है मुनि ईश्वर की प्रशंसा करे।

(भविष्य पुराण 1,4,21-23, Mohammed in world Scripture by A.H. Vidyarthi)

● मैं कोई विद्वान नही। एक विद्यार्थी हुँ और मैं गलती भी कर सकता हूँ। मगर मैंने जो कुछ पढ़ा उस से यह बात समझ में आती है की मनु (हजरत नूह) भारत देश में हूए थे। आप ने जो धर्म लोगों को सिखाया वह वेदीक धर्म या आर्य धर्म था।

जैसे-जैसे समय बितता गया भारतवासी और विश्व के बहुत से लोग अपने अपने धर्मगुरू की शिक्षा से दूर हो गए, तो ईश्वर ने अपने मूल धर्म को फिर से हजरत मुहम्मद (स.) के द्वारा धरती पर भेजा। विश्व में और भारत में जो भी ईश्वर से सत्य मार्ग जानने की प्रार्थना और इच्छा करेगा, उसे ईश्वर इसी मूल धर्म की शिक्षा देगा।

(सत्य क्या है यह ईश्वर ही जानता है। मैंने जो शोध किया वह आप के सामने प्रस्तुत कर दिया है। ईश्वर हमें सत्य मार्ग पर चलने की समझ और शक्ति दे।)

● इन्द्र ऋतुं न आ भर (अथर्ववेद १८:०३:६७)

"हे परमेश्वर तू हमें तत्वदर्शिता से भर दे।"

● इन्द्र ऋतु न आ भर पिता पुत्रेभ्यो यथा। शिक्षा णो अस्मिन् पुरूहूत यामनि जीवा ज्योतिरशीमहि।। (अर्थवेद.१८:३:६७)

''परमेश्वर इस मार्ग में हमें शिक्षा (ज्ञान) दे। हम जीते हुए प्रकाश को पायें।''

****

१४. पवित्र कुरआन और पवित्र वेदों के एकसमान श्लोक

पवित्र वेद और पवित्र कुरआन के हज़ारों एक समान श्लोक इन पवित्र ग्रन्थों में तलाश किए जा सकते हैं। मगर हमारा उद्देश्य आप को सारे एक समान श्लोकों से परिचित कराना नहीं है बल्कि केवल आप को इस बात का यकीन दिलाना है कि सभी पवित्र ग्रन्थों में एक ईश्वर की प्रार्थना करने, और सत्य के मार्ग पर चलने के एक समान आदेश ही हैं। अगर कोई व्यक्ति यह कहता है कि किसी धार्मिक ग्रन्थ में लोगों की हत्या करने और दंगा फसाद फैलाने के आदेश हैं तो उस व्यक्ति को या तो उस ग्रन्थ का सम्पूर्ण ज्ञान नहीं है, या वह व्यक्ति खुद उग्रवादी गुटों से है और समाज में नफरत फैलाना चाहता है।

आप की अधिक जानकारी के लिए हम ८० से अधिक एक समान श्लोक इस पुस्तक में प्रस्तुत कर रहे हैं।

ईश्वर की प्रार्थना संबन्धित श्लोक

पवित्र वेदों के श्लोक	पवित्र क़ुरआन के श्लोक
● होतारं सत्ययजं रोदस्योरूत्तान हस्तो नमसा विवासेत। (ऋगवेद. ६:१६:४६) पुजनीय, आकाश व पृथ्वी को सत्य के मार्ग पर चलाने वाले परमेश्वर से विनम्रता पूर्वक हाथ ऊपर उठाकर प्रार्थना करो।	● उद्‌ऊ रब्बुकुम् त-जर्रुअं व्‌-व ख़ुफ़्य इन्नहू लायुहिब्बुल-मुअ-तदीन (क़ुरआन ७:५५) अपने रब को पुकारो गिडगिड़ाते हुए और चुपके-चुपके यक़िनन वह सीमा का उल्लघंन करनेवालों को पसन्द नहीं करता।
● तस्य ते भक्तिवांसः स्याम (अर्थवेद ०६:७८:३) 'हे प्रभू! हम तेरे ही भक्त हों।'	● इय्या-क नअ़्बुदु व इय्या-क नस्तअीन (क़ुरआन १:४) हम तेरी ही बंदगी करते हैं और तुझी से मदद मांगते हैं।
● अवनो वृजिना शिषी हि (ऋगवेद १०:१०५:८) 'हे परमेश्वर आप हमारे पापों को हमसे दूर किजीए।'	● रब्बना फागफिरलना जुनूबना व कफ़्फ़िर अन्ना सय्यिआतिना (क़ुरआन ३:१६३) ऐ हमारे मालिक, जो अपराध हमसे हुए हैं उनको क्षमा कर दे। जो बुराइयाँ हममें हैं उन्हें दूर कर दे और हमारा अन्त नेक लोगों के साथ कर।
● अवशसा निःषसा यत् पराशसोपारिम जाग्रतो यत् स्वपन्तः। (अर्थववेद०६:४५:२) 'जो पाप विश्वासघात, घृणा, या अपवाद से और जो पाप जागते या सोते हुए हमने किए हैं। हे परमेश्वर उन सभी अप्रिय दुष्कर्मों को हम से दूर कर दे।'	● रब्बना ला तुआख़िज़्ना इन् नसीना अव् अख़ताना। रब्बाना वला तह्‌मिल अलैना इस्‌रन कमा हमलूतहु अललू लज़ीना मिन क़ब्लिना, रब्बना वला तुहम्मिलूना मा ला ता-कता लना बिहि। वअ़ूफ़ुअन्ना वग़्फिर लना वर् हम्ना अन्-त मौलाना (क़ुरआन २:२८६) ऐ हमारे रब, हमसे भूलचूक में जो ख़ताएँ हो जाएँ उनपर पकड़ न कर। मालिक, हमपर वह बोझ न डाल, जो तुने हमसे पहले लोगों पर डाले थे। ऐ हमारे रब, जिस बोझ को उठाने की ताक़त हममें नहीं है, वह हमपर न रख। हमारे साथ नरमी कर, हमें माफ़ कर दे, हमपर दया कर, तू हमारा स्वामी है, इन्कार करनेवालों के मुक़ाबले में हमारी मदद कर।

पवित्र वेदों के श्लोक	पवित्र क़ुरआन के श्लोक
● इन्द्र ऋतु न आ भर पिता पुत्रेभ्यो यथा। शिक्षा णो अस्मिन् पुरूहूत यामनि जीवा ज्योतिरशीमहि।। (अर्थवेद.१८:३:६७) 'परमेश्वर इस मार्ग में हमें शिक्षा (ज्ञान) दे। हम जीते हुए प्रकाश को पायें।	● युअतिल्-हिकम-त मंय्यशा-उ व मंय्युअतल्-हिक्म्-त फ-कद ऊति-य खयरन् कसीरन् व यज्जक्करू इल्ला उलूल-अलबाब (कुरआन २:२६६) जिसको चाहता है हिकमत (तत्वदर्शिता) प्रदान करता है, और जिसे हिकमत (तत्वज्ञान) मिली, उसे वास्तव में बड़ी दौलत मिल गई। इन बातों से सिर्फ़ वही लोग शिक्षा ग्रहण करते है, जो बुद्धिमान हैं।
● शनः कुरू प्रजाभ्यः (यर्जुरवेद. ७:८६:०३) हे प्रभु! हमारी संतान का कल्याण करो।	● व अस्लिह ली फी ज़ुर्रिय्यती (कुरआन ४६:१५) मेरी सन्तान को भी नेक बनाकर मुझे सुख दे।
● यत्रानन्दाश्च मोदाष्च मुदः प्रमुद आसते। कामस्य यत्राप्ताः कामास्तत्र माममृतं कुधी।। (ऋगवेद. ९:११३:११) हे प्रभु! आनन्द और स्नेह जहां वर्तमान रहते हैं, जहां सभी कामनाएं इच्छा होते ही पूर्ण हो जाती हैं उसी अमर लोक में मुझे निवास दो।	● वफ़ीहा मा तश्तहीहिल्-अन्फुसु व त-लज्ज़ुल्-अअ-युनि व अन्तुम् फ़ीहा खालिदून (कुरआन ४३:७१) उनके आगे सोने की थालिआँ और जाम-सागर फिराए जाएँगे और हर मनभाती और निगाहों को लज़्ज़त देनेवाली चीज़ वहाँ मौजूद होगी। उनसे कहा जाएगा, तुम अब यहाँ हमेशा रहोगे।
● श्रद्धां प्रातर्हवामहे श्रद्धां मध्यंदिनं परि। श्रद्धां सूर्यस्य जिम्रुचि श्रद्धे श्रद्धापयेह नः।। (ऋग्वेद. १०:१५१:०५) श्रद्धा का हम प्रातः काल में श्रद्धा का दिन के मध्य में, और सूर्य के अस्त होने पर आव्हान करते है। है श्रद्धे हमें लोक में श्रद्धा युक्त करे।	● व सब्बिह बिहम्दि रब्बि-क कब्-ल तुलअिश -शम्सि व कब्-ल गुरूबिहा व मिन् आनाइल्लयलि फ- सब्बिह व अत-राफन्नहारी ल-अल्लक-क तर्ज़ा। व-ला तमुद्-दन्-न ऐनय-क इला मा मत्तअ -ना बिही अज्वाजम् मिन्हुम् जह्-र-तल् -हयातिददून्या। लिनफतिनहुम् फीहि। (कुरआन २०:१३०-१३१) ऐ नबी, जो बातें ये लोग बनाते हैं उनपर सब्र करो, और अपने रब के गुणगान और प्रशंसा के साथ उसकी बड़ाई बयान करो सूरज निकलने से पहले, और सूरज डूबने से पहले, और रात की घड़ियों (समय) में भी तसबीह करो और दिन के किनारों पर भी, (अल्लाह तुम्हें इसका इतना अच्छा बदला देगा की शायद कि) तुम राज़ी हो जाओ।
● वयं देंवानां समतौ स्याम (अथर्ववेद. ६:४७:०२) हम सत पुरूषों की शुभ मति में रहें।	● व अद्ख़िल्नी बिरह्मति-क फी अ़िबादिकस् -सालिहीन (कुरआन २७:१९) अपनी दयालुता से मुझको अपने अच्छे बन्दों में दाखिल कर।

पवित्र वेदों के श्लोक	पवित्र कुरआन के श्लोक
● नय सुपथा राय अस्मान (यर्जुरवेद ४०:१६) 'हमको हमारे कल्याण के लिए सद्मार्ग पर ले चल!'	● इह्दनस-सिरातूल्मुस्क़ीम (कुरआन १:५) हमें सीधा मार्ग दिखा।
● इन्द्र ऋतुं न आ भर (अर्थवेद १८:०३:६७) हे परमेश्वर तू हमें तत्वदर्शिता से भर दे।' ● सं श्रुतेन गमेमहि (अर्थवेद ०१:०१:४) हे परमेश्वर! हम ब्रम्हज्ञान से युक्त हों!	● रब्बि जिदनी अिल्मा (कुरआन २०:११४) ऐ पालनहार! मुझे और अधिक ज्ञान प्रदान कर।
● अग्निः प्रातः सवने पात्वस्मान् वैश्चानरो विश्वशंभुः। (अर्थवेद ०६:४७:०१) सब मनुष्यों के प्रिय, जगदुत्पादक, सबके कल्याण कारी परमेश्वर प्रातः काल की उपासना में हमारी रक्षा करें।	● वलायुहीतू-नबिशैइम्मिन् अ़िल्मिही इल्ला बिमा शा-अ वसि-अ़ कुर्सिय्युहुस्समावाति वल्अर्ज (कुरआन २:२५५) अल्लाह, वह जीवन्त शाश्वत सत्ता, जो सम्पूर्ण जगत् को सँभाले हुए है, उसके सिवा कोई ख़ुदा नहीं है। वह न सोता है और न उसे ऊँघ लगती है। ज़मीन और आसमानों में जो कुछ है उसी का है। ● व कुर्आनल्-फजिर इन-न-कुरआनंल -फजिर का-न मश्हूदा (कुरआन १७:७८) नमाज़ क़ायम करो सूरज ढलने से लेकर रात के अँधेरे तक और फ़ज्र का क़ुरआन साक्षात् होता है (फरिश्ते उस वक्त हाजीर होते है।)।
● तस्य वयं हेडिसि मापि भूम सुमृडीके अस्य सुमतो स्याम्। (अर्थवेद ०७:२०:३) हम उस परमेश्वर के क्रोध में कभी न होवें, उसकी करूणा और सुमति में बने रहें।	● रब्बना ला तुजिग़ कुटूबना बअ्दा इज़् हदैतना व हब लना मिलू लदुन्का रह्मा। इन्नका अन्तल वहाब (कुरआन ३:८) पालनहार, जब तू हमें सीधे रास्ते पर लगा चुका है, तो फिर कहीं हमारे दिलों में टेढन पैदा ना कर देना। हमें अपने दयानिधि से दयालुता प्रदान कर कि तू ही वास्तविक दाता है।
● ऋत्वः समहदीनता प्रतीपं जगमा शुचे मृला सुक्षत्र मृलय।। (ऋगवेद. ७:८६:०३) हे सर्वशक्तिमान परमेश्वर! हम अपनी अज्ञानता से पथभ्रष्ठ होते हैं। हम पर कृपा करें।	● इन्नल्ला-ह ला यज्लिमुन्ना-स यशअंव्-व ला किन्नन्ना-स अन्फुसहुम् यज्लिमून (कुरआन १०:४४) यह है कि अल्लाह लोगों पर जुल्म नहीं करता, लोग खुद ही अपने ऊपर ज़ुल्म करते हैं।

ईश्वर की उपासना से संबन्धित श्लोक

पवित्र वेदों के श्लोक	पवित्र कुरआन के श्लोक
• भुवनस्य यस्पतिके एव नमस्यो विक्ष्वीडयः (अथर्ववेद २:२:१) ब्रम्हाण्ड का वह एक ही स्वामी, सभी प्रजाओं व्दारा सिर झुकाने व उपासना करने योग्य है।	• रब्बुस्समावाति वलअर्जि व मा बयनहुमा फअ्-बुदहु वस्तबिर् लिअिबादतिही हल् तअ्-लमु लहू समिय्या (कुरआन १६:६५) वह रब है आसमानों का और ज़मीन का और उन सारी चीज़ों के बीच में हैं, अतः तुम उसकी बन्दगी करो और उसी की बन्दगी पर जमें रहो। क्या है कोई हस्ती तुम्हारे ज्ञान में उसकी समकक्ष?
• य एक इ त्तमुष्टु हि कृष्टिनां विचर्षणिः। (ऋग्वेद ६:४५:१६) जो मनुष्यों को देखने वाला एक ही है उसी की स्तुति करो।	• हु-वल्लाहुल्लजी ला इला-ह इल्ला हुव आलिमुल गयबि वश्शहादति (कुरआन ५६:२२) वह अल्लाह ही है जिसके सिवा कोई पूज्य नहीं, अदृश्य और प्रकट हर चीज़ को जानता है। वह महान है और हर हाल में सर्वोच्च रहनेवाला है। वही सर्वोच्च करूणामय और दयावान है।
• न भवत्विद्रं ऊती (ऋग्वेद १:१००:१) वह ईश्वर हमारी सहायता करें।	• कबीरूल्-मु-अत-आल (कुरआन १३:६) वह छिपे और खुले हर चीज़ को मानता है। वह महान है और हर हाल में सर्वोच्च रहनेवाला है।
• अध्दा देव महा (अथर्ववेद २०:५८:३) ईश्वर निश्चय ही महान है।	• अ-लम् तअ-लम् अन्नल्ला-ह-लहू मुल्कुस्समावाति वल्अर्जि व मा लकुम् मिन् दुनिल्लाहि मिव्वलिय्यिंव-व ला नसीर (कुरआन २:१०७) क्या तुम्हें पता नहीं कि धरती और आकाशों का शासन अल्लाह ही के लिए है और उसके सिवा कोई तुम्हारा संरक्षक और तुम्हारा मददगार नहीं है?
• मही देवस्य सवितः परिष्टुतिः (ऋग्वेद ५:८१:१) इस संसार के बनाने वाले के लिए स्तुति है।	• इय्या-क नअ्बुदु व इय्या-क नस्तअीन (कुरआन १:४) हम तेरी ही बंदगी करते हैं औा तुझी से मदद मांगते हैं।
• वसुर्दयामान (ऋग्वेद ३:३४:१) जो देने वाला और दयावान है।	• अल्हम्दु लिल्लाहि रब्बिल-आलमीन अर्रहमानिर्रहीम (कुरआन १:१) प्रशंसा अल्लाह ही के लिए है जो सारे जहान का रब है।

पवित्र वेदों के श्लोक	पवित्र कुरआन के श्लोक
● महेचन त्वामद्रिवः पराशुल्काय देयाम। न सहस्त्राय नायुताय बज्रि वो न शताय शतामध।। (ऋग्वेद ८:१:५) हे सर्वशक्तिमान परमेश्वर! तू इतना मूल्यवान है कि में तुझको किसी शुल्क के लिए भी नहीं छोड़ सकता। न हजारों के लिए न अरबों के लिए न सैंकड़ो के लिए।	● व ला तश्तरू बि आयाती स-म-नन् कलीलंव् (कुरआन २:४१) अतः सबसे पहले तुम ही उसके इन्कार करनेवाले न बनो। थोड़े मूल्य पर मेरी आयतों को न बेच डालो और मेरे प्रकोप से बचो। असत्य का रंग चढ़ाकर सत्य को संदिग्ध न बनाओ और न जानते-बुझते सत्य को छिपाने का प्रयास करो।
● यस्येमे हिमवन्तो महित्वा यस्य समुद्रं रसया सहाहुः। यस्येमाः प्रदिशो यस्य बाहू कस्मै देवाय हविषा विधेम। (ऋग्वेद १०:१२१:४) हिम से ढके पर्वत जिसकी महिमा कहते हैं। नदियों सहित समुद्र जिसकी महिमा कहते हैं। समस्त दिशाएं जिसकी भुजाएं समान हैं। उसके अतिरिक्त हम किस देव की भक्ति पूर्वक उपासना करें?	● अम्म्न् ज-अ-लल् अर-ज करांरव-व ज-अ-ल खिलालहा अन्हारंव-व ज-अ-ल लहा खासि-व ज-अ-ल बयनल्-बहरयनि हाजिजन् अ इलाहुम-म अल्लाहि बल् अक्सरूहुम ला यअ-लमून् (कुरआन २७:६१) और वह कौन है जिसने ज़मीन को ठहरने का स्थान बनाया और उसके अन्दर नदियाँ प्रवाहित कीं और उसमें पहाड़ो की मेखे खूँटे गाड़ दीं और पानी के दो भण्डारों के बीच परदे डाल दिए? क्या अल्लाह के साथ कोई और पूज्य-प्रभु भी (इन कामों में सहभागी) है? नहीं, बल्कि इनमें से ज़्यादातर लोग नादान हैं।

ईश्वर की कृपा के श्लोक

● न भोजा मम्रुनं न्यर्थमीयुनं रष्यिन्ति न व्यथन्ते ह भोजाः। इदं यिव्दश्चं भुवनं स्वश्चैतत्सर्व दक्षिणैभ्यो दूदाति। (ऋग्वेद १०:१६७:८) दानशील लोग अमर हो जाते हैं, वे न तो बर्बाद होतें हैं और न दुःख, क्लेश, भय से पीड़ित होते हैं। दान इन दाताओं को इस विश्व एवं स्वर्ग लोक की सुविधाएं प्रदान करता है।	● अल्लजी-न युन्फिकू-न अम्वालहुम् बिल्लयलि वन्नहारि सिर्रवं-व अलानि-यतन् फ लहुम् अजूरूहुम् अिन-द रब्बिहिम् व ला खवफुन् अलयहिम् व ला हुम् यहजनून (कुरआन २:२७४) जो लोग अपने माल रात-दिन खुले और छिपे ख़र्च करते हैं उनका बदला उनके रब के पास है और उनके लिए किसी ख़ौफ और रंज की बात नहीं।

● सइद् भोगो यो गृहवे ददात्यन्न कामाय चरते कृशाय।
अरमस्मै भवति यामहूता उतापरीषु कृणुते सखायम।। (ऋग्वेद १०:११७:३)

जो निर्धनों और अभाव से पीड़ितों की सहायता के लिए दान करता है उसका भला होता है, उसके शत्रु भी उसके मित्र बन जाते हैं।

● वज्ज़रा-इ वल काज़िमीनल-गयज वलूआफ़ि-न अनिन्नासि वल्लाहु युहिब्बुल-मुहसिनीन (कुरआन ३:१३४)
जो प्रत्येक दशा में अपना माल ख़र्च करते हैं चाहे बुरे हाल में हों या अच्छे हाल में, जो गुस्से को पी जाते हैं और दूसरों के कुसूर को माफ़ कर देते हैं ऐसे नेक लोग अल्लाह को बहुत प्रिय है।

● यह एक इद् विद्यतेवसुं मर्ताय दाशुषे (ऋग्वेद १:८४:७)
परमेश्वर एक है वही दानशील मनुष्य को बहुत प्रकार जीविका देती है।

● व अन्फिकू खयरलू-लिअन्फुसिकुम् (कुरआन ६४:१६)
अपना माल ख़र्च करो, यह तुम्हारे ही लिए अच्छा है।

● इन् तुक्रिजुल्ला-ह कर्-जन् ह-स-नंय्युज़ाअिफ़्हु लकुम् व यग्फिर् लकुम् (कुरआन ६४:१७)

अगर तुम अल्लाह को अच्छा क़र्ज़ दो तो वह तुम्हें कई गुना बढ़ाकर देगा और तुम्हारे क़ुसूरों (पापों) को माफ करेगा।

● स्वयं यजस्व स्वयं जुषस्व (यजुर्वेद.३:१५)
तू ही कर्म कर और तू ही उसका फल भोग।

● अल्ला तंजिरू वाजिरतु वविज्-र उखरा (कुरआन ५३:३८)
हर आदमी ने जो कमाई की है, उसका फल उसी के लिए है और बुराई समेटी है, उसका वबाल उसी पर है।

● पवमान ऋतं बृहच्छुं ज्योतिरजीजनत्। (ऋग्वेद ९:६६:२४)

पावक विधान ने अति उज्जवल ज्योति को जन्म दिया और काले अंधकार को नष्ट किया।

● किताबुन् अन्जल्नाहु इलय-क लितुख़्रिजन्ना-स मिनज्जुलुमाति इलन्नूरि (कुरआन १४:१)

ऐ मुहम्मद! यह एक किताब है जिसको हमने तुम्हारी ओर अवतरीत किया है ताकि तुम लोगों को अँधेरों से निकालकर प्रकाश में लाओ, उनके रब की मेहरबानी से, उस ईश्वर के मार्ग पर जो प्रभुत्वशाली और अपने आप में प्रशंसनीय है।

पवित्र वेदों के श्लोक	पवित्र कुरआन के श्लोक
• न ऋते श्रान्तस्य सख्याय देवाः (यजुर्रवेद४:३३:११) बिना परिश्रम किए देवताओं को भी ईश्वर का आशीर्वाद नहीं मिलता।	• अम् हसिब्तुम् अन् तद्खुलल-जन्न-त व लम्मा यअ् लमिल्लाहुल्लजी-न जाहदू मिन्कुम व यअ-ल-मस्साबिरीन (कुरआन २:२१४) जिनको ये लोग पुकारते हैं यानी देवी देवता वे तो खुद अपने रब के पास पहूँच प्राप्त करने का वसीला ढूंढ रहे है कि कौन उससे अधिक निकट हो जाए और वे उसकी दयालुता के उम्मीदवार और उसके अज़ाब से डरे हुए हैं। वास्तविकता यह है कि तेरे रब का अज़ाब है ही डरने के योग्य।

ईश्वर कौन है? (उसकी महानता का वर्णन)

• न तस्य प्रतिमा अस्ति (यर्जुरवेद १०:७१:४) उस परमेश्वर की कोई प्रतिमा नहीं हैं।	• लय-स कमिस्लिही शयउन (कुरआन ४२:११) संसार की कोई चीज़ उसके सदृश नहीं (उसके जैसी नही)।
• इंन्द्रं मित्रं वरूमग्निमाहु रथो दिव्यः स सुपर्णो गरूत्मान्। एकं सव्दिपा बहुधा वदन्त्यग्नि यमं मातरिश्चानमाहुः।। (ऋग्वेद११:११४:५) वह ईश्वर ही मित्र, वरूण एवं आकाश में गुरूम्तान है वही अग्नि, यम और मातरिश्वा है। विव्दान जन एक ब्रम्ह को ही अनेक नामों से पुकारते हैं।	• अल्मलिकुल्-कुद्दुसुरसलामुल-मुअमिनुल्-मुह्यमिनुल्-अजीजुल-जब्बारूल-मु-त-क कब्बिरू सुब्हानल्लाहि अम्मा युश्रिकून हुवल्लाहुल -खालिकुल-बारिउल्-मुसव्विरू लहुल अस्माउल-हुस्ना (कुरआन ५६:२४) वह अल्लाह ही है जो सृष्टि की योजना बनानेवाला और उसको लागू करनेवाला और उसके अनुसार रूप बनानेवाला है। इसके लिए उत्तम नाम हैं। हर चीज़ जो आसमानों और ज़मीन में है उसकी तसबीह गुणगान कर रही है, और वह प्रभुत्वशाली और तत्वदर्शी है।
• विश्वस्य मिषतो वशी (ऋग्वेद १०:१६०:२) वह सब प्राणियों को वश में रखता हैं।	• व हुवल्काहिरू फ़ौ-क् अ़िबादिही (कुरआन ६:१८) उसे अपने सेवकों पर पूर्ण अधिकार प्राप्त है, और वह जानता और खबर रखता है।

• पतिर्बभूथासमो जनानमेको विश्यवस्य भवनस्य राजा। (ऋग्वेद ०६:३६:०४) वह मणुष्यों का स्वामी है जिसके समान कोई नहीं, सब लोगों का एकमात्र शासक हैं।	• जालिकुमुल्लाहु रब्बुकुम् लहुल्मुल्कु ला इला-ह इल्ला हु-व (कुरआन ३७:५) वह जो ज़मीन और आसमानों का और तमाम उन चीज़ों का मालिक है जो ज़मीन और आसमान में हैं, और सारा पूर्वदिशाओं का मालिक।
• एकं सद्विप्रा बहुधा वदन्त्यग्नि यमं मातरिश्वानमाहुः। (ऋग्वेद ०१:१६४:४६) वही अग्नि, यम और मातरिश्वा है, उस एक ब्रम्ह को विव्दान अनेक नामों से पुकारते हैं।	• कुलिद्अुल्ला-ह अविद्अुर् रह्मा-न अय्यम्-मा तद्अू फ़-लहुलु अस्मा-उल्-हुस्ना (कुरआन १७:११०) ऐ नबी, इनसे कहो, अल्लाह कहकर पुकारो या रहमान कहकर, जिस नाम से भी पुकारो उसके लिए सब अच्छे ही नाम हैं।
• यदंग दाशुशेत्वमग्ने भद्रं करिष्यसि त्वेत तत सत्यमंगिरः(ऋग्वेद०१:०१:०६) हे परमेश्वर आप सदाचारी को अच्छा फल देते हैं यह आपकी सद्प्रवृत्ति है।	• निअ्-म-तम्-मिन् अिन्दिना कजालि-क नन्ज़ी मन् श-कर । (कुरआन १६:६७) जो व्यक्ति भी अच्छा कर्म करेगा, चाहे वह मर्द हो या औरत, शर्त यह है कि वह मोमिन (ईमानवाला) हो उसे हम दुनिया में पवित्र जीवनयापन कराएँगे और परलोक में ऐसे लोगों को उनके बदले उनके उत्तम कर्मों के अनुसार प्रदान करेंगे।
• त्वंनो अन्तम उत त्राता (ऋग्वेद०५:२४:०१) तू हमसे अत्यन्त समीप और रक्षक है।	• व नह्यु अक्-रबु इलयहि मिन् हबलिलू -वरीद (कुरआन ५०:१६) हमने इन्सान को पैदा किया है और उसके दिल में उभरनेवाले वसवसों तक को हम जानते हैं। हम उसकी गरदन की रग से भी ज़्यादा उससे क़रीब हैं।
• यो मारयति प्राणयति यस्मान प्राणन्ति भुवानानि विश्वा। (अथर्ववेद१३:०३:०३) जो परमेश्वर मारता है और प्राण प्रदान करता है और जिस की कृपा से सभी जीव जीवित रहते हैं।	• अल्लाहुल्लजीख़-ल-क़कुम् सुम्-म युमीतुकुम् सुम्-म युह्यीकुम् (कुरआन ३०:४०) अल्लाह ही है जिसने तुमको पैदा किया, फिर तुम्हें आजीविका (रोजी/भोजन) दी, फिर वह तुम्हें मौत देता है, फिर वह तुम्हें ज़िन्दा करेगा।

पवित्र वेदों के श्लोक	पवित्र कुरआन के श्लोक
• तमेव विव्दान् नबिभाया मृत्योः (अथर्ववेद.१०:८:४४) उस आत्मा ही को जान लेने पर मनुष्य मृत्यु से नहीं डरता।	• अला इन्ना औलिया अल्लाहि, ला खौफुन अलैहिम वला हुम यहूजनून (कुरआन १०.६२) सुनो! जो अल्लाह के दोस्त हैं, जो ईमान लाए और जिन्होंने खुदा से डरने की नीति अपनाई, उनके लिए किसी डर और रंज का अवसर नहीं है।
• अदब्धानि वरूणस्य व्रतानि (ऋग्वेद०१:२४:१०) ईश्वर के विधान नहीं बदलते। • न किरस्य प्रभिनन्ति व्रतानी (अथर्ववेद१८:०१:०५) ईश्वर के नियम कोई नहीं बदल सकता।	• ला तब्दी-ल लिकलिमातिल्लाहि (कुरआन १०:६४) अल्लाह की बातें बदल नहीं सकतीं। • व लन् तजि-द लिसुन्नतिल्लाहि तब्दीला (कुरआन ४८:२३) यह अल्लाह की रीति (सुन्नत) है जो पहले से चली आ रही है और तुम अल्लाह की रीति में कोई परिवर्तन न पाओगे।
• इसे चित् तव मन्यवे वे पेते भियसा मही यदिन्द्र वज्रिन्नोजसा वृत्रं मरूत्वां अवधोरर्चन्ननु स्वराज्यम।। (अथर्ववेद०१:८०:११) हे परमेश्वर ये लोक तेरे प्रताप से कांपते है। तू अपनी प्रताड़ना से दुष्कर्मी को मारता है और सत्कर्मी के लिए अपने राज्य में सत्कार करता हुआ सुख प्रदान करता हैं।	• व लिल्लाहि माफ़िस्समावाती व माफ़िलअर्जिलि-यज्ि-यल्लजी-न असाउ बिमा अमिलू व यज्ज़ि-यल्लजी-न अह-सनू बिल्हुस्ना (कुरआन ५३:३१) और ज़मीन और आसमानों की हर चीज़ का मालिक अल्लाह ही है ताकि अल्लाह बुराई करनेवालों को उनके कर्म का बदला दे और उन लोगों को अच्छा प्रतिदान प्रदान करे जिन्होंने अच्छी नीति अपनाई है।
• यो देवष्वधि देव एक आसीत्। (ऋग्वेद१०:१२१:०८) जो समस्त देवों का एक देव है।	• उल्लाईकल्लजी-न यद्अु-न यब्तगून इला रब्बिहिमुल-वसी-ल त। (कुरआन १७:५७) जिन देवी-देवताओं को ये लोग पुकारते हैं वे तो खुद अपने रब के पास पहुँच प्राप्त करने का वसीला ढूँढ रहे हैं कि कौन उससे अधिक निकट हो जाए और वे उसकी दयालुता के उम्मीदवार और उसके अज़ाब से डरे हुए हैं। वास्तविकता यह है कि तेरे रब का अज़ाब है ही डरने के योग्य।

पवित्र वेदों के श्लोक	पवित्र कुरआन के श्लोक
• नाब्रह्मा यज्ञ ऋधग्जोषति त्वे। (ऋग्वेद१०:१०५:०८) ब्रम्ह तत्व से हीन यज्ञ तुझे (हे परमेश्वर) तनिक भी नहीं भाता है।	• फवयलुलू-लिल्मुसल्लीन अललज़ीना-हुम् अन् सलातिहिम् साहून अल्लजी-न हुम् युराऊ-न । (कुरआन १०७:४,५,६) फिर तबाही है उन नमाज़ पढ़नेवालों के लिए जो अपनी नमाज़ से ग़फलत बरतते हैं, जो दिखावे का काम करते हैं, और साधारण ज़रूरत की चीज़े (लोगों को) देने से कतराते हैं।
• न यस्य द्यावापृथिवी अनु व्यचो न सिन्धवो रजसो अन्तमानशुः। नोत स्ववृष्टि अस्य युध्यत एको अन्यचू चकृषे विश्वमानुषक।। (ऋग्वेद०१:५२:१४) न पृथ्वी और आकाश उस परमेश्वर की व्यापकता की सीमा को न पा सकते हैं और न अन्य ग्रह, और न आकाश से बरसने वाली वर्षा। उस एक के सिवाय कोई दूसरा इस जगत पर सामर्थ्य नहीं रखता।	• वलायुहीतू-नबिशैइम्मिन् अ़िल्मिही इल्ला बिमा शा-अ वसि-अ़ कुर्सिय्युहुस्समावाति वल्अर्ज । (कुरआन २:२५५) उसका प्रभुत्व कुर्सी और ज़मीन पर छाया हुआ है और उनकी देखरेख उसके लिए कोई थका देनेवाला काम नहीं है। बस वही एक महान और सर्वोपरि सत्ता है।
• स एक एक एकवृदेक एव। (अथर्ववेद०१:५२:१४) वह आप एक अकेला वर्तमान, एक ही है।	• कुल हुवल्लाहु अ-हद अल्लाहुस्समद (कुरआन ११२:१) कहो, वह अल्लाह एक है।
• यस्यैमाः प्रदिशः (ऋग्वेद१०:१२१:०४) यह सब दिशाएं उसकी हैं।	• व लिल्लाहिलू-मशरिकु वलमगरिबु। (कुरआन २:११५) पूरब और पश्चिम सब अल्लाह के हैं। जिस ओर भी तुम रूख करोगे, उसी ओर अल्लाह का रूख है। अल्लाह सर्वव्यापी और सब कुछ जाननेवाला है।
• तस्याम् सर्वा वक्षत्रा वशे चन्द्रमसा सह (ऋग्वेद१०:१२१:०४) चंद्रमा सहित यह सब नक्षत्र उसी के वश में हैं।	• व श्ष्मूस वल क-म-र वन्नुजू-म मुसख़्खरातिम् -बिअम्रिही (कुरआन ७:५४) जिसने सूरज और चाँद और तारे पैदा किए, सब उसके आदेश के अधीन हैं। सावधान रहो! उसी की सृष्टि है और उसी का आदेश है।

ईश्वर को हर चीज़ का ज्ञान है।

पवित्र वेदों के श्लोक	पवित्र कुरआन के श्लोक
• यो नः पिता जनिता यो विधाता धामानि वेद भुवनानि विश्वा। (ऋग्वेद१०:८२:०३) जो हमारा पालक एवं उत्पन्न करने वाला है जो विधाता है वही जगत के सब स्थानों और लोगों को जानता है।	• अम्मय्यब्दउल्-खलक-सुम-म युईदुहू व मुय्यर्ज़ुकुम् मिनस्समाइ वल्अर्ज़ि। (कुरआन २७:६४) और वह कौन है जो प्रथम बार पैदा करता और फिर उसकी पुनरावृत्ति करता है? और कौन तुमको आसमान और ज़मीन से रोज़ी देता है? क्या अल्लाह के साथ कोई और खुदा भी (इन कामों में हिस्सेदार) है? कहो कि लाओ अपना प्रमाण अगर तुम सच्चे हो। जो कुछ बन्दों के सामने है उसे भी वह जानता है और जो कुछ उनसे ओझल है, उसे भी वह जानता है। (कुरआन २:२५५) • कुल ला यअ-लमु मन् फिस्समावाति वल्गअर्जिल्गयब इल्लल्लाहु। (कुरआन २७:६५) इनसे कहो, अल्लाह के सिवा आसमानों और ज़मीन में कोई ग़ैब (परीक्षा) का ज्ञान नहीं रखता।
• र्व तद् राजा वरूणो किचष्टे यदन्तरा रोदसी यत् परस्तात (अथर्ववेद०४:१६:०५) जो आकाश और पृथ्वी के बीच है या जो कुछ उससे परे है उसे ईश्वर देखता है।	• यअ्-लमु मा यलिजु फ़िलअर्जि व मा यख़रूजु मिन्हा व मा यन्जिलु मिनस्समाइ व मा यअ-रूजु फ़ीहा। (कुरआन ५७:४) वही है जिसने आसमानों और ज़मीन को छह दिनों में पैदा किया और फिर सिंहासन पर विराजमान हुआ। उसके ज्ञान में है जो कुछ ज़मीन में आता है और जो कुछ उससे निकलता है, और जो कुछ आसमान से उतरता है, और जो कुछ उसमें चढ़ता है। वह तुम्हारे साथ जहाँ भी तुम हो। जो काम भी तुम करते हो उसे वह देख रहा है।

पवित्र वेदों के श्लोक	पवित्र कुरआन के श्लोक
• सविता पश्चातात् सविता पुरस्तात् सवितोत्तरात्ताते सविता धरात्तात (ऋग्वेद१०:३४:१४) संसार का सृष्टा, आगे, पीछे, ऊपर, नीचे सब जगह है। विश्वतश्चक्षुरूत विश्वतोमुखो (ऋग्वेद१०:८१:०३) परमेश्वर के नेत्र हर ओर हैं, उसका मुख हर तरफ है।	• फ अयनमा तुवल्लू फ़-सम्-म वज्हुल्लाहि इन्नला-ह वासिअुन अलीम। (कुरआन २:११५) पूरब और पश्चिम सब अल्लाह के हैं। जिस ओर भी रूख़ करोगे, उसी ओर अल्लाह का रूख़ है। अल्लाह सर्वव्यापी और सब कुछ जाननेवाला है।
• वेद वातस्य वर्त्तनिमुरोर्ऋष्वस्य बृहतः। वेक्ष ये अध्यासते।।(ऋग्वेद०१:२५:०६) यह सब ओर फैले हुए वायु के गुणवान रास्तों को जानता है और उन सब चीजों को जानता है जो उस वायु पर आश्रित हैं।	• व हुवल्लजी अर्स-लरीया-ह बुश्रम्-बय-न यदय रह्मतिही। (कुरआन २५:४८) और वही है जो अपनी दयालुता से आगे-आगे हवाओं को ख़ुशख़बरी बनाकर भेजता है।
• यो विश्वामि वि पश्यति भवना संच पश्चति। (ऋग्वेद१०:१८७:०४) वह ईश्वर सारे जगत को भली प्रकार जानता है।	• वल्लाहु यअ्-लमु मा फिस्समावाति व मा फिल्अर्जि वल्लाहु बिकुल्लि शयइम्न् अलीम। (कुरआन ४६:१६) अल्लाह ज़मीन और आसमानों की प्रत्येक चीज़ को जानता है और हर चीज़ का ज्ञान रखता है।
• यस्तिष्ठति वरति यश्च वञ्चति यो निलायं चरति यः प्रतंकम। व्दौ संनिष यन्मन्त्रयेते राजातद् वेद वरूणस्तृतीयः।। (अथर्ववेद ४:१६: २) जो खड़ा होता है, चलता है, जो धोखा देता है, जो छिपता फिरता है, जो दुसरे को कष्ट पहुंचाता है, जो दो मनुष्य खुफिया बात करते है, तीसरा ईश्वर इन सबको जानता है।	• यअ-लमु सिर्रकुम् व जह-रकुम् व यअ--लमु मा तक्सिबून। (कुरआन ६:३) वही एक अल्लाह आसमानों में भी है और ज़मीन में भी, तुम्हारे खुले और छिपे सब हाल वह जानता है और जो बुराई या भलाई तुम कमाते हो उससे ख़ूब परिचित है।
• वेद नाव समुद्रियः (अथर्ववेद १:२५:७) वह समुद्र की नौकाओं को जानता है।	• अ-लम् त-र अन्नल्फुल-क तज्री फ़िल्बहरि बिनिअ-मतिल्लाहि। (कुरआन ३१:३१) क्या तुम देखते नहीं हो कि नौका समुद्र में अल्लाह के अनुग्रह से चलती है।

सृष्टि के निर्माण से सम्बन्धित श्लोक

पवित्र वेदों के श्लोक	पवित्र कुरआन के श्लोक
• जनं मनुजातं। (ऋग्वेद १:४५:१) सब मनु की संतान हैं। • प्रजा पतिर्जनयति प्रजा इमाः (अथर्ववेद ७:१९:१) परमेश्वर इन सब सृष्टियों को उत्पन्न करता है।	• या अय्युहन्नासु इन्ना ख़-लक़नाकुम् मिन् ज-करिंव-व उन्सा (कुरआन ४९:१३) लोगों, हमने तुमको एक मर्द और एक औरत से पैदा किया। • व ख़-ल-क़ कुल्-ल शयइन (कुरआन २५:२)जिसने (ईश्वर) हर चीज़ को पैदा किया।
• सविता यन्त्रैः पृथिवीमरम्णा दस्कम्भने सविता द्यामदृहत्। (ऋग्वेद १०:१४४:१) परमेश्वर ने अपने यंत्रो से पृथ्वी को नियन्त्रित किया और सहारे के बिना आकाश को स्थापित किया। (बिना आधार के आकाश स्थापित किया।)	• ख-ल-कस्समावाति बिगयरि अ-मदिन् तरौनहा व अल्का फिल् अर्ज़िरवासि-य अन् तमी-द बिकुम (कुरआन ३१:१०) उसने आसमानों को पैदा किया बिना स्तंभों के जो तुम्हें नज़र आएँ। उसने ज़मीन में पहाड़ जमा दिए ताकि वह तुम्हें लेकर ढुलक न जाए।
• व्दिता विव्रे सनजा सनीडे अयास्यः स्तवमानेभिरर्कैः। भगो न मेने परमे व्योमन्नधारयद रोदसी सुदंसाः ।। (ऋग्वेद १:१६२:७) ऋषियों के द्वारा परमेश्वर ने परस्पर जुड़े हुए प्राचीन आकाश और पृथ्वी को पृथक-पृथक किया। फिर उत्तम कर्म वाले ने सुर्य के समान उन दोनों को स्थित किया।	• अ-व लम य-रल्लजी-न क-फ़रू अन्नस्-समावाति वलअर्-ज कानता रत्-कन् फ़-फ़तक्नाहुमा (कुरआन २१:३०) क्या वे लोग जिन्होंने (नबी की बात मानने से) इन्कार कर दिया है विचार नहीं करते कि ये सब आसमान और ज़मीन परस्पर मिले हुए थे, फिर हमने इन्हें अलग किया, और पानी से हर ज़िन्दा चीज़ पैदा की? क्या वे (हमारे इस रचनाकार्य की कुशलता को) नहीं मानते?
• ब्रम्हा भूमिर्विहिता ब्रम्ह द्यौरूत्तरा हिता। ब्रम्हे दमृर्ध्व तिर्यक् चान्तरिक्ष व्यचो हितम।। (ऋग्वेद १०:२:२५) ब्रम्ह व्दारा ही इस पृथ्वी की रचना की गई और ब्रम्ह द्वारा ही लोक (आकाश) ऊंचा धरा गया और ब्रम्ह ही ने ऊपर सब ओर विस्तृत अंतरिक्ष की रचना की है।	• वल-इन्-स-अल्तहुम् मन् ख-ल-कस्समावाति वल -अर्-ज व सख्स-रश्शम्-स वलक-म-र ल-यकूलुन्नल्लाहु फ-अन्ना युअ-फकून (कुरआन २९:६१) अगर तुम इन लोगों से पूछो कि ज़मीन और आसमानों को किसने पैदा किया है और चाँद और सूरज को किसने वशीभूत कर रखा है तो ज़रूर कहेंगे कि अल्लाह ने, फिर ये किधर से धोखा खा रहे हैं? (एक अल्लाह पर विश्वास क्यों नहीं रखते?)

पवित्र वेदों के श्लोक	पवित्र क़ुरआन के श्लोक
• अहोरात्राणि विदधद् विश्वस्य मिषतो वशी। (ऋग्वेद १०:१९०:२) समस्त सृष्टी पर सामर्थ्य रखने वाले स्वामी ने दिन और रात का भेद स्थापित किया।	• अ-लमृत-र अन्नल्ला-ह यूलिज्रुल्लय-लफ़िन्नहारी व यूलिजुन्नहा-रफ़िल्लयलि व सखूखरश्शमू-स वल्क़-म-र कुल्लंय्यजरी इला अ-जलिमू-मुसम्मंव् (कुरआन ३१:२९) क्या तुम देखते नहीं हो कि अल्लाह रात को दिन में पिरोता हुआ ले आता है और दिन को रात में? उसने सूरज और चाँद को वशीभूत कर रखा है, सब एक नियत समय तक चले जा रहे हैं, और (क्या तुम नहीं जानते कि) जो कुछ भी तुम करते हो अल्लाह उसकी ख़बर रखता है?

मानवजाति को ईश्वर का आदेश

• ऋतस्य पथा नमसा विवासेत (ऋग्वेद१०:३१:०२) मनुष्य सत्य के मार्ग पर विनम्रता पूर्वक चले।	• इन्नल्ला-ह ला युहिब्बु मन् का न- मुख़्तालन फ़ख़ूरा (कुरआन ४:३६) यक़ीन जानो, अल्लाह किसी ऐसे व्यक्ति को पसन्द नहीं करता जो डींगें मारनेवाला हो और अपनी बड़ाई पर गर्व करे।
• सुगा ऋतस्य पन्थाः (ऋग्वेद०८:३१:१३) सत्य का मार्ग आसान है।	• मा अन्ज़ल्ला अलैकल-कुर्आ-न लितश्का (कुरआन २०:२) हमने यह क़ुरआन तुमपर इसलिए अवतरित नहीं किया कि तुम मुसीबत में पड़ जाओ।
• दृष्ट्वा रूपे व्याकरोत्सत्या नृते प्रजापतिः। अश्रद्धा मनृतो अदधाच्छ्रद्धाँ सत्ये प्रतापतिः। (यजुर्वेद१९:७७) परमेश्वर ने सत्य और मिथ्या के रूप को अपनी ज्ञान दृष्टि से अलग अलग कर दिया और आदेश दिया कि सत्य में आस्था लाओं और मिथ्या को ठुकरा दो।	• कत्तबय्यनर्रुश्दु मिनल्गय्यि-फ-मंय्यकफ़ुर बित्तागूति व युअ्मिम-बिल्लाहि फ़-कदिस्तम्-स-क बिल्-अुर्वतिल्-वुस्का (कुरआन २:२५६) दीन के मामले में कोई ज़ोर-जबरदस्ती नहीं। सही बात ग़लत विचारों से अलग छाँट कर रख दी गई है। और जो मूर्तियों में विश्वास ना रखें और एक अल्लाह को माना, उसने एक ऐसा मज़बूत सहारा थाम लिया जो कभी टूटनेवाला नहीं और अल्लाह (जिसका सहारा उसने लिया है) सब कुछ सुननेवाला और जाननेवाला है।

पवित्र वेदों के श्लोक	पवित्र क़ुरआन के श्लोक
• नू नव्यसे नीवयसे सूक्ताय साधया पथः। प्रत्नवद रोचया रूचः।। (ऋग्वेद६:६:८) तू दिन-प्रतिदिन नए और उससे भी नूतनंतर सुभाषित के लिए रास्ता बना और उस रास्ते को ऐसा प्रकाश का बना जैसे तुझसे पहले ऋषि बनाते आए हैं।	• वल़ तकुम मिन्कुम उम्मतुन् यदऊना इलल् खैरि। वयअमुरूना बिल मअरूफि व यन हवूना अनिल मुन्करी व ऊलाइका हुमुल मुफ्लिहून(कुरआन ३:१०४) तुम में कुछ लोग ऐसे अवश्य ही रहने चाहिएँ जो नेकी की ओर बुलाएँ, भलाई का आदेश दें, और बुराइयों से रोकते रहें। जो लोग ये काम करेंगे वही सफल होंगे।

सामाजिक नियम से सम्बन्धित श्लोक

• मा भ्रातरं व्दिक्षन्मा स्वसारमृत स्वसा। सम्यग्चः सव्रता भूत्वा वाचं वदत भद्रया। (अथर्ववेद३:३०:३) भाई, भाई से और बहन, बहन से व्देष न करें। एक मन और गति वाले होकर मंगलमयी बात करें।	• या आय्युहल्लजिना आमनू ला यस्खर् कवमुम्-मिन्-कवमिन् असा अंय्यकून् खयरूकुम मिन्हूम् व ला निसाउम्-मिन् निसाइन् असा अंय्यकून् खयरूकुम मिन्हून-न व ला तल्मिजू अन्फुस कुम व ला न तनाबजू बिल्-अल्काबि बिअ-स-लिस्मुल-फुसूक बअ-दल-ईमानि व मल्लन् यतुब फ-उलाइ-क हुमुज्जालिमून (कुरआन ४६:११) ऐ लोगो जो ईमान लाए हो, न मर्द दूसरे मर्दों की हँसी उड़ाएँ, हो सकता है कि वे उनसे अच्छे हों, और न औरतें दूसरी औरतों की हँसी उड़ाएँ, हो सकता है कि वे उनसे अच्छी हों। आपस में एक दूसरे पर व्यंग्य न करो और न एक दूसरे को बुरी उपाधि से याद करो। ईमन लाने के बाद दूराचार में नाम पैदा करना बहुत बुरी बात है। जो लोग इस नीति से बाज़ न आएँ वे ज़ालिम हैं।

पवित्र वेदों के श्लोक	पवित्र कुरआन के श्लोक
• अन्वार भेथामनुसरं भथामेतं लोकं श्रद्दधानाः सचन्ते। (अथर्ववेद६:१२२:३) श्रद्धा वाले लोग परलोक का ध्यान रखते हुए सत्कर्मों को निरन्तर मिलकर करते रहें।	• अ-रज़ीतुम् बिल्-हयातिद्दुन्या मिनल् आख़िारति फ़-मा मताअुल् हयातिद् दुन्या फ़िल् आख़िरति इल्ला क़लील (कुरआन ६:३८) क्या तुमने आख़िरत के मुक़ाबले में दुनिया की ज़िन्दगी को पसन्द कर लिया? ऐसा है तो तुम्हें मालूम हो कि दुनिया के ज़िन्दगी की यह सामग्री परलोक (आख़िरत) में बहुत थोड़ी निकलेगी। (परलोक का सुख दुनिया के सुख के मुकाबले में बहुत अधिक है।)
• सहृदय सांमनस्यनविव्देषं कृणोमि वः। अन्यो अन्यमभि हर्यत वत्सं जातमिवाघ्न्या।। (अथर्ववेद३:३०:१) मैं तुम्हारे लिए हार्दिक एकता, एकमनता और व्देष रहित भाव निर्धारित करता हूँ, परस्पर प्रेम रखो जैसे; गौ अपने बछड़े से प्रेम करती है।	• व-ला तस्तविल्-ह-स-नतु व लस्सय्यिअतु इद्फ़अ-बिल्लती हि-य अहसनु फ-इजल्लजी बय-न-क व बयनहू अदावतून क-अन्नहु वलिय्युन हमीम (कुरआन ४१:३४) और ऐ नबी! भलाई और बुराई समान नहीं हैं। तुम बुराई को उस नेकी से दूर करो जो बेहतरीन हो। (ऐसा करोगे तो) तुम देखोगे कि तुम्हारे साथ जिसकी दुश्मनी थी वह तुम्हारा जिगरी दोस्त बन गया है।
• ज्यायस्वन्तश्चित्तिनो मा वि यौष्ट संराधयन्तः सधुराश्चरन्तः। अन्यौ अन्यस्मै वल्गु वदन्त एत सध्रीचीनान् वः संमनस्कृणोमि।।। (अथर्ववेद३:३०:१) तुम बड़ो का मान रखने वाले, उत्तम चित्त वाले, मित्रता पूर्वक एक जुट होकर चलते हुए छिन्न भिन्न न हो, परस्पर सुन्दर वचन कहते हुए आओ। मैं तुम्हें एक व गति वाले करता हुँ।	• व बिल वालिदैनि एह्सानन् व जिल् कुर्बा वल यतामा वल् मसाकीनि। व कूलु लिन्नासि हुस्ना (कुरआन २:८३) माँ-बाप के साथ, नातेदारों के साथ, अनाथों और दीन-दुखियों के साथ अच्छा व्यवहार करना, लोगों से भली बात कहना।

पवित्र वेदों के श्लोक	पवित्र क़ुरआन के श्लोक
• समानं मन्त्रमभि मन्त्रेये वः (अथर्ववेद-१०:१९१:३) मैं तुम सबको समान मन्त्र से अभिमन्त्रित करता हूँ।	• ष-र-आ लकुम मिनद्दीन मा वस्सा बिहि नुहंव वल्लजी औहैना इलैका वमा वस्सैना बिहि इब्राहीमा व मूसा व ईसा। अन अकीमुद्दीना वला त-त-फर्रकू फीहि। (क़ुरआन ४२:१३) उसने तुम्हारे लिए धर्म की वही पद्धति नियत की है जिसका आदेश उसने नूह मनु को दिया था और जिसे ऐ मुहम्मद अब तुम्हारी ओर हमने प्रकाशना (वही) के द्वारा भेजी है और जिसका आदेश हम इब्राहीम और मूसा और ईसा को दे चुके हैं, इस ताकीद के साथ कि क़ायम करो इस दीन (धर्म) को और इसमें अलग-अलग न हो जाओ।

नारीजाति को ईश्वर का आदेश

• अनुब्रतः पितुः पुत्रो माता भवतु संमनाः। (अथर्ववेद-३:३०:२) पुत्र पिता का अनुगत हो और माता के साथ एक मन वाला हो।	• बिल्-वालिदयनि इहसानन् इम्मा यब्लुगन्-न अिन्दकल्-कि-ब-रअ-हदुहुमा अव किलाहुमा फला तकुल्लहुमा उफ़्फिंव-व ला तन्हरहुमा व कुल्लहुमा कवलन् करीमा। (क़ुरआन १७:२३) माँ-बाप के साथ अच्छा व्यवहार करो, अगर तुम्हारे पास उनमें से कोई एक या दोनों बूढ़े होकर रहें तो उन्हें उफ़ (धिक) तक न कहो, न उन्हें झिड़ककर जवाब दो, बल्कि उनसे आदर के साथ बात करो।
• जाया पत्ये मधुर्ती वाचं वदतु शन्तिवाम्। (अथर्ववेद-३:३०:२) पत्नि पती से मीठी मधुर वाणी बोलने वाली हो।	• व मिन् आयतिहि अन् ख-लू-लकुम मिन् अन्फुसिकुम अज्-वाजला-लतस्कुन् इलयहा व ज-अ-ल बयनकुम म-वद्-द-तंव व रह-म-तन् (क़ुरआन ३०:२१) और उसकी निशानियों में से यह है कि उसने तुम्हारे लिए तुम्हारी ही सहजाति से बीवियाँ बनाई ताकि तुम उनके पास शान्ति प्राप्त करो और तुम्हारे बीच प्रेम और दयालुता पैदा कर दी।

पवित्र वेदों के श्लोक	पवित्र कुरआन के श्लोक
• अधः पश्यस्व मोपरि सन्तरां पादकौ हर। मा ते काशप्लकौ दृशन स्त्री हि ब्रम्हा बभूविथ।। (ऋग्वेद-८:३३:१६) जब स्त्री ही पुरूष बन गई हो (अर्थात जब पुरूश के समान घर से निकले) तो नीचे देख उपर नहीं। दोनों पावों को समेट कर चल कि तेरा शरीर नजर न आएं।	• वकुल्लिलू-मुअमिनाति यग्-जुजु-न मिन् अब्सारिहीन-न व यह-फझन फुरूजहुन-न वला युब्दी-न ज़ी-न-तहुन (कुरआन २४:३१) और ऐ नबी! ईमानवाली औरतों से कह दो कि अपनी निगाहें बचाकर रखें, और अपने गुप्तांगों की रक्षा करें और अपना बनाव-श्रृंगार न दिखाएँ सिवाय उसके जो खुद ही ज़ाहिर हो जाए और अपने सीनों (वक्षस्थलों) पर अपनी ओढ़नियों के आँचल डाले रहें।
• उदीर्ष्व नायैभि जीवलोक गतासुमेतमुप शेष एहि। हस्त ग्रास्भस्य दिधिषोस्तवेदं पत्युर्जनित्वमभि सं बभूय। (अथर्ववेद-१८:३:२) हे विधवा नारी! जीवित समाज की ओर उठकर चल। इस मृतक के सहारे तू पड़ी है। आ अब अपना हाथ वीर्यदाता नए पति की संतान को यथावत प्राप्त हो।	• फ इजा ब-लग्-न अ-ज-लहुन-न फ-ला जुना-ह अलयकुम् फीमा फ-अल-न फी अन्फुसिहिन्-न बिल्मअरूफि (कुरआन २:२३४) तुममें से लोग मर जाएँ, उनके पीछे अगर उनकी पत्नियाँ जिन्दा हों, तो वे अपने आपको चार महीने, दस दिन रोके रखें। फिर जब उनकी अवधि (इद्दत) पूरी हो जाए, तो इन्हें अधिकार है अपने विषय में सामान्य रीति से चाहें, करें। (चाहे तो विवाह कर लें।)

पापियों को चेतावनी से सम्बन्धित श्लोक

• यस्तन्न वेद किमृचा करिष्यति (ऋग्वेद १:१६४:३६) जो उस ब्रहम को नहीं जानता वह वेद से क्या करेगा।	• युज़िल्लु बिही कसीरंव-व यह्दी बीही कसीरन् - वमा युज़िल्लु बिही इल्लल्-फ़ासिक़िन इस प्रकार अल्लाह एक ही बात से बहुतों को गुमराही में डाल देता है और बहुतों को सीधा मार्ग दिखा देता है। और उससे गुमराही में वह उन्हीं को डालता है जो फासिक (अवज्ञाकारी) हैं। (कुरआन २:२६)

● उत त्व पश्यन्त ददर्श वाचमुत त्वः श्रृण्वन्न श्रुणोत्ये नाम। (ऋग्वेद १०:७१:४)

बुद्धि हीन लोग ग्रंथ देखते हुए नहीं देखते और सुनते हुए नहीं सुनते।

● वलहुम् अअ्-युनुल-ला-युब्सिरू-न बिहा व लहुम्आजानुल्-ला-यस्मअू-नबिहा-उलाइ-क-कॅल् अन्आमि बल हुम अजल्लु (कुरआन ७:१७६)

उनके पास दिल है मगर वे उनसे सोचते नहीं। उनके पास आँखे हैं मगर वे उनसे देखते नहीं। उनके पास कान हैं मगर वे उनसे सुनते नहीं। वे जानवरों के समान हैं बल्कि उनसे भी ज़्यादा गएगुज़रे। ये वे लोग हैं जो ग़फ़लत में खोए गए हैं।

● मा चिदन्यव्दि शसंत सखायो मा रिषण्य। (ऋग्वेद ०८:०१:०१)

हे मित्रों परमेश्वर के अतिरिक्त किसी अन्य की उपासना न करो तो तुम्हारी हिंसा न होगी।

● अल्ला तअ-बुद् इल्लल्ला-ह इन्नी अखाफु अलयकुम्-ब- यवमिन् अलीम (कुरआन ११:२६)

कि अल्लाह के सिवा किसी की बन्दगी न करो नही तो मुझे आशंका है कि तुमपर एक दिन दर्दनाक अज़ाब आएगा।

● अन्धंतमः प्र विशन्ति येअसंभूतिमुपासते।
ततो भुय अइव ते तमो य अ उ अम्भूत्यां रताः।। (यर्जुरवेद ४०:०६)

जो असंभूति(अर्थात प्रकृति रूप जड पदार्थ) की उपासना करते हैं वे घोर अंधकार (अन्धन्तम नामक नरक) में प्रविष्ट होते हैं। और जो सम्भूति (जड पदार्थ व प्रकृति से भिन्न सृष्टि) में स्मरण करते हैं वे उससे भी अधिक अन्धकारमें पड़ते हैं।

● कुलू अ-तअ-बुदू-न मिन् दुनिल्लाहि मा ला यम्लिकु लकुम् जर्रंव-व ला नफ़अन् वल्लाहु हुवस्समीअुल-अलीम। (कुरआन ५:७६)

इनसे कहो, क्या तुम अल्लाह को छोड़कर उसकी इबादत करते हो जो न तुम्हारे नुक़सान का अधिकार रखता है न नफ़ा का? हालाँकि सबकी सुनने और सब कुछ जाननेवाला तो अल्लाह ही है।

पापियों को किस प्रकार दंड होगा

● असुर्य्या नाम ते लोका अन्धेन तमसा वृताः
तॉस्ते प्रेत्यापि गच्छन्ति ये के चात्महनो जनाः (यर्जुरवेद ४०:३)

जो मनुष्य जीते हुए अपनी आत्मा का हनन करते हैं, वे मरने के पीछे अंधकारमय असुरों के लोक को जाते हैं।

● वल्लजीना क-फ-रू बिआयातिना हुम अस्हाबुल मश्अमा। अलैहिम नारूम मुअ् सदा (कुरआन ९०:१९-२०)

और जिन्होंने हमारी आयतों को मानने से इन्कार किया वे बाएँ बाजूवाले हैं, उनपर आग छाई हुई होगी।

● य आधाय चकमानाय पित्वो अन्नवान्त्सन् सफितायो पजरग्भुषे। स्थिरंमनः कृष्णुते सेवते पुरोतो चितूस मर्डितार न विन्दते।। (ऋग्वेद १०:११७:२) जो दुर्बल, अन्न के चाहने वाले, दरिद्रता से पीड़ित को, अन्न होते हुए भी सहायता नहीं देता उसको कष्ट आने पर कोई सुख नहीं मिलता।	● फ़-जालिकल्लजी यदुअ-अुल-यतीम व ला यहुज्जु अला तआमिल्-मिस्किन फवयलुल-लिल्मुसल्लीन (कुरआन ८६:१६:२०) और जब वह उसको आज़माइश में डालता है और रोज़ी उसपर तंग कर देता है तो वह कहता है मेरे रब ने मुझे अपमानित कर दिया। हरगिज़ नहीं, बल्कि तुम अनाथ से आदर का व्यवहार नहीं करते, और मुहताज को खाना खिलाने पर एक-दुसरे को नहीं उकसाते, और मीरास का माल समेटकर खा जाते हो, और धन के प्रेम में बुरी तरह जकड़े हुए हो।
● ऋतस्य पन्था न तरन्ति दुष्कृतः (ऋग्वेद ६:७३:६) सत्य के मार्ग को दुष्कर्मी पार नहीं कर पाते।	● व इंय्यरौ सबीलर्रुश्दि ला यत्तकखिज़ूहु सबीलन् (कुरआन ७:१४६) मैं अपनी निशानियों से उन लोगों की निगाहें फेर दूँगा जो नाहक़ ज़मीन में बड़े बनते हैं, वे चाहे कोई निशानी देख लें कभी उसपर ईमान नहीं लाएँगे, अगर सीधा मार्ग उनके सामने आए तो उसे अपनाएँगे नहीं और अगर टेढ़ा मार्ग दिखाई दे तो उसपर चल पड़ेंगे, इसलिए कि उन्होंने हमारी निशानियों को झुठलाया और उनसे बेपरवाही करते रहे।
● केवलागो भवति केवलादी (ऋग्वेद १०:११७:६) जो अपनी कमाई अकेला खाता है वह पाप खाता है।	● लन्तनालुलूबिर्र-र ह्त्ता तुन्फिकू मिम्मा तुहिब्बून (कुरआन ३:६२) तुम नेकी को पहुँच नहीं सकते जब तक कि अपनी वे चीज़ें (अल्लाह के मार्ग में) ख़र्च न करो जो तुम्हें प्रिय हैं।
● माधमन्त्रं विन्दते अप्रचेताः सत्यं ब्रवीमि वध इत्स तस्य। नार्यमणं पुष्यति नो सखायं केवलाधो भवति केवलादी। (ऋग्वेद १०:११७:६) मूर्ख बिना परिश्रम अन्न (धन आदि) कमाता है। सत्य कहता हूं कि वह उसका विनाश ही है। न तो वह सन्तों को खिलाता है और न मित्र को। अकेला खानेवाला केवल पाप का भक्षण करता है।	● फक्कुर-क-बतिन, औइतूआमुन फी यौमिन ज़ी मसग़बा, यतीमन् ज़ा म मतूरबा। सुम्मा काना मिनल् लज़ीना आ-म-नू व-त-वासौ बिस्सब्री व त-वासौ बिल मरूहमा, उलाइका अस्हाबुल मै मना (कुरआन ६०:१३-१८) किसी गरदन को ग़ुलामी से छुड़ाना, या फ़ाक़े के दिन किसी निकटवर्ती अनाथ या धूल-धूसरित मुहताज को खाना खिलाना। (यही लोग भाग्यवान है।)

आखरी बात

- इस पुस्तक को लिखने का उद्देश समाज में बढ़ते सांप्रदायिक भावना को प्रेम से बदलना है। अगर हम ईश्वर के मूल धर्म को अच्छी तरह समझे और निम्नलिखित सत्य और तथ्य को याद रखे तो हमारा देश स्वर्ग बन जाए।

- स्वायंभुव मनु या हजरत आदम इस धरती पर १२००० वर्ष पूर्व आए थे। इन्सान २५ वर्ष की आयु में बाप और ५० वर्ष की आयु में दादा बन जाता है। इस हिसाब से हम स्वायंभुव मनु या हजरत आदम की ४८० वी या ५०० वी पीढ़ी है।

अगर में और आप एक ही गाँव के हैं। और किसी विद्या या Technology से में अपने पुर्वजों को तलाश करना शुरू करू तो बहुत सम्भव है कि २५ से ५० पीढ़ी पिछे जाने के बाद मेरे पूर्वज और आप के पूर्वज एक ही व्यक्ति हों।

अगर मैं और आप एक शहर के है तो बहुत सम्भव है की १०० पीढ़ी पीछे जाने के पहले मेरे पूर्वज और आप के पूर्वज एक ही निकल आएं।

इसी तरह पीछे जाते रहे तो ४८० पीढ़ी पर हम सब के पूर्वज शत प्रतिशत एक ही थे। और वह हजरत आदम थे।

हम सब भाई-भाई है और एक परिवार से हैं। क्या इस बात पर आपने कभी ध्यान दिया है?

- ईश्वर कहता है कि,

यह विश्व मेरा परिवार है। जो मेरे परिवार की सेवा करेगा वह मेरा प्रिय है।(मिश्कात, तर्जुमाने हदीस Vol-2,239)

ईश्वर के इस परिवार में सभी जाति के लोग है।

- हजरत मुहम्मद (स.) ने कहा कि, ईश्वर जीव-जंतु की सेवा पर भी पुण्य देता है। (बुखारी जिल्द ३, किताब ६४६ नं. किताब ६४६ नं./४३)

- पवित्र कुरआन में है की तुम में कुछ ऐसे लोग होने चाहिए जो लोगों को पुण्य की तरफ बुलाए और पाप से रोके। और यही लोग सफल होंगे। (सुरह आले इम्रान, आयत ११०)

- पवित्र कुरआन में है की;

''जिसने किसी इन्सान को क़त्ल के बदले या ज़मीन में बिगाड़ फेलाने के सिवा किसी और वजह से क़त्ल कर डाला उसने मानो सारे ही इन्सानों को क़त्ल कर दिया और जिसने किसी की जान बचाई उसने मानो सारे इन्सानों को जीवन-दान दिया।''
(पवित्र कुरआन सूरह माईदा, आयत ३२)

- भगवद्‌गीता के इस पवित्र श्लोक से हमने पुस्तक का आरम्भ किया था कि 'जो ग्रन्थो के पवित्र ज्ञान को लोगों तक पहुचाता है वह मेरा (ईश्वर का) सबसे प्रिय हैं।(भगवद गीता १८:६६)

- चाहे हम किसी भी धर्म जाति और प्रांत से हो, हम एक दूसरे के भाई है, और एक दूसरे की सेवा करना ही ईश्वर को प्रसन्न करता है, और यही हमारी मुक्ति का सब से सरल उपाय है। इसलिए गम्भीरता से ऐसा हमें करते रहना चाहिए। यह पुस्तक इसी सद्‌भाव से लिखी गई है। और आप से विनती है की इस पुस्तक में से जो बात आप को अच्छी लगे वह अपने प्रियजनों को भी अवश्य बताएं।

****

लेखक क्यू.एस.खान की दो पुस्तके जिन से आप को धर्म का कुछ और ज्ञान हो सकता है उन पुस्तकों के नाम और उन पुस्तकों की अनुक्रमणिका निम्नलिखित है। अनुक्रमणिका लिखने का उददेश है की आप को पुस्तके अध्यायों और उसके ज्ञान का अनुमान हो जाए।

पुस्तक :- हजरत मुहम्मद (स.) का परिचय
लेखक :- क्यू.एस.खान

कुछ लोग हजरत मुहम्मद (स.) से दिल की गहराइयों से नफरत करते हैं।
कुछ लोग हजरत मुहम्मद (स.) पर मर मिटने के लिए हमेशा तैयार रहते हैं।
ऐसा क्यों?
जानिए कुछ सत्य और तथ्य हजरत मुहम्मद (स.) के बारे में।

अनुक्रमणिका

इस पुस्तक को www.freeeducation.co.in से मुफ्त डाउनलोड किया जा सकता है।

पुस्तक :- भगवद् गीता में ईश्वर के आदेश
लेखक :- क्यू.एस.खान

अनुक्रमणिका

इस पुस्तक को www.freeeducation.co.in से मुफ्त डाउनलोड किया जा सकता है।